कर्मभूमि

वर्ष १८ अंक २९

मई २०२५

चौबीसवें हिन्दी महोत्सव के अवसर पर

हिन्दू ग्रंथ विशेषांक

MAKE DHARMA STRONG AGAIN

Dharmansh is a global fund protecting and preserving Sanatana Dharma through strategic initiatives. In Kali Yuga, charitable giving (Daan) remains the sole pillar upholding Dharma.

Restoring Respect of Hindu Temples

Join us in the movement to restore the glory of our temples, help those doing so on the ground.

Connecting Youth with Hindu Values

We are busy bringing unique educational initiatives to connect our children with our Dharmik values.

Reviving Glory of Hindu Festivals

Let's help those who are not able to celebrate their festivals due to lack of support and resources.

DHARMANSH USA

Dharmansh USA is a not-for-profit, section 501(c)(3)

ARTHA FOR DHARMA

It is every Hindu's Dharmic Duty to protect the freedom of life and liberty for their own children and grandchildren; and to also help those in need.

Donate using Paypal or Zelle: **donate@dharmansh.org**

Recently Completed Dharmansh Projects

1. **Installed Tubewell in Sandeshkhali**
   Clean water access for vulnerable and deprived and ignored Hindus of Sandeshkhali in West Bengal.
2. **Financial Support to Gurukul in Kashi**
   Provided much needed financial support to Gurukul in Kashi where children needed basic facilities and accessories.
3. **Temple Restoration in Jharkhand**
   3000+ year old Shivalingam was left under a tree surrounded by poor Hindus. Now a beautiful temple is built with your support.

Congratulations to HindiUSA on its 24th Anniversary!

www.hindiusa.org | हिन्दी USA | 1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) – 856-625-4335
रचिता सिंह (शिक्षण/प्रशिक्षण संयोजिका) – 609-248-5966
राज मित्तल (धनराशि संयोजक) – 732-423-4619
माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) – 718-414-5429
सुशील अग्रवाल ('कर्मभूमि' संयोजक) – 908-361-0220

शिक्षण समिति

क्षमा सोनी – कनिष्ठा-१ स्तर
रंजनी रामनाथन, हेमांगी शिंदे - कनिष्ठा-२ स्तर
मोनिका गुप्ता, मीनाक्षी सिंह – प्रथमा-१ स्तर
सरिता नेमानी, सन्जोत ताटके – प्रथमा-२ स्तर
इंदु श्रीवास्तव, अदिति महेश्वरी – मध्यमा-१ स्तर
ऋचा खरे, गरिमा अग्रवाल – मध्यमा-२ स्तर
ऋतु जग्गी, राजीव महाजन – मध्यमा-३ स्तर
सुशील अग्रवाल, हंसा सिंह – उच्चस्तर-१
कविता प्रसाद – उच्चस्तर-२

अन्य समितियाँ

अमित खरे — वेब साइट, वीडियो
योगिता मोदी — बुक स्टाल प्रबंधन
वेणुगोपाल वर्मा — शिक्षण प्रबंधन और ऑनलाइन पंजीकरण

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429), सुनील दुबे (848-248-6500)
साऊथ ब्रंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733)
मॉन्टगोमरी: रीना सिंह (908-499-1555)
पिस्कैटवे: सौरभ उदेशी (848-205-1535), स्वाति सिंघानिया (609-819-3305)
ईस्ट ब्रंस्विक: स्वागता माने (646-415-4072)
वुडब्रिज: शिव आर्य (908-812-1253)
जर्सी सिटी: मनोज सिंह (201-233-5835)
प्लेंसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126)
लॉरेंसविल: संजय भयाना (732-447-3935)
चैरी हिल: जय जैन (856-236-6272), वेनू वर्मा (609-598-4038)
चैस्टरफील्ड: मधु राजपाल (732-331-5835)
होमडेल: रंजना गुप्ता (908-380-8697)
मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)
नॉर्थ ब्रंस्विक: योगिता मोदी (609-785-1604)
बस्किंग रिज: धनंजय मराठे (716-361-4681)
विल्टन: अमित अग्रवाल (630-401-0690), चेतना मल्लारपु (475-999-8705)
स्टैमफर्ड: मनीष महेश्वरी (203-522-8888)
एवॉन: बसवराज गरग (732-201-3779)
ट्रम्बुल: रुचि शर्मा (203-570-1261)
एलिकाट सिटी (MD): मुरली तुल्शियान (201-892-7898)
नीधम (MA): विक्रम कौल (203-919-1394)
अटलांटा (GA): रंजन पठानिया (203-993-9631)
शेर्लोट (NC): कीर्ति वालिआ (214-998-5760)
सैंट लुइस (MO): मयंक जैन (636-575-9348)
नॉर्थ बोरो (MA): संजीव झा (781-559-4200)
ऑनलाइन: राजीव श्रीवास्तव (732-429-8612)
सैन डिएगो (CA): मनीष पाण्डेय (760-576-6002)
एशबर्न (VA): अदिति जादौन (321-244-1445)
टेमेकुला (CA): वेद प्रकाश भार्गव (408-832-7360)

हमको सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

कर्मभूमि

०८ - हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम
१० - हिंदी यू.एस.ए. के विद्यार्थियों का बाहरी मंचों पर प्रतिभा प्रदर्शन
१६ - लघुकथा – आरक्षण शेर की सवारी
१७ - भगवान महावीर - अहिंसा और सत्य के महान प्रवर्तक
१८ - हिंदू ग्रंथों का हमारे जीवन पर प्रभाव
२० - हिंदी क्लब
२१ - संतों और ऋषियों की रचनाएँ
२२ - हिन्दू ग्रंथ: सत्य, सेवा और आत्मज्ञान का मार्ग
२३ - भगवान कृष्ण: कर्म, धर्म और जीवन का मार्गदर्शन
२४ - कृष्ण ने खाई मिट्टी
२५ - केवट की कहानी, जीवन में भागवत गीता का महत्व
२६ - लंका में हनुमानजी
२७ - रामचरितमानस २८ - सच्चा मार्ग, रामायण
२९ - केवट की कहानी, लव और कुश
३० - पुराणों की कहानियाँ
३३ - रामचरितमानस - भक्ति और कर्तव्य की प्रेरणा
३४ - भारतीय हिंदू ग्रंथों से हम ने सीखा
३९ - समुद्र मंथन और कुंभ मेले का संबंध
४० - हमारे वेद
४५ - योग और आयुर्वेद - भारतीय विरासत की अनमोल धरोहर
४८ - गीता के श्लोक और हरे कृष्ण महामंत्र का सार
४९ - दादा जी की घड़ी: मेरे जीवन का अमूल्य पाठ
५० - भारतीय धार्मिक और आध्यात्मिक कथाओं की अद्भुत झलक
६२ - नवरात्रि - देवी के नौ रूप
६६ - संत सूरदास ६७ - महाकुंभ

संरक्षक
देवेंद्र सिंह
रूपरेखा एवं रचना
सुशील अग्रवाल
सम्पादकीय मंडल
रचिता सिंह
माणक काबरा
राज मित्तल

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें
हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें
karmbhoomi@hindiusa.org
या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:
HindiUSA
70 Homestead DrIve
Pemberton, NJ 08068

मुखपृष्ठ
देवेशी टंडन,
ऑनलाइन पाठशाला , मध्यमा-१

६९ - गणेश जी और कार्तिकेय जी की दौड़
७० - योग: आत्मा, मन और शरीर का अद्भुत संतुलन
७१ - हिंदू ग्रंथों का हमारे जीवन पर प्रभाव
७२ - स्वामी विवेकानंद ७३ - शिव पुराण
७४ - भगवद् गीता
७५ - संत रामकृष्ण परमहंस
७६ - संतों और ऋषियों की रचनाएँ
७७ - शिवजी और भस्मासुर की कहानी
८० - विष्णु पुराण,
८२ - हिन्दू ग्रंथ

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक/संचालिकाएँ

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर २४ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अति सुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। हिन्दी यू.एस.ए. की २५ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। हिन्दी की कक्षाएँ ९ विभिन्न स्तरों में चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। यदि आप उत्तरी अमेरिका के किसी राज्य में हिन्दी पाठशाला खोलना चाहते हैं तो आप हमें सम्पर्क कीजिए। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

संपादकीय

वर्ष २०२५ हिंदी यू.एस.ए. की स्थापना का चौबीसवाँ वर्ष है। विगत २४ वर्षों में संस्था ने अभूतपूर्व प्रगति की है जिनके प्रमाण आपके समक्ष हैं। इस प्रगति का पूर्ण श्रेय हमारे समर्पित अध्यापकों, स्वयंसेवकों एवं अभिभावकों को ही जाता है, उनके कठोर श्रम के बिना संस्था का इस स्तर पर पहुँचना और इतनी उपलब्धियाँ प्राप्त करना कदापि संभव नहीं था। "कर्मभूमि" पत्रिका हिन्दी यू.एस.ए. का एक अभिन्न अंग है, जो हमारे युवा विद्यार्थियों की रचनात्मकता और भाषाई कौशल को प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण मंच है। यह पत्रिका न केवल छात्रों को अपनी मातृभाषा में अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करती है, बल्कि उन्हें अपनी भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को गहराई से जानने और समझने का भी अवसर प्रदान करती है। हमें यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता होती है कि हमारे युवा लेखक प्रत्येक वर्ष उत्साहपूर्वक एक विशेष विषय पर अपने लेखों के माध्यम से अपने ज्ञान और दृष्टिकोण को साझा करते हैं।

हमें यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कर्मभूमि के इस वर्ष २०२५ के अंक का मुख्य विषय **"हिन्दू ग्रंथ"** है। हमारे युवा लेखकों ने इस महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक विषय पर अपनी रचनात्मकता और समझ का अद्भुत प्रदर्शन किया है। इस विशेषांक में हमारे युवा विद्यार्थी वेदों का महत्व, उपनिषदों की बातें, पुराणों की कहानियाँ, रामायण, रामचरितमानस, भगवद् गीता, संतों और ऋषियों की रचनाएँ, और भगवान कृष्ण की अद्भुत लीलाओं पर अपने मौलिक विचार और गहरा ज्ञान प्रस्तुत करेंगे। उन्होंने इन पवित्र ग्रंथों से प्राप्त जीवन के मूल्यों और शिक्षाओं को सरल और प्रभावी भाषा में व्यक्त किया है, जो न केवल उनकी समझ को दर्शाता है बल्कि अन्य पाठकों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

आप इस अंक में हनुमानजी की लंका यात्रा और उनके द्वारा सीखे गए सच्चाई और आत्मविश्वास जैसे महत्वपूर्ण सबक के बारे में पढ़ेंगे। गणेशजी और उनके वाहन मूषक की कहानियाँ, जो हमें बाधाओं पर विजय और विनम्रता का महत्व सिखाती हैं, भी इस अंक में शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, शिव और सती के अमर प्रेम की गाथा, प्रह्लाद और हिरण्यकश्यप की भक्ति और भगवान विष्णु के नरसिंह अवतार की कथा, और लव और कुश के धर्म के प्रति अटूट विश्वास की कहानियाँ भी आपको पढ़ने को मिलेंगी।

हमारे युवा लेखकों ने सत्य, सेवा और आत्मज्ञान के मार्ग, कर्म, धर्म और जीवन का मार्गदर्शन करने वाले सिद्धांतों, और प्रेम, धर्म, मित्रता, बंधुत्व, सेवा भाव जैसे हिन्दू ग्रंथों के महत्वपूर्ण मूल्यों पर भी गहरा प्रकाश डाला है. उन्होंने राम और लक्ष्मण के भाईचारे के अटूट बंधन और त्याग की भावना को भी सुंदरता से दर्शाया है। इसके साथ ही, उन्होंने यह भी बताया है कि हिन्दू ग्रंथों का हमारे जीवन पर क्या गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ता है, किस प्रकार ये ग्रंथ हमें सही मार्गदर्शन देते हैं और नैतिकता और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। इस अंक में आपको रामचरितमानस के आध्यात्मिक महत्व और उसकी भाषा और पहुँच के बारे में भी जानने को मिलेगा, जिसने आम लोगों तक भगवान राम की कहानी को पहुँचाया। हमारे युवा लेखकों ने शौर्य और कर्तव्य की प्रेरणादायक कहानियाँ भी प्रस्तुत की हैं, जो हमें जीवन में अपने दायित्वों का निर्वहन करने के लिए प्रेरित करती हैं।

इसके अतिरिक्त, आप कुंभ मेला जैसे महत्वपूर्ण

धार्मिक आयोजनों के अमृत की प्राप्ति और देव-दानव संघर्ष की याद के महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। नवरात्रि जैसे पवित्र त्योहारों के नौ दिनों में पूजी जाने वाली माँ दुर्गा के विभिन्न रूपों और उनके महत्व के बारे में भी इस अंक में विस्तार से बताया गया है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि इस अंक के ज्ञानवर्धक लेख न केवल हमारे विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा के ज्ञान को समृद्ध करेंगे, बल्कि उन्हें अपनी समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत से और भी गहराई से जोड़ेंगे। यह अंक हमारी युवा पीढ़ी को हिन्दू ग्रंथों के अमूल्य महत्व, उनकी गहन शिक्षाओं और शाश्वत जीवन मूल्यों को सहजता से समझने में अत्यंत सहायक सिद्ध होगा।

हिन्दी यू.एस.ए. को अपने समस्त अभिभावकों, छात्रों, और समर्पित स्वयंसेवकों पर हमेशा गर्व रहा है और रहेगा। आप सभी के समर्पण से ही यह संस्था अपने चौबीस वर्ष पूर्ण कर पाई है और निरंतर प्रगति कर रही है। इसके कार्यक्रमों को सुद्रढ़ बनाने हेतु किसी प्रकार के कोई भी सुझाव हों तो हमें उनसे अवश्य ही अवगत कराएँ। जो भी अभिभावक संस्था से जुड़कर अध्यापक या स्वयंसेवक के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करने के इच्छुक हो तो कृपया अवश्य संपर्क करें। यदि पत्रिका के बारे में कोई सुझाव हो तो वे भी अवश्य भेजें।

हमें पूर्ण विश्वास है कि 'कर्मभूमि' का यह विशेष अंक आपको पसंद आएगा और आपको हिन्दू ग्रंथों के ज्ञान और प्रेरणा के अमृत से लाभान्वित करेगा।

शुभकामनाओं सहित,
संपादकीय मंडल, कर्मभूमि

हिन्दी USA ®

Learn Hindi
In-Person and Online(Virtual)

Join Hindi Classes in New Jersey and other states

- Classes taught in 9 levels by experienced teachers for children between 5 and 15 years of age
- Structured syllabus tailored for each Hindi level Books written by HindiUSA teachers to match learning goals of defined syllabus
- Reliable organization backed by 18 years of practical experience in teaching
- Adult Hindi classes are also available in certain schools
- Required books are included in registration fee.
- Hindi Poetry Competitions, annual Hindi Mahotsava and many other activities organized throughout the year for the growth of children
- Mid-term/final written and oral exams are conducted

School sessions run between September and June

Classes Held On Fridays between
7:00 PM and 8:30 PM

* A few school have different timing, please contact the respective School Coordinator for the school timing.
All in-person classes will operate in the regular school buildings. Online (virtual) school is available for the students who reside outside of the in-person school areas.
No geographical limitations for the online school. Virtual school classes will be held on Fridays between 7:30 PM and 8:30 PM: (U.S. Eastern Standard Time)

Register online at www.hindiusa.org

For more information and Registration, Contact Rachita Singh: 609-353-8411 or HINDI USA @1-877-HINDI-USA (1-877-446-3487), www.hindiusa.org

सन् २००१ से हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति की सेवा में कार्यरत एक समर्पित संस्था...
पूर्वजों की विरासत हिन्दी भाषा नयी पीढ़ी को सौंपने का एक अभियान

हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य तथा कार्यक्रम

सत्र २०२४-२५

हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो पूरे वर्ष सक्रिय रहती है। इसके हिन्दी शिक्षण का सत्र सितंबर माह से जून माह तक चलता है। इन दस महीनों में संस्था की सभी पाठशालाओं में हिन्दी कक्षाएँ तो प्रति शुक्रवार अनवरत चलती ही हैं, साथ ही नीचे दिए गए कार्य और कार्यक्रम भी वर्ष भर चलते रहते हैं। हिन्दी यू.एस.ए. जिस नियमितता तथा गंभीरता से कार्य करती है उसे देखते हुए भारत के एक उच्च पद पर आसीन हिन्दी विभाग के अधिकारी ने कहा था कि “यह संस्था नहीं संस्थान है और इस पर शोध होना चाहिए”। तो आइए जानते हैं हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य।

१. पंजीकरण – पिछले ११ वर्षों से संस्था ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन (www.hindiusa.org) कर रही है जिससे अभिभावकों और संचालकों का कार्य सुलभ हो गया है।

२. पुस्तक मुद्रण तथा वितरण – हिन्दी यू.एस.ए. ने अपनी स्वयं की पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम ९ स्तरों में तैयार किया है जो विदेशों में जन्मे तथा पले-बढ़े विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। प्रत्येक स्तर में ४-४ पुस्तकें तथा फ्लैश कार्ड्स का एक सेट सम्मिलित है। छोटे स्तरों में हिन्दी के मोबाइल ऐप का भी उपयोग किया जाता है। इन पुस्तकों के लिए ३ भंडार गृह हैं। ४००० विद्यार्थियों में इन पुस्तकों का सही वितरण पाठशाला संचालकों के लिए एक बड़ी चुनौती होता है।

३. प्रचार एवं प्रसार – ग्रीष्मकालीन अवकाश तथा पंजीकरण के समय संस्था दूरदर्शन, रेडियो तथा पुस्तक -स्टॉल के माध्यम से हिन्दी तथा हिन्दी कक्षाओं का प्रचार करती है।

४. त्योहार का परिचय – प्रवासी विद्यार्थियों को भारतीय त्योहार तथा संस्कृति का परिचय देने के लिए संस्था प्रतिवर्ष न्यू जर्सी में आयोजित दशहरे के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेती है तथा दीपावली के समय प्रत्येक पाठशाला में दीपावली उत्सव का आयोजन धूम-धाम से किया जाता है। होली, मकर संक्रांति, लोहड़ी, बैसाखी, मातृ-पितृ पूजन दिवस, गणतंत्र दिवस आदि त्योहार जो सत्र के दौरान आते हैं उन्हें कक्षाओं में मनाया जाता है।

५. अर्धवार्षिक परीक्षा – दिसंबर माह में छुट्टियों के पहले लिखित तथा मौखिक अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसके लिए प्रतिवर्ष नए परीक्षा -पत्र बनाए जाते हैं।

६. शिक्षक अभिनंदन समारोह – हिन्दी यू.एस.ए. प्रतिवर्ष दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में अपने सभी ४५० स्वयंसेवकों का अभिनंदन तथा धन्यवाद करने के लिए प्रीतिभोज तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस समारोह में सभी स्वयंसेवकों के जीवनसाथी भी आमंत्रित किए जाते हैं तथा कुछ चुने स्वयंसेवकों को प्रतिवर्ष उनकी विशेष सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया जाता है तथा बाकी सभी स्वयंसेवकों को भी हिन्दी यू.एस.ए. उपहार प्रदान करता है।

७. विद्यार्थियों की भारत यात्रा – छात्रों को प्रोत्साहित करने और उनमें देशभक्ति की भावना जागृत करने तथा भारत से सम्बंध बने रहने के लिए हिंदी यू.एस.ए. उन्हें भारत यात्रा पर भी भेजता है, जिससे वे अपने संस्कारों की जन्मभूमि से जुड़ें रहें और भाषा एवं संस्कृति की ऊर्जा की उन्हें कभी कमी महसूस न हो। यह यात्रा हर २-३ वर्ष में एक बार होती है।

८. पाठशाला स्तर पर कविता पाठ का आयोजन – प्रत्येक हिन्दी पाठशाला जनवरी माह में अपनी-अपनी पाठशाला में कविता-पाठ का आयोजन करती है जिसमें

उस पाठशाला के सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिलता है।

९. कर्मभूमि की तैयारी – जनवरी और फरवरी माह में सभी स्तरों के शिक्षक कर्मभूमि में भेजने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट विद्यार्थियों को देते हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी के साथ-साथ भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।

१०. अन्तर्शालेय कविता पाठ – इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रति वर्ष फरवरी माह के अंत में किया जाता है। इस कविता पाठ में हिन्दी यू.एस.ए. की २० पाठशालाओं के विजेता विद्यार्थी स्तरानुसार प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता २ दिन चलती है तथा इसमें लगभग ४५० विद्यार्थी ९ स्तरों में भाग लेते हैं। प्रत्येक स्तर से १० सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को चुन कर महोत्सव में होने वाले अंतिम चरण की प्रतियोगिता के लिए भेजा जाता है।

११. युवा कार्यकर्ताओं का अभिनंदन – हिंदी यू.एस.ए. प्रतिवर्ष मार्च के महीने में "युवा स्वयंसेवक अभिनन्दन समारोह" आयोजित करता है। इसका उद्देश्य युवा स्वयंसेवकों को सम्मानित करना है, जिन्होंने संस्था की हिंदी पाठशालाओं में बहुमूल्य योगदान दिया है। इन युवा स्वयंसेवकों के माध्यम से हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को अमेरिकी समाज में बढ़ावा देने का कार्य हो रहा है।

१२. महोत्सव तथा परीक्षा की तैयारी – मार्च और अप्रैल माह में सभी पाठशालाओं के विभिन्न स्तरों में महोत्सव की प्रतियोगिताओं की तैयारी तथा परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम का दोहराव प्रारम्भ हो जाता है।

१३. मौखिक परीक्षा – मार्च के अंतिम सप्ताह से लेकर अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक सभी पाठशालाओं में मौखिक परीक्षा का आयोजन होता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की हिन्दी समझने, बोलने तथा पढ़ने की क्षमता को जाना जाता है। यह व्यक्तिगत परीक्षा होती है।

१४. हिन्दी महोत्सव – यह एक ऐसा सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेला है जिसमें हिन्दी और हिंदुस्तान को प्यार करने वाले मिलते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी अपने हिन्दी ज़ान तथा अन्य कलाओं जैसे नृत्य, अभिनय, वेषभूषा, संगीत आदि का प्रदर्शन करते हुए अपने आपको भारत से जोड़ते हैं। महोत्सव में विभिन्न सामूहिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जैसे लोक नृत्य प्रतियोगिता, विभिन्न त्योहार पर नृत्य, अभिनय गीत प्रतियोगिता, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, भजन प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, हिन्दी ज़ान तथा व्याकरण प्रतियोगिता तथा फ़ाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता। इसी दिन हिन्दी यू.एस.ए. से स्नातक होने वाले विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह भी होता है। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए भारत से विशेष अतिथि भी आते रहते हैं।

१५. वार्षिक परीक्षा – जून के प्रथम सप्ताह में लिखित वार्षिक परीक्षा का आयोजन सभी पाठशालाओं में किया जाता है तथा जून के मध्य में सभी विद्यार्थियों के प्रगति -पत्र तथा प्रमाण-पत्र देकर सत्र का अंत किया जाता है।

१६. वार्षिक पिकनिक - जून के अंत में पिकनिक का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी शिक्षक शिक्षिकाएँ, पाठशाला संचालक और परिवार सम्मिलित होते हैं।

अब तो आप जान ही गए होंगे कि यदि किसी ने हिन्दी यू.एस.ए. को संस्थान कहा तो गलत नहीं कहा। हिन्दी यू.एस.ए. अपने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता है तथा उन्हें कोटिश: धन्यवाद देता है। उनके अथक प्रयास से जो हिन्दी की पवित्र धारा न्यू जर्सी और अन्य राज्यों में बह रही है वह प्रशंसनीय है।

क्या आप भी अपने बच्चों को भारतीय बनाना चाहते हैं? क्या आप भी अपने बच्चों को हिन्दी सिखाना चाहते हैं? क्या आप भी हिन्दी की सेवा कर आत्म संतोष चाहते हैं?

यदि हाँ तो हमारी वेबसाइट **www.hindiusa.org** पर जाएँ या हमें **1-877-HINDIUSA** पर फोन करें।

हिंदी यू.एस.ए. के विद्यार्थियों का बाहरी मंचों पर प्रतिभा प्रदर्शन - एक रिपोर्ट

योगिता मोदी

हिंदी यू.एस.ए. के विद्यार्थियों की हिंदी सीखने की उत्साहपूर्ण ललक और वर्ष भर होने वाली अनेक गतिविधियों में जोर शोर से सम्मिलित होने की भावना से हम सभी भली-भांति परिचित हैं। लेकिन विशेषतः इस वर्ष इन विद्यार्थियों की हिंदी यू.एस.ए. के बाहरी मंचों पर प्रतिभागिता बहुत उल्लेखनीय रही। यह रिपोर्ट उन्हीं प्रमुख अवसरों को चिन्हित करती है।

इंडिया डे परेड - IBA (इंडियन बिज़नेस एसोसिएशन) द्वारा प्रायोजित ओक ट्री रोड, एडिसन पर भारतीय स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष निकाली जाने वाली झाँकियों में हिंदी यू.एस.ए. की झाँकी को भी गत दो वर्षों से सम्मिलित किया जा रहा है। इसमें विभिन्न पाठशालाओं के बच्चे चिलचिलाती धूप और गर्मी की चिंता किए बिना अत्यंत उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। Float पर उपस्थित बच्चे, जोशीली देशभक्ति कविताओं, और सुरीले गीतों के माध्यम से इस शोभायात्रा के मार्ग में खड़े जन समूह को देशभक्ति के रंग में रंग देते हैं।

हिंदी दिवस, भारतीय कौंसलावास, न्यूयॉर्क - भारतीय कौंसलावास, न्यूयॉर्क द्वारा प्रायोजित हिंदी दिवस, १२ सितम्बर, २०२४ के अवसर पर हिंदी यू.एस.ए. के छात्र-छात्राओं ने अपनी सुन्दर प्रस्तुतियों से सभी को भाव विभोर कर दिया। सभी दर्शक इन प्रतिभागियों के हिंदी के प्रति लगाव और हिंदी यू.एस.ए. के सभी शिक्षकों, बच्चों के माता-पिता एवं स्वयंसेवकों के प्रति हिंदी के प्रति समर्पण को देखकर अभिभूत थे। प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला के छात्र-छात्राओं ने देशभक्तिपूर्ण गीत-गायन किया तथा प्रियांश पाटले (नार्थ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला) ने "रोने से कुछ होता है क्या" एवं स्वरा हितेन मकवाना (लॉरेन्सेविल हिंदी पाठशाला) ने "गीता का ज्ञान' कविता पाठ किया|

प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी से भेंट एवं चित्रकारी का प्रदर्शन -

प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी के २१ सितम्बर, २०२४ के अमेरिका आगमन के दौरान उनके स्वागत हेतु फिली एयरपोर्ट पर बच्चों द्वारा बनाई गई सुन्दर चित्रकारी जो भारत सरकार की कल्याणकारी योजनाओं एवं महत्वकांशी सफल कार्यों -चंद्रयान का प्रक्षेपण आदि पर आधारित थीं, का प्रदर्शन किया गया। योगिता मोदी जो नार्थ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला की संचालिका एवं उच्चतर-२ की शिक्षिका हैं, ने भारतीय कौंसलावास, न्यूयॉर्क की ओर से मिले निमंत्रण पर हिंदी यू.एस.ए. के कुछ प्रतिभावान बच्चों की चित्रकारी उनकी सलाहकार समिति को भेजीं और फिर प्रधानमंत्री जी से भेंट का सुअवसर मिला - आख्यान सचान को जो एडिसन हिंदी पाठशाला में युवा स्वयंसेवक हैं और जो दो बार कर्मभूमि पत्रिका के कवर पेज चित्रकारी प्रतियोगिता के विजेता रह चुके हैं उनसे प्रधानमंत्री जी ने भेंट के दौरान मुस्कराते हुए पूछा - "कितने घंटे लगे इस चित्र को बनाने में"। आख्यान ने बताया कि १२ घंटे लगे।

PMI द्वारा आयोजित निबंध एवं गायन प्रतियोगिता

Permanent Mission of India to the United Nations, New York जो भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की एक इकाई है, द्वारा नवम्बर, २०२४ में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी यू.एस ए. के छात्रों ने निबंध एवं गायन प्रतियोगिता में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। देवांश मल्होत्रा (प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला) ने निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय तथा श्रेयांश सिंह (प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला) गायन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त कर हिंदी यू.एस.ए. को गौरवान्वित किया।

दशहरा मेला, एडिसन, न्यू जर्सी

हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक उत्सव, २०२४ की नाटक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त – "अहिल्या बाई होल्कर - महान हिन्दू रानी" नाटक का दशहरे मेले में योगिता मोदी जी के नेतृत्व में सफलतापूर्वक मंचन किया गया और हिंदी यू.एस.ए. के कलाकारों ने दर्शकों को अपनी प्रतिभा का परिचय देकर खूब प्रशंसा बटोरी। पिछले कुछ वर्षों से हिंदी यू. एस. ए. के छात्र -छात्राएँ लगातार इस मंच पर अन्य नाटकों का मंचन करके हिंदी यू.एस.ए. का गौरव बढ़ाते रहे हैं।

विश्व हिंदी दिवस, भारतीय कौंसलावास, न्यूयॉर्क

भारतीय कौंसलावास, न्यूयॉर्क द्वारा प्रायोजित विश्व हिंदी दिवस, १० जनवरी, २०२५ के अवसर पर हिंदी यू.एस.ए. को कार्यक्रम को प्रमुखता से संयोजित एवं संचालित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हिंदी यू.एस.ए. की ओर से योगिता मोदी द्वारा संचालित इस कार्यक्रम में जिन छात्र-छात्राओं ने प्रस्तुतियां दीं, उनका विवरण इस प्रकार है -

"अहिल्या बाई होल्कर - महान हिन्दू रानी"- लघु नाटक एवं भाग लेने वाले कलाकार –

आयुष शर्मा, दिव्यांश शर्मा, कृपा चौंडे, अक्षिता ठाकुर, निर्वाण जैन, प्रियांश पाटले, सात्विक पर्वतीकर, तन्वी जैन, अवनीश वर्मा, आन्वी पटेल (नार्थ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला), सुहान अग्रवाल, (मोंट्गोमेरी हिंदी पाठशाला), संस्कृत जी ((प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला), अनिका दलाल (वुडब्रिज हिंदी पाठशाला), तथा विवान घिरिया (एडिसन हिंदी पाठशाला) |

"भारत विश्व गुरु की ओर" - नुक्कड़ नाटक एवं भाग लेने वाले कलाकार -

शौर्य चौधरी, आदविक गुप्ता, अमल शेखर अग्निहोत्री, अनिका दलाल, प्रिशा हितेश पंड्या, श्रेयान कुमार तथा अभियान कुमार।

कविता पाठ करने वाले बाल कवि

दिया बंसल, नीव उनडकट (पिस्काटावे हिंदी पाठशाला) जीवांश अग्रवाल (एडिसन हिंदी पाठशाला) तथा रणवीर सूरी (जर्सी सिटी हिंदी पाठशाला) |

भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं कलाकार –

अदिति शाह (नार्थ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला), ने कत्थक नृत्य प्रस्तुत किया।

हिंदी सीखने के महत्व पर वक्तव्य -

हिंदी यू.एस.ए. की अनेक पाठशालाओं में ऐसे विद्यार्थी भी हैं जो भारतीय मूल के न होकर भी हिंदी सीख रहे हैं। नार्थ ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला में ऐसी ही दो छात्राएँ - जियाना एवं ओलिविआ फैन पढ़ती हैं, जिन्होंने इस अवसर पर हिंदी में ये बताया कि वे हिंदी क्यों सीख रही हैं और उनको हिंदी सीखने में कितनी रुचि है।

हिंदी यू.एस.ए. के विद्यार्थियों की हिंदी के इंद्रधुषी रंग में रंगी प्रस्तुतियां देखकर वहां उपस्थित सभी दर्शक बहुत आनंदित हुए और बच्चों को अनेक शुभकामनाएँ भी दीं।

विश्व हिंदी दिवस

अन्तर्राष्ट्रीय बाल काव्य मंच पर काव्य पाठ

यह मंच अंतर्राष्ट्रीय महिला काव्य मंच का एक सह-मंच है जो देश-विदेश के बच्चों को ऑनलाइन कविता पाठ करने के लिए प्रोत्साहित करता है और उनकी इस प्रतिभा को उभारने का एक अवसर देता है। इस मंच द्वारा मासिक और कभी-कभी किसी विशेष अवसर पर विशेष काव्य पाठ आयोजित किए जाते हैं। इस काव्य मंच के माध्यम से बच्चे न केवल अपनी भाषाई कौशल का विकास करते हैं, बल्कि विभिन्न संस्कृतियों और साहित्यिक परंपराओं से भी परिचित होते हैं। यह मंच न केवल हिंदी भाषा के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, बल्कि नई पीढ़ी में साहित्य के प्रति रुचि जगाने का भी कार्य कर रहा है। हिंदी यू.एस.ए. की विभिन्न पाठशालाओं से बच्चों को इस मंच पर काव्य पाठ करने के लिए सम्मिलित किया जाता है। हिंदी यू.एस.ए. के विद्यार्थी अपने उच्च कोटि के कविता पाठ से सभी की बहुत प्रशंसा पाते हैं। हमें इन सभी छात्र-छात्राओं पर बहुत गर्व है।

लघुकथा – आरक्षण शेर की सवारी

महेश शर्मा

महेश शर्मा एक विज्ञान स्नातक एवं प्राकृतिक चिकित्सक हैं, जिन्होंने बैंक अधिकारी के रूप में सेवा निवृत्त होने के बाद साहित्य और समाजसेवा में सक्रिय योगदान दिया है। वे लगभग ४५ लघु कथाएँ , ७५ कहानियाँ, २०० से अधिक गीत और ग़ज़लें सहित कई विधाओं में रचनाएँ लिख चुके हैं। उनके दो कहानी संग्रह, एक गीत संग्रह और दो उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें हरिद्वार के हरी और आखिर कब तक शामिल हैं। उनकी रचनाएं हंस, साहित्य अमृत, नया ज्ञानोदय जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं, और उन्हें मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग सहित कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है।

लोकतंत्र के जंगल में चारों ओर शांति थी। सारे पशु पक्षी, पेड़-पौधे, सारे प्राणी अपने अनुसार जीवन जी रहे थे। आजादी के बाद समानता लाने के लिये कुछ अक्लमन्दों ने छोटे और कमजोरों के लिये कुछ विशेष सुविधाएँ कुछ समय के लिये प्रायोजित करवाई थीं। बड़ों और मजबूतों को भी कोई विशेष तकलीफ नहीं थी। उनका समय अच्छा निकल रहा था। कमजोर धीरे-धीरे मजबूत हो रहे थे। तभी एक चालाक राजनीतिज्ञ को सारे जंगल पर अपना राज जमाने की सूझी और उसने ताबड़तोड कमजोरों को लुभाकर अपनी ओर करने और मजबूतों तथा कमजोरों के बीच वर्गभेद पैदा करने की योजना बनाई। कुछ खुद का दिमाग, कुछ सलाहकारों की राय से जंगल के शेर के समान एक शक्तिशाली मंडल शेर पर सवार होकर वह निकल पड़ा और सारे कमजोरों को अपने पक्ष में करके जंगल का राजा बन बैठा। यद्यपि उसके सलाहकारों ने उसे चेतावनी दी थी कि इस शेर की सवारी करने की शर्त यह है कि एक बार इसकी सवारी करने के बाद इससे उतरना बहुत मुश्किल है और जो इसपर सवार होने के बाद उतरेगा उसे यह शेर खा जायेगा, किन्तु उसे न तो खुद के भविष्य की चिन्ता थी और न ही जंगल के वातावरण खराब होने की। उसे तो बस अपने वर्तमान की चिन्ता थी। उसकी सफलता देख राजनीति के अन्य सारे महारथी बेचैन हो गये। येन केन प्रकारेण मौका मिलते ही एक-एक करके सारे दिग्गज उस मण्डल शेर पर सवार हो गये। सब जानते थे कि इस शेर की सवारी समाज के लिये भी गलत है, देश के लिये भी और उनके खुद के लिये भी, लेकिन तात्कालिक लाभ के लिये किसी ने कुछ न सोचा बल्कि अब वे एक दूसरे की होड़ में कमजोरों को लुभाने के नित नए फार्मुले लाने लगे। अब वर्ग भेद के साथ जाती भेद के उपहार भी बंटने लगे। मजबूत और ऊँचे कहलाने वाले लोग परेशान और दुखी होने लगे। कमजोर और छोटे कहलाने वाले लोग मस्त होते गये। तात्कालिक सुविधाओं को पाकर उनका विकास उनकी अकर्मण्यता और आलस्य में बदलने लगा। मण्डल शेर अब बहुत शक्तिशाली होकर जंगल-जंगल, गली-गली और मोहल्ले-मोहल्ले धूम मचा रहा है। सारे राजनैतिक महारथी मण्डल शेर को कस कर पकड़े हुए मजबूती से बैठे हैं, कोई उतरने को तैयार नहीं, कोई उतर भी नहीं सकता। सब को अपनी जान प्यारी है, क्योंकि अब तो जो मण्डल शेर से उतरा उसे मण्डल शेर ने खाया।

भगवान महावीर
अहिंसा और सत्य के महान प्रवर्तक

तनिष नाहाटा, ऑनलाइन हिंदी पाठशाला, उच्चस्तर-२

भगवान महावीर जैन धर्म के २४वें और अंतिम तीर्थंकर थे। वे छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारत में जन्मे एक महान आध्यात्मिक गुरु और समाज सुधारक थे। उनका जन्म कुंडग्राम (वर्तमान बिहार, भारत) में हुआ था। उनके माता-पिता राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला इक्ष्वाकु वंश से संबंधित थे। महावीर स्वामी ने ३० वर्ष की आयु में राजसी वैभव का त्याग कर संन्यास ग्रहण किया और आत्मज्ञान की खोज में कठोर तपस्या की। उन्होंने पूर्ण अहिंसा का पालन किया और आंतरिक शांति प्राप्त करने के लिए मौन साधना की। बारह वर्षों तक उन्होंने साल वृक्ष के नीचे कठिन तप, ध्यान और आत्मसंयम का पालन किया, जिसके पश्चात उन्हें कैवल्य ज्ञान (सर्वोच्च ज्ञान) की प्राप्ति हुई। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन सत्य, अहिंसा और धर्म के प्रचार में समर्पित कर दिया।

भगवान महावीर के पाँच महाव्रत

महावीर स्वामी ने लोगों को मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताया और पाँच महाव्रत अपनाने की शिक्षा दी:

१. अहिंसा: किसी भी जीव को मन, वचन या कर्म से हानि न पहुँचाना।

२. सत्य: सच्चाई का पालन करना और झूठ से दूर रहना।

३. अस्तेय: बिना अनुमति के किसी वस्तु का ग्रहण न करना।

४. ब्रह्मचर्य: आत्मसंयम और पवित्र आचरण का पालन करना।

५. अपरिग्रह: भौतिक वस्तुओं और सांसारिक इच्छाओं का त्याग करना।

भगवान महावीर ने ७२ वर्ष की आयु में पावापुरी (बिहार) में मोक्ष (निर्वाण) प्राप्त किया। उनके सिद्धांत जैन धर्म के मूल स्तंभ बने और आज भी लाखों लोगों को प्रेरित करते हैं। उनका जीवन सादगी, करुणा और आत्मसंयम का संदेश देता है। महावीर जयंती उनके जन्म दिवस के रूप में हर वर्ष श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाई जाती है।

आधुनिक जीवन में भगवान महावीर के विचार

भगवान महावीर ने अपरिग्रह (त्याग) पर विशेष जोर दिया, जो आधुनिक युग में न्यूनतावाद (Minimalism) और सतत जीवनशैली (Sustainable Living) के सिद्धांतों से मेल खाता है। उनके अहिंसा के सिद्धांत ने महात्मा गांधी, मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे महान नेताओं को भी उनके शांतिपूर्ण प्रतिरोध आंदोलनों में प्रेरित किया।

भगवान महावीर का जीवन और उनकी शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी प्राचीन समय में थीं। उनका संदेश हमें आत्मसंयम, प्रेम और सच्चे धर्म का पालन करने की प्रेरणा देता है।

हिंदू ग्रंथों का हमारे जीवन पर प्रभाव

नमस्ते, मेरा नाम मंजू अग्निहोत्री है। मैं वुडब्रिज पाठशाला में पिछले आठ वर्षों से हिंदी की शिक्षा में कार्यरत हूँ। इस दौरान, न केवल हिंदी भाषा की गहरी समझ हासिल की, बल्कि मैंने यह भी जाना कि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को उस ज्ञान से जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना है। हिंदी के साहित्य, कविताओं और भाषाई विशेषताओं के माध्यम से विद्यार्थियों में न केवल भाषाई कौशल विकसित होते हैं, बल्कि वे अपने व्यक्तित्व को भी निखारते हैं। इस लंबे सफर में मैंने देखा है कि हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और इतिहास का भी एक अहम हिस्सा है।

हिंदू धर्म के ग्रंथ जैसे भगवद् गीता, रामायण, महाभारत, उपनिषद और वेद न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि ये हमारे जीवन के सभी पहलुओं को दिशा देने वाले गहरे सिद्धांतों से भरे हुए हैं। इन ग्रंथों में छिपी शिक्षाएँ हमारे जीवन को सकारात्मक दिशा में मोड़ने, हमें मानसिक शांति प्राप्त करने, और जीवन के उद्देश्य को समझने में सहायक हैं। ये ग्रंथ न केवल मानवता के आचार-व्यवहार को समझाते हैं, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सत्य, न्याय, कर्तव्य, और धर्म के पालन का महत्व भी बताते हैं। हिंदू ग्रंथों का हमारे जीवन पर प्रभाव गहरा और स्थायी होता है। इनके संदेश हमें जीवन में सही मार्गदर्शन देते हैं और हमें कठिनाइयों के बीच भी सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करते हैं। इन ग्रंथों से प्राप्त शिक्षा को अपने जीवन में उतारने से व्यक्ति न केवल आध्यात्मिक उन्नति करता है, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक जीवन में भी सफलता प्राप्त करता है। नीचे दिए गए तालिका में कुछ प्रमुख हिंदू ग्रंथों और उनके हमारे जीवन पर प्रभावों का संक्षेप में वर्णन किया गया है:

ग्रंथ	हमारे जीवन पर प्रभाव	मुख्य शिक्षा
भगवद् गीता	- जीवन के उद्देश्य को समझना, कर्म का महत्व	- कर्मयोग, भक्ति योग, ज्ञान योग की शिक्षा।
	- संकटों से जूझने का तरीका, मानसिक शांति	- फल की चिंता छोड़कर सिर्फ कर्तव्य पालन का आदर्श।
रामायण	- धैर्य, संयम और आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा	- परिवार और रिश्तों का सम्मान, कर्तव्य पालन, सत्य का पालन।
	- संघर्षों से सच्चाई और साहस के साथ निपटना	- कठिन परिस्थितियों में भी सकारात्मक दृष्टिकोण रखना।

ग्रंथ	हमारे जीवन पर प्रभाव	मुख्य शिक्षा
महाभारत	- जीवन में नीति, कर्तव्य और धर्म की महत्वपूर्णता	- धर्मयुद्ध, नीति, संघर्षों में भी न्याय की स्थिरता।
	- पराक्रम, मित्रता और त्याग की शक्ति	- अर्जुन और कृष्ण की उपदेशों से जीवन के निर्णायक फैसले।
उपनिषद	- आत्मज्ञान की प्राप्ति, ब्रह्म के साथ एकाकार	- आत्मा और परमात्मा का स्वरूप, ध्यान और साधना का महत्व।
	- आत्मा का साक्षात्कार और संसार के रहस्यों को जानना	- "तत्त्वमसी" (तुम वही हो) का अनुभव।
वेद	- विश्व, जीवन और धर्म के बारे में गहरे ज्ञान की प्राप्ति	- वैदिक ऋचाओं में निहित ज्ञान और विज्ञान का आध्यात्मिक दृष्टिकोण।
	- आचार-व्यवहार और धार्मिक अनुष्ठानों की विधियाँ	- जीवन के चार पुरुषार्थ: धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष।

प्रमुख प्रभाव:

1. **धर्म और कर्तव्य का पालन:** इन ग्रंथों से यह शिक्षा मिलती है कि जीवन का सर्वोत्तम उद्देश्य धर्म का पालन करना है और अपने कर्तव्यों का सही तरीके से निर्वहन करना है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को यह समझाया कि जीवन में कर्म के फल की चिंता न करते हुए कर्तव्य का पालन करना चाहिए।
2. **आध्यात्मिक उन्नति:** उपनिषद और वेद हमें आत्मा और परमात्मा के बारे में गहरे ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग बताते हैं। इन ग्रंथों से हम आत्म साक्षात्कार और ब्रह्म के साथ एकता की महत्ता को समझते हैं।
3. **संकटों का समाधान:** रामायण और महाभारत से हमें जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना कैसे करना चाहिए, यह सीखने को मिलता है। इन ग्रंथों में व्यक्तियों को धैर्य, संयम और साहस के साथ जीवन के संघर्षों का सामना करने का मार्गदर्शन मिलता है।
4. **नैतिकता और सत्य:** महाभारत में श्री कृष्ण ने अर्जुन को धर्म और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। रामायण में श्रीराम का जीवन सत्य के पालन और न्याय का प्रतीक है। ये हमें यह सिखाते हैं कि हमें हमेशा सत्य के रास्ते पर चलना चाहिए, चाहे परिस्थितियाँ जैसी भी हों।
5. **समाज में योगदान:** हर ग्रंथ हमें समाज में अपने योगदान का महत्व बताता है। वेदों और गीता में बताया गया है कि मानव जीवन का उद्देश्य केवल आत्म कल्याण नहीं, बल्कि समाज और दूसरों की भलाई के लिए भी काम करना है। रामायण और महाभारत में यह स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि समाज में एकता और सामूहिक प्रयास से हम बड़े लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

आत्मविश्वास और परिश्रम: गीता और रामायण हमें यह सिखाती हैं कि हमें अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखना चाहिए और बिना थके अथक प्रयास करते रहना चाहिए। भगवान श्रीराम और अर्जुन के जीवन में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि मेहनत और आत्मविश्वास के साथ किए गए प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाते।

निष्कर्ष:

हिंदू ग्रंथ न केवल आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि ये हमारे जीवन को सही दिशा देने वाले सिद्धांत भी हैं। इन ग्रंथों से प्राप्त शिक्षाएँ अगर हम अपने जीवन में उतारें तो हम न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन को संतुलित और सफल बना सकते हैं, बल्कि समाज और दुनिया में भी एक आदर्श स्थापित कर सकते हैं। इन ग्रंथों का पालन करने से न केवल आत्मिक शांति मिलती है, बल्कि जीवन में सच्चे सुख और समृद्धि की प्राप्ति भी होती है।

हिंदी क्लब

मेरा नाम मार्शा नाथ है। मैं मध्यमा-३ स्तर की कक्षा में हूँ और एरिज़ोना में यूनिवर्सिटी हाई स्कूल में ९वीं कक्षा में हूँ। मैं ४ वर्ष से हिंदी सीख रही हूँ। मेरे पसंदीदा शौक गायन और चित्रकारी हैं।

इस वर्ष, हिंदी यू.एस.ए. में अपने ४ वर्षों से प्रेरित होकर मैंने अपने समुदाय में एक हिंदी क्लब शुरू किया है जहाँ मैंने ~७ बच्चों को ऑनलाइन हिंदी कक्षाओं में दाखिला लेने और उन्हें हिंदी साहित्य से परिचित कराने के लिए प्रोत्साहित किया है। मैंने यह क्लब गर्मियों में शुरू किया था जब मैंने एक पावरप्वाइंट बनाया और एरिज़ोना में अभिभावकों के बीच हिंदी को बढ़ावा देने के लिए एक बैठक आयोजित की। हालाँकि बहुत कम लोग आये थे, लेकिन उन सभी ने अपने बच्चों को कार्यक्रम में नामांकित किया, जिससे मुझे बहुत खुशी हुई। बाद में उस गर्मी में मैंने इंडियन सोसाइटी ऑफ सदर्न एरिजोना (आई.एस.एस.ए) के स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में एक पोस्टर बनाया, जहाँ मैंने हिंदी सीखने को बढ़ावा दिया और फूड ड्राइव के लिए ३० पाउंड से अधिक डिब्बाबंद सामान एकत्र किया। इस वर्ष जब स्कूल शुरू हुआ, तो मैंने अपने स्थानीय पुस्तकालय में मासिक बैठकें आयोजित करके अपने हिंदी क्लब की पहल को अगले स्तर तक ले जाने का लक्ष्य रखा। इन बैठकों में मैंने अधिक बच्चों को उनकी मातृभाषा विकसित करने के लिए हिंदी यू.एस.ए. में शामिल होने में मदद की। मेरे क्लब में एक सदस्य अपनी कविताएँ लिखता है और सदस्यों को मिलने वाले साहित्य के प्रचार-प्रसार में उसका बड़ा योगदान है। इन बैठकों ने वार्षिक कविता पाठ प्रतियोगिता के लिए भी एक अभ्यास के रूप में काम किया क्योंकि बच्चे, जिनमें मैं भी शामिल थी, बैठकों में केवल हिंदी बोलते थे। हाल ही में एरिज़ोना विश्वविद्यालय से हिंदी भाषा के एक प्रोफेसर और उनके दो छात्र भी शामिल हुए हैं और हमारी अगली बैठक में भाग लेंगे। इस क्लब के लिए मेरा लक्ष्य इसे इसके वर्तमान के सापेक्ष बड़े स्तर पर ले जाना है, और कर्मभूमि लेख एक आउटलेट है और आशा है कि भविष्य में मुझे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा।

कोई भी इंसान अपने जन्म से नहीं बल्कि अपने कर्मों से महान बनता है।

संतों और ऋषियों की रचनाएँ

मेरा नाम अनुषा मुंद्रा है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं अपने दादा, दादी, पापा, मम्मी और भाई के साथ नॉरवॉक, कनेक्टिकट में रहती हूँ। मुझे किताबें पढ़ना पसंद है। मेरी पसंदीदा सीरीज़ पर्सी जैक्सन है।

संतों और ऋषियों की रचनाएँ प्राचीन भारतीय साहित्य का अभिन्न अंग हैं। ये रचनाएँ हमें न केवल प्राचीन भारतीय संस्कृति और धर्म के बारे में जानकारी देती हैं, बल्कि मूल्यवान जीवन के सबक और आदर्श भी प्रदान करती हैं।

वेदों का महत्व: वेद प्राचीन भारतीय साहित्य की सबसे पुरानी और सबसे पूजनीय रचनाएँ हैं। इनमें विभिन्न देवताओं के लिए भजन और प्रार्थनाएँ हैं, जो प्राचीन भारतीय धर्म और संस्कृति के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं। सबसे पुराना ऋग्वेद है, जिसमें देवताओं की स्तुति और प्रार्थनाएँ हैं। यजुर्वेद में यज्ञों और अनुष्ठानों से संबंधित जानकारी मिलती है। सामवेद संगीत और गायन से संबंधित वेद है। अथर्ववेद जादू-टोना और चिकित्सा के बारे में बताता है।

उपनिषदों का महत्व: उपनिषद वे रचनाएँ हैं जो वेदों का अनुसरण करती हैं और स्वयं की प्रकृति और परम वास्तविकता की खोज करती हैं। वे जीवन के मूल्यों और आदर्शों पर चर्चा करते हैं और आध्यात्मिक विकास का मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उपनिषदों से हम आत्मा और परमात्मा के बारे में सीखते हैं और जीवन को सही तरीके से जीने के लिए प्रेरित होते हैं। उपनिषदों में दर्शनशास्त्रीय विचारों का भी वर्णन किया गया है। उपनिषद प्राचीन भारतीय साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं जो हमें प्राचीन भारतीय साहित्य के विकास के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।

पुराणों और महाकाव्यों का महत्व: पुराण प्राचीन भारतीय साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। वे देवताओं और उनके अवतारों की कहानियाँ सुनाते हैं, जो प्राचीन भारतीय पौराणिक कथाओं के बारे में जानकारी देती हैं। हिंदू धर्म के इतिहास का वर्णन उल्लेखनीय पुराणों में शिव पुराण, विष्णु पुराण, भागवत पुराण और रामायण सम्मिलित हैं। पुराणों में हिंदू धर्म के इतिहास का वर्णन किया गया है, जो हमें हिंदू धर्म के विकास के बारे में जानकारी प्रदान करता है। पुराणों में भगवान की महिमा का वर्णन किया गया है, जो हमें भगवान के बारे में जानकारी देता है। पुराणों में दर्शनशास्त्रीय विचारों का वर्णन किया गया है, जो हमें जीवन के मूल्यों और आदर्शों के बारे में सिखाते हैं। पुराण प्राचीन भारतीय साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं, जो हमें प्राचीन भारतीय साहित्य के विकास के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं। पुराण प्राचीन भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो हमें उस समय के लोगों के जीवन, धर्म और रीति-रिवाजों के बारे में बताते हैं।

रामायण में श्रीराम की कहानी और उनके अवतार का वर्णन किया गया है। महाभारत और भागवत पुराण में श्रीकृष्ण की कथा और उनके अवतारों को दर्शाया गया है। शिव पुराण में भगवान शिव की कथा बताई गई है।

निष्कर्ष: संतों और ऋषियों की रचनाएँ भारतीय संस्कृति और धर्म की नींव हैं। इन रचनाओं ने न केवल हमें भगवान के बारे में जानकारी प्रदान की, बल्कि जीवन के मूल्यों और आदर्शों के बारे में भी सिखाया। वेद, उपनिषद, पुराण और महाकाव्य जैसी रचनाएँ हमें आत्म-ज्ञान, अध्यात्म और नैतिकता के बारे में सिखाती हैं। ये रचनाएँ हमें जीवन के उद्देश्य और अर्थ को समझने में मदद करती हैं और हमें एक बेहतर इंसान बनने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार, संतों और ऋषियों की रचनाएँ हमारी संस्कृति और धर्म की अमूल्य धरोहर हैं और हमें इन्हें हमेशा सम्मान और आदर से देखना चाहिए।

हिन्दू ग्रंथ: सत्य, सेवा और आत्मज्ञान का मार्ग

विजय लक्ष्मी गुप्ता

विजय लक्ष्मी गुप्ता एक कलाकार हैं (पेंटिंग में आर्ट शो आयोजित करती हैं)। इन्हें समुदाय की मदद करने और समुदाय का हिस्सा बनने में समय बिताना अच्छा लगता है। इन्हें नृत्य करना और परिवार के साथ हिंदी फिल्में देखना भी पसंद है। इनका मानना है कि हिंदी यू.एस.ए., विद्यार्थियों के लिए हिंदी भाषा सीखने और माता-पिता के लिए सामाजिक करण का एक बेहतरीन मंच है।

असतो मा सद्गा मया
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतं गमय

हे ईश्वर! आप हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

हमारे हिंदू ग्रंथ और हमारे उपनिषद हमें बहुत सारा ज्ञान देते हैं। हमें जीवन का महत्व समझाते हैं। जीवन को जीना सिखाते हैं। धर्म ग्रंथ हमें अपने पूर्वजों के अनुभवों का ज्ञान देते हैं। ग्रंथों से हमें सत्य पर चलने और बुरी बातों से दूर रहने का संदेश मिलता है। हमें अपने आचार -व्यवहार और उपासना के बारे में जानकारी मिलती है। ग्रंथों से हमें जीवन को ऊँचा उठाने के लिए आध्यात्मिक साहित्य मिलता है। इनसे हमें आगे के उन्नत ज्ञान को पाने में मदद मिलती है। हर मनुष्य को अपने जीवन में सफलता और ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए एक गुरु तथा मार्गदर्शक की जरूरत होती है। हमारे जीवन में वहीं मार्गदर्शक बनते हैं हमारे ग्रंथ। ग्रंथों का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इनके मार्गदर्शन द्वारा हम सभी मनुष्यों को एक सामान दृष्टि से देखने योग्य हो पाते हैं, जिससे आपस में सभी लोगों में प्रेम भाव बना रहता है और सभी धर्मों का समान रूप से सम्मान करते हैं। ग्रन्थ हमें एक ऐसा दृष्टिकोण प्रदान करते हैं जिससे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी एक आस्था की किरण बनी रहती है, यह वह किरण होती हैं जो कभी हमारा साथ नहीं छोड़ती। हमारे ग्रंथ हमें देश-विदेश में जीने का अर्थ समझाते हैं। ये हमारे माता-पिता हैं। इनका ज्ञान कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ता। इनका ज्ञान करते रहने से प्रत्येक व्यक्ति से लोभ की समाप्ति हो जाती है। लोभ की समाप्ति होने से वह हर कर्म बिना किसी लालच, स्वार्थ और फल की इच्छा रखे करता है। उसे उस परमेश्वर का ज्ञान मिल जाता है और वह निस्वार्थ सेवा भाव से लोगो की सेवा करने लगता है। हमारे ग्रंथ हमारे बच्चों को अच्छे और बुरे में भेद करना सिखाते हैं और हम सही मार्ग पर चलने की शिक्षा देते हैं। ग्रंथों का पाठ करने वाला मनुष्य कठिन परिस्थिति में भी संयम नहीं खोता। निस्वार्थ सेवा का भाव हमें परमेश्वर की अनुभूति और जीवन में जीने का साहस प्रदान करते हैं। परमेश्वर एक ही है और सबसे बड़ा धर्म यह ही है कि हम किसी दूसरे का दिल न दुखाएँ और सभी जीवों को समान जीने का अधिकार दें। दूसरों की मदद करें और दूसरे धर्म के ग्रंथों को भी सम्मानित दृष्टि से देखें। किसी का नुकसान न करें और अपने लाम का हिस्सा गरीबों में बाँटे।

इसलिए, ग्रंथ ही जीवन है और जीवन ही ग्रंथ हैं।

भगवान कृष्ण
कर्म, धर्म और जीवन का मार्गदर्शन

मनस्विनी बोद्दुपल्ली

मनस्विनी बोद्दुपल्ली को कला पसंद है और संगीत और नृत्य सीखने में रुचि है। वह हमेशा नई चीजें खोजने और सीखने के लिए उत्सुक रहती हैं।

भगवान कृष्ण, हिंदू धर्मों के अनुरूप, श्री महा विष्णु का रूप हैं। कृष्ण का जन्म, और उनकी अद्भुत लीलाएँ, जितनी भी पढें और जाने उतनी कम हैं। महाभारत एवं भागवत में कृष्ण की कथाएँ लिखी हुई हैं। भगवद् गीता से भगवान कृष्ण की शिक्षाओं का पता चलता है। उनकी प्रत्येक शिक्षा मानव जीवन चक्र में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

उनके उपदेशों के माध्यम से अच्छा और बुरा, कर्तव्य और इच्छा, भावना और जिम्मेदारी के बीच अंतर को अच्छी तरह से समझाया गया है। भगवान कृष्ण के अनुसार आत्म मूल्यांकन और कर्म में विश्वास, मनुष्य को अपने जीवन में संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

भगवान कृष्ण के भक्त सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में हैं। उन्होंने दुनिया भर में इस्कॉन मंदिर बनाए और भगवान कृष्ण के पदचिह्न पर चलना शुरू किया। नृत्य, संगीत और भाषण के माध्यम से उनके उपदेशों को गाकर अपनी भक्ति व्यक्त की।

महाभारत के अनुसार हम यह समझ सकते हैं कि अच्छे कर्म करने वालों को भगवान का साथ हमेशा मिलता है। पांडवों ने भगवान कृष्ण के समर्थन से अपने ही भाई कौरवों को कुरुक्षेत्र युद्ध में हराया और अपने राज्य को प्राप्त किया। दूसरी ओर कौरवों और उनके अहंकारी कृत्यों के कारण उनकी दुखद मृत्यु हुई।

भगवद् गीता के माध्यम से भगवान कृष्ण ने अर्जुन को अपनी भावनाओं और अपनी जिम्मेदारी के बीच की लड़खड़ाहट से उबरने में मदद की।

भगवान श्री कृष्ण के अनुसार जिम्मेदारी भावना से पहले आनी चाहिए और कर्म उसके अनुरूप होता है। क्या आप सचमुच बता सकते हैं कि हिंदू होने का दावा करने के बावजूद आज की दुनिया में कितने लोग वास्तव में श्री कृष्ण के सिद्धांतों का पालन कर रहे हैं?

कृष्ण ने खाई मिट्टी

मेरा नाम डिविशा जैन है। मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और पाँच वर्ष से हिंदी सीख रही हूँ। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला में मध्यमा–३ की छात्रा हूँ। मुझे कविता-पाठ प्रतियोगिता में भाग लेना बहुत पसन्द है। मुझे तैरना, चित्रकारी करना, खेलना और संस्कृति से जुड़ी कहानियाँ सुनना पसंद है, जो मेरे पिताजी सुनाते हैं। चलिए मैं आपको एक कहानी सुनाती हूँ जो भगवान कृष्ण के बचपन की है। ऐसे तो उनकी अनेक कहानियाँ प्रसिद्ध है, पर मेरी उनमें से पसंदीदा कहानी है- माता यशोदा की....

एक बार भगवान और उनके भाई बलराम बगीचे में फल तोड़ रहे थे। कृष्ण अभी छोटे थे। पेड़ तक उनके हाथ पहुँच नहीं पा रहे थे, तो उन्होंने जमीन से उठाकर मिट्टी खा ली। यह बात माता यशोदा को पता चली। उन्होंने कान्हा को अपना मुँह खोलने और दिखाने के लिए कहा, पर कान्हा ने गर्दन हिलाकर मना कर दिया। बाद में माता के डर से उन्होंने अपना मुँह खोला, तब माता यशोदा ने उनके मुँह के अंदर झाँका और देखा। माता यशोदा को पूरा संसार उनके छोटे से मुँह में दिखाई दिया। उन्हें पूरे ब्रह्मांड के दर्शन हो गए। तब माता को पता चला की कान्हा तो भगवान है। कृष्ण की इसी लीला के कारण उन्हें आज भी मिट्टी का भोग लगाया जाता है। कृष्ण को माखन चोर भी कहते हैं।

सीख - भगवान भी अपनी माता की बात मानते हैं। हमें भी हमेशा अपनी माता का कहना मानना चाहिए।

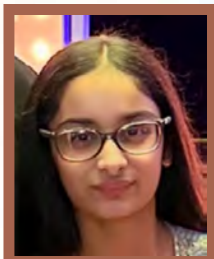

केवट की कहानी

आदया चावला
चैरी हिल पाठशाला, उच्चस्तर-१

भगवान राम के १४ वर्ष के वनवास के दौरान राजा नषाद ने उन्हें गंगा पार अपने महल में आने का निमंत्रण दिया। उसने नदी के किनारे बैठे केवट से उन्हें नदी पार कराने का आग्रह किया। इस पर केवट बोला कि वह लक्ष्मण और सीता को नदी पार पहुँचाएगा, लेकिन भगवान राम को अपनी नाव में बैठने नहीं देगा।

लक्ष्मण ने उससे पूछा कि वह ऐसा क्यों कह रहा है, क्या वह भगवान राम को नहीं पहचानता? केवट बोला, "मैं भगवान को भली भांति पहचानता हूँ और मैंने यह भी सुना है कि इन्होंने पत्थर की शिला को पैर से छुआ था और उसे एक लड़की में बदल दिया था। वह बोला, “अगर इनके चरण मेरे नाव में पड़ते हैं, तो वह लड़की बदल जाएगी और मेरे पास तो कोई व्यवसाय नहीं बचेगा। मैं पहले इनके चरण धोकर ही इन्हें अपनी नाव में बैठने दूंगा!" इस पर भगवान राम ने लक्ष्मण को शांत किया और मान गए। केवट ने भगवान राम के चरण धोकर फिर वह पानी पिया। भगवान राम प्रसन्न होकर और आशीर्वाद की भावना से उनकी नाव में बैठ गए। जब वे किनारे पहुंचे तो भगवान राम ने सीता माता को अपनी अंगूठी केवट को दे देने को कहा। इस पर केवट ने कहा कि वह किसी हमपेशा से अपने पर कोई धन नहीं ले सकता।

लक्ष्मण ने आश्चर्यचकित होकर पूछा कि वह कैसे हमपेशा है? इस पर केवट ने जवाब दिया, "जैसे मैं सब को नदी पार ले जाता हूँ, वैसे ही भगवान राम हम सब को इस संसार के भवसागर से पार लगाते हैं" भगवान राम ने खुशी होकर केवट को मोक्ष का आशीर्वाद दिया।

इस कहानी से हम दया, प्रेम भाव और भक्ति का महत्व समझते हैं। मैं केवट की कहानी से आम तौर पर भक्ति और शिष्टाचार की शिक्षा प्राप्त करती हूँ।

जीवन में भागवत गीता का महत्व

अन्वी आहूजा
एडिसन पाठशाला, उच्चस्तर-१

भागवत गीता भारतीय सनातन धर्म का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। गीता में जीवन के विभिन्न पहलुओं, आध्यात्मिकता, योग, और धर्म के विषयों पर गहन विमर्श किया गया है। गीता के श्लोकों में कर्मयोग, भक्तियोग, और ज्ञानयोग का वर्णन किया गया है, जो हमें जीवन में सही मार्ग दिखाते हैं। गीता हमें सिखाती है कि कठिनाइयों का सामना कैसे किया जाए और कैसे अपने कर्मों को धर्म के अनुसार निभाया जाए। गीता में आत्मा की पहचान और मोक्ष के मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। गीता में धर्म और अधर्म के बीच के अंतर को स्पष्ट किया गया है। इसमें हमें सिखाया गया है कि कैसे अपने कर्तव्यों को निभाते हुए धर्म का पालन करें।

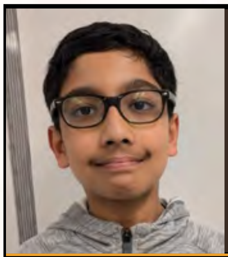

लंका में हनुमानजी

नमस्ते, मेरा नाम जीवन अग्रवाल है। मैं ११ साल का हूँ। मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला की उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे मेरी बहन के साथ खेलना अच्छा लगता है। मुझे वीडियो गेम खेलना, पुस्तक पढ़ना भी अच्छा लगता है।

हनुमानजी, श्री राम और वानर सेना सहित सीता माता को ढूंढ रहे थे। हनुमानजी की टोली को दक्षिणी ओर की खोज की जिम्मेदारी दी गई। उन्होंने दक्षिण दिशा में सब जगह ढूंढा, लेकिन उन्हें सीता माता कहीं नहीं मिलीं। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वे समुद्र के पास आ पहुंचे और पानी का एक विशाल भंडार देखा। समुद्र के उस ओर लंका थी। समुद्र तट पर उनकी मुलाकात जटायु के भाई सम्पति से हुई। सम्पति ने सीता माता को ढूंढने में वानरों की सहायता की। उन्होंने सीता माता को रावण द्वारा लंका में रखे जाने की जानकारी दी। हनुमान जी को सीता माता के पास जाने के लिए १०० योजन का समुद्र पार करना था, उनको पता नहीं था कि वो कर पाएंगे या नहीं। फिर, जाम्बवंत जी ने हनुमानजी को अपनी भूली हुई शक्ति का आभास करवाया। १०० कठिन योजन पार करने के बाद, हनुमानजी लंका पहुंचे। वहाँ पर उनकी मुलाकात विभीषण से हुई जिन्होंने हनुमानजी को माता सीता का पता बताया। फिर, हनुमानजी अशोक वाटिका गये, जहाँ माता सीता को रावण ने रखा था। अशोक वाटिका पहुँच कर, हनुमानजी ने माता सीता को श्री राम का संदेश और मुद्रिका दी। हनुमानजी सीता माता का संदेश भी सुनें। फिर, अशोक वाटिका में कई राक्षस हनुमानजी को पकड़ने आए। हनुमानजी ने सब को परेशान किया। उन्होंने रावण के छोटे पुत्र अक्ष को मार गिराया। फिर, वे रावण के पास गये। वहाँ पर हनुमानजी ने रावण को एक और मौका दिया कि रावण, सीता माता को आदर सहित श्री राम को लौटा दे। श्री राम उन्हें क्षमा कर देंगे और उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाएँगे, पर रावण नहीं माना। रावण ने क्रोध में हनुमानजी की पूंछ में आग लगा दी। हनुमानजी ने रावण के दिए गए दंड से पूरी लंका जला दी। फिर, वे अपनी पूंछ कि आग बुझाकर, श्री राम को संदेश देने के लिए निकल गए।

इस पूरी कहानी से हमने कुछ सबक सीखे हैं। पहला है की सच्चाई की ओर पर रहने से, सब कुछ अच्छा होता है। मैंने यह भी सीखा की जब हनुमानजी को पूरा सागर पार करना था, वे डरने की बजाय, जय श्री राम कहकर पूरा समुद्र पार कर गए। यह दिखाता हैं कि अगर कोई चुनौती हो, तो डरना नहीं चाहिए, पर हिम्मत दिखाकर आगे बढ़ना चाहिए। कोई भी व्यक्ति छोटा या बड़ा नहीं होता, यह सिर्फ आपकी इच्छाशक्ति और खुद पर विश्वास पर निर्भर करता है। आपको शांत मन से अपना काम करना चाहिए। सभी लड़ाइयाँ ताकत से नहीं जीती जा सकतीं, कुछ लड़ाइयों को अपने दिमाग से जीतने की ज़रूरत होती है। सभी स्थितियों में गुस्सा और ताकत दिखाना जरूरी नहीं है, कभी-कभी आपको शांति और धैर्य दिखाने की जरूरत होती है।

आद्विक गुप्ता, उच्चतर-१, वुडब्रिज पाठशाला

रामचरितमानस

१. श्री राम जी का जन्म

अयोध्या में राजा दशरथ के घर में भगवान श्री राम का जन्म हुआ। उनके तीन भाई, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न भी थे।

२. सीता जी का स्वयंवर

राजा जनक की पुत्री सीता के लिए स्वयंवर आयोजित किया गया। भगवान श्री राम ने शिव जी के धनुष को तोड़कर सीता का हाथ जीता।

३. श्री राम जी का वनवास

राजा दशरथ ने राम को १४ वर्षों के लिए वनवास में जाने का आदेश दिया। श्री राम ने अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वनवास में जाने का निर्णय लिया।

४. सीता जी का अपहरण

रावण ने सीता जी का अपहरण कर लिया और उन्हें लंका ले गया। श्री राम और लक्ष्मण ने सीता जी को ढूंढने के लिए वनवास में यात्रा की।

५. श्री राम जी और रावण का युद्ध

श्री राम और रावण के बीच एक भयंकर युद्ध हुआ। श्री राम ने रावण को मारा और सीता जी को मुक्त कराया।

६. श्री राम जी की वापसी

श्री राम, सीता जी और लक्ष्मण अयोध्या वापस आए। श्री राम को अयोध्या का राजा बनाया गया।

रामचरितमानस से हमें क्या शिक्षा मिलती है

१.धैर्य और साहस

यदि हमारा मन शुद्ध है, तो हम कहीं भी और किसी भी स्थिति में ईश्वर को पा सकते हैं।

हमारी भावनाएँ और विचार हमारे जीवन को आकार देते हैं।

२.नैतिकता और धर्म

दूसरों की मदद करना और उनके हित में काम करना सबसे बड़ा धर्म है।

हमारे अपने हाथों में ही हमारे जीवन की शक्ति और संभावनाएँ हैं।

३.आत्म-विश्वास और संघर्ष

यदि हम प्रयास करते हैं और संघर्ष करते हैं, तो हम कभी हार नहीं मानते।

"संघर्ष से जीतने वाले को ही विजयी कहा जाता है।" - यह उद्धरण हमें बताता है कि संघर्ष से जीतने वाला व्यक्ति ही विजयी होता है।

मुझे रामायण पढ़ना और दूरदर्शन पर उस देखना बहुत अच्छा लगता है।

सही कर्म वह नहीं है जिसके परिणाम हमेशा सही हो बल्कि सही कर्म वह है जिसका उद्देश्य कभी भी गलत ना हो।

सच्चा मार्ग

रीतिशा परथी
चैरी हिल पाठशाला
उच्चस्तर -१

कुछ लोग यह सोचकर बुरे का अनुसरण करते हैं कि वे अच्छा कर रहे हैं। कुछ लोग यह सोचकर अच्छे का अनुसरण करते हैं कि वे बुरा कर रहे हैं। हालाँकि कुछ लोग जानते हैं कि वे बुरा कर रहे हैं और फिर भी वे ऐसा करते रहते हैं।

रामायण में विभीषण रावण का छोटा भाई है और वह दरबार का सदस्य भी है। रावण वह दुष्ट राजा है जिसने राम की पत्नी सीता को चुराया था। विभीषण रावण का सलाहकार था और उसने रावण से कहा था कि अगर युद्ध हुआ तो राक्षस जाति पूरी तरह खत्म हो जाएगी। हालाँकि, रावण ने इस पर ध्यान नहीं दिया और विभीषण पर देशद्रोही होने का आरोप लगा दिया। विभीषण ने उचित समझा और राम के पास जाकर उन्हें वह सब कुछ बता दिया जो वे जानते थे। बदले में राम ने विभीषण से वादा किया कि रावण की हार के बाद लंका का राज्य उनका होगा।

यह कहानी हमें सिखाती है कि हमें हमेशा अच्छा व्यवहार करना चाहिए, चाहे परिस्थिति कैसी भी हो। विभीषण ने रामायण में रावण से अलग होकर श्रीराम का साथ दिया, यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था। रावण की अधर्मी और अत्याचारी नीतियों के खिलाफ विभीषण ने सही मार्ग को अपनाया, यह दर्शाता है कि इंसान को सच्चाई और धर्म के पक्ष में हमेशा खड़ा होना चाहिए, चाहे परिस्थितियाँ जैसी भी हों। विभीषण का यह निर्णय यह सिखाता है कि अगर कोई रास्ता गलत है तो हमें उस रास्ते से हटकर सच्चाई और अच्छाई के पक्ष में खड़ा होना चाहिए, भले ही उसका मूल्य बहुत बड़ा क्यों न हो। उनका पक्ष बदलने का निर्णय हमें यह प्रेरणा देता है कि हमें अपने विश्वास और आदर्शों के साथ खड़े रहना चाहिए, और जब भी हमें अवसर मिले, अच्छाई के लिए संघर्ष करना चाहिए।

रामायण

मेरा नाम वेदांश शर्मा है। मैं दूसरी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे कर्नाटक शास्त्रीय संगीत सीखना, गिटार बजाना, मार्शल आर्ट, शतरंज खेलना और बागवानी करना बहुत अच्छा लगता है। मेरे पापा हमें प्रतिदिन रामायण का पाठ सुनाते हैं।

रामायण, महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखित भगवान राम के जीवन, वनवास और अधर्म पर विजय की कथा है। इसमें राम और लक्ष्मण का गहरा संबंध प्रमुख है। लक्ष्मण निःस्वार्थ भाव से राम के साथ वन जाते हैं, उनकी रक्षा और सेवा करते हैं, तथा हर कठिनाई में उनके साथ खड़े रहते हैं। वे अपनी नींद और आराम त्याग कर राम के प्रति अटूट समर्पण दिखाते हैं।

राम भी लक्ष्मण को केवल भाई नहीं, बल्कि प्रिय और विश्वासपात्र साथी मानते हैं। उनका संबंध निष्ठा, बलिदान और निःस्वार्थ प्रेम का प्रतीक है, जो परिवार और कर्तव्य के प्रति समर्पण की प्रेरणा देता है।

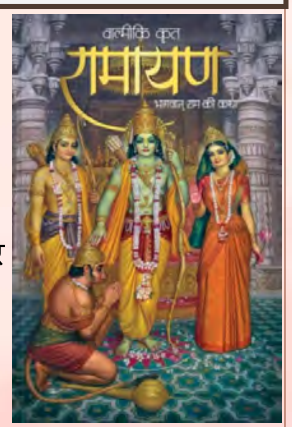

केवट की कहानी
सेवा और दया सबसे बड़ा धर्म है

सुहाना पुरिणी
चैरी हिल पाठशाला
उच्चस्तर -१

भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण वनवास के दौरान गंगा नदी के तट पर पहुँचे। उन्हें नदी पार करनी थी, लेकिन पास में कोई साधन नहीं था। वहाँ एक केवट नाव लेकर खड़ा था जो श्रीराम का परम भक्त था। जब उसने श्रीराम को देखा तो उसका हृदय भक्ति से भर उठा। केवट जानता था कि यह कोई साधारण अवसर नहीं है। उसने बड़े आदर और श्रद्धा से श्रीराम के चरणों को धोया, मानो यह उसका सबसे बड़ा सौभाग्य हो। इसके बाद वह उन्हें अपनी नाव में बैठाकर गंगा पार कराने लगा। उसकी भक्ति और समर्पण में कोई स्वार्थ नहीं था, केवल भगवान की सेवा करने की इच्छा थी।

जब वे नदी पार कर चुके तो श्रीराम ने उसे पारिश्रमिक देना चाहा, लेकिन केवट ने विनम्रता से अस्वीकार कर दिया। उसके मन में केवल एक ही इच्छा थी—भगवान उसे संसार रूपी भवसागर से पार लगाएँ। उसकी भक्ति और प्रेम को देखकर श्रीराम ने उसे मोक्ष का आशीर्वाद दिया। केवट की इस कथा से भक्ति की सर्वोच्चता, निःस्वार्थ सेवा और श्रद्धा की महानता का संदेश मिलता है। यह दिखाता है कि ईश्वर की सच्ची भक्ति केवल हृदय की पवित्रता और निःस्वार्थ प्रेम से प्राप्त होती है।

लव और कुश

मेरा नाम निर्वी शाह है। मैं मध्यमा-१ कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं वर्ष से हिंदी भाषा सीख रही हूँ। मैंने अपने माता पिता के साथ पूरी रामायण देखी है। आज मैं आप को लव और कुश के जीवन की एक घटना के बारे में बताना चाहती हूँ।

लव और कुश अपनी माता के साथ वन में रहते थे। वे यह नहीं जानते थे कि सीता माता और प्रभु राम उनके माता पिता हैं, क्योंकि सीता माता ने कभी उनको यह नहीं बताया था। उन्होंने पूरी रामायण ऋषि वाल्मीकि से सुनी थी। लव और कुश सीता माता और प्रभु राम को भगवान मानते थे। एक दिन जब लव और कुश अयोध्या गए तब उन्हें पता चला कि सीता माता तो अयोध्या में नहीं हैं। वे सोच में पड़ गए कि फिर अश्वमेघ यज्ञ कैसे हो रहा है, क्योंकि इस यज्ञ में महाराज और महारानी दोनों की उपस्थिति आवश्यक है। लव और कुश का मानना था कि रामायण अधूरी है, क्योंकि राम और सीता साथ में नहीं हैं। लव - कुश ने एक योजना बनाई और अश्वमेघ यज्ञ का अश्व चुरा लिया। अयोध्या से वापस आने पर उन्होंने अपनी माता को अश्व के बारे में कुछ नहीं बताया।

इसके बाद अश्व को वापस पाने के लिए राजा राम के तीनों अनुज शत्रुघ्न, भरत और लक्ष्मण एक के बाद एक लव और कुश से युद्ध करने गए थे। लव और कुश की धर्म के प्रति श्रद्धा और अपने आत्मविश्वास के कारण वे उन तीनों राम अनुज से युद्ध में जीत गए। उनका उद्देश्य एक ही था - भगवान राम से प्रश्न पूछना था कि उन्होंने सीता माता को क्यों छोड़ दिया। उन्होंने जो कुछ भी किया धर्म की मर्यादा में रहकर किया। उन्होंने श्री राम से भी युद्ध किया। लव और कुश का यह पराक्रम देखकर भगवान श्री राम भी बहुत प्रभावित हुए थे। फिर जब सीता माता से सच्चाई का पता चला तब लव – कुश बहुत शर्मिंदा हुए थे। तब उन्होंने श्री राम और सीता माता दोनों से माफी मांगी।

चैरी हिल हिंदी पाठशाला, मध्यमा-३

पुराणों की कहानियाँ

मैं २००७ से हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हूँ और पिछले १० वर्षों से मध्यमा-३ वर्ग के विद्यार्थियों को पढ़ा रही हूँ। विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा हिन्दी पढ़ाने में मैं बहुत गर्व का अनुभव करती हूँ और आशा करती हूँ कि ये विद्यार्थी हिन्दी के दीपक को सदा प्रज्वलित रखेंगे।

मैं २०२२ से हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हूँ और गत दो वर्षों में मैंने मध्यमा-३ के विद्यार्थियों को पढ़ाया है। हम यहाँ भारत से दूर होकर भी हिंदी भाषा के माध्यम से आगे आने वाली पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से जोड़ कर रख सकते हैं। हिंदी यू.एस.ए. के नेतृत्व में यह संभव हो पाया है और यही मेरे हिंदी पाठशाला में छोटे से योगदान के लिए प्रेरणा भी है।

हिंदू पुराण भारतीय संस्कृति और धर्म के महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं, जिनमें जीवन के नैतिक मूल्यों से जुड़ी कहानियाँ संकलित हैं। ये कहानियाँ न केवल धार्मिक आस्था को बल देती हैं, बल्कि जीवन के आदर्शों, कर्तव्यों और नैतिक शिक्षाओं का भी मार्गदर्शन करती हैं। इन कहानियों के माध्यम से धर्म, भक्ति, कर्म, और जीवन के आदर्श मूल्यों की व्याख्या की जाती है। उदाहरण के लिए, प्रह्लाद और नरसिंह अवतार, सती और शिव की कथा, समुद्र मंथन, और कृष्ण लीला जैसी कहानियाँ बच्चों में अत्यंत लोकप्रिय हैं और आध्यात्मिक प्रेरणा प्रदान करती हैं।

गणेश जी और चूहा—राही गोहिल

गणेश जी हाथी के सिर वाले एक लोकप्रिय हिंदू देवता हैं। वे बाधाओं को दूर करने और अच्छी शुरुआत करने के लिए जाने जाते हैं। गणेश जी मूषक नाम के छोटे से चूहे की सवारी करते हैं। चूहा दिखाता है कि छोटी चीज़ें भी महत्वपूर्ण हो सकती हैं। वे हमें मिलकर सभी चुनौतियों का समझदारी से सामना करना सिखाते हैं। मूषक बहुत तेज़, चंचल और लालची प्रवृत्ति वाला प्राणी है, जो अक्सर अंधकार में रहता है और बिना रुके खाने की प्रवृत्ति रखता है। यह हमारे मन के अनियंत्रित विचारों, इच्छाओं और अहंकार का प्रतीक है। गणेश जी का मूषक पर विराजमान होना दर्शाता है कि जब हम ज्ञान, विवेक और आत्मसंयम का पालन करते हैं, तो हम अपने अहंकार और इच्छाओं पर नियंत्रण पा सकते हैं।

प्रह्लाद और हिरण्यकश्यप - निकिता चावला

असुर राजा हिरण्यकश्यप का बेटा प्रह्लाद भगवान विष्णु का बहुत बड़ा भक्त था। यह बात उसके पिता को बिलकुल पसंद नहीं थी। हिरण्यकश्यप ने बहुत तपस्या करके ब्रह्माजी से वरदान माँगा जिससे उसे कोई नर या नारी, पशु या पक्षी, दिन में या रात में, धरती या आकाश में मार नहीं सकता था। राजा घमंडी हो गया और उसने प्रह्लाद को कहा कि अगर वह विष्णु की पूजा करेगा तो राजा उसे मार देगा। तब प्रह्लाद ने भगवान विष्णु की कड़ी

तपस्या की। भक्त प्रह्लाद को अपने भगवान पर अटूट निष्ठा थी और उन्हें यह विश्वास था कि उनके भगवान सहायता के लिए अवश्य आएँगे। भगवान विष्णु ने ख़ुश होकर नरसिम्हा का अवतार लिया। नरसिम्हा शेर और मनुष्य से जुड़कर बने थे, भोर के समय उसने हिरण्यकश्यप को हवा में उठाकर उसे मार दिया और अपने भक्त का उद्धार किया।

कृष्ण की बाल लीलाएँ - अनिरुद्ध गुरुप्रसाद

जब कृष्ण बच्चे थे तो वे माखन चुरा कर खाया करते थे। माँ यशोदा को जब यह बात पता चली तो उन्होंने अपने पुत्र को अपना मुँह खोलने के लिए कहा और जब भगवान कृष्ण ने अपना मुँह खोला तब माता यशोदा को उनके मुँह में पूरा का पूरा ब्राह्माण दिखा।

इंद्र देव ने अहंकार में आकर गोकुल मे बहुत बारिश कर दी। पूरा गाँव डूबने लगा। भगवान कृष्ण ने अपनी छोटी उँगली पर गोवर्धन पर्वत को उठाकर गाँव वालों के प्राणों की रक्षा की और इंद्र देवता के अहंकार को तोड़ा।

भगवान कृष्ण को मारने के लिए कंस ने पूतना राक्षसी को वेश बदलकर भेजा और भगवान कृष्ण ने पूतना राक्षसी का ही वध कर दिया।

कालिया नाग के ज़हर से यमुना नदी काली पड़ गई थी। कृष्ण अपने कुछ मित्रों के साथ यमुना नदी के किनारे गेंद से खेल रहे थे। खेलते-खेलते उनकी गेंद यमुना नदी में गिर गयी जहाँ कालिया नाग का वास था। भगवान कृष्ण और कालिया नाग के बीच घमासान युद्ध हुआ। थोड़ी देर में भगवान कृष्ण गेंद को अपने हाथ में लेकर कालिया नाग के फन के ऊपर खड़े होकर यमुना नदी के बाहर आए। कालिया नाग ने अपनी पराजय स्वीकार की और अपने परिवार को लेकर यमुना नदी से चला गया, और इस प्रकार यमुना नदी विष मुक्त हो गयी।

गणेश जी की उत्पत्ति और सीख - पार्थ सोनी

माता पार्वती ने स्नान करते समय अपनी उबटन से गणेश जी का निर्माण किया और उन्हें अपने कक्ष की रक्षा का काम सौंपा। जब भगवान शिव वहाँ आए और अंदर जाने की कोशिश की तो गणेश जी ने उन्हें अंदर जाने से रोक दिया। इस पर क्रोधित होकर भगवान शिव ने उनका सिर काट दिया। माता पार्वती के शोक को देखकर भगवान शिव ने गणेश जी को हाथी का सिर लगाकर जीवनदान दिया और उन्हें प्रथम पूजनीय बना दिया।

सीख:

१. हर समस्या का समाधान होता है।
२. अपने कर्तव्य को निष्ठा से निभाना चाहिए।
३. कठिनाइयाँ नई शुरुआत का रास्ता खोलती हैं।

गणेश जी की उत्पत्ति हमें सिखाती है कि हर मुश्किल, चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, हमें आत्मविश्वास, धैर्य और सकारात्मक सोच के साथ एक नई शुरुआत करने का अवसर देती है।

अमृत की खोज - समाइरा बिनोय

एक समय, देवता और राक्षस (असुर) दोनों ब्रह्मांड में सबसे शक्तिशाली बनना चाहते थे। वे भगवान विष्णु के पास अनंत शक्ति का रहस्य जानने गए। भगवान विष्णु ने सुझाव दिया कि देवता और राक्षस दोनों मिलकर क्षीर सागर का मंथन करें, जिससे अमृत निकलेगा, जो शक्ति और अमरता प्रदान करता है। मन्दराचल पर्वत को मथनी तथा वासुकी नाग को नेती बनाया गया। भगवान विष्णु ने विशाल कछुए का रूप धारण किया और पर्वत को अपनी पीठ पर सहारा दिया। समुद्र मंथन से कामधेनु गाय निकली जिसे ऋषियों ने रख लिया। फिर उच्चैश्रवा घोड़ा निकला जिसे असुरराज बाली ने रख लिया। उसके बाद ऐरावत हाथी निकला जिसे देवराज इन्द्र ने अपना वाहन बना लिया। ऐरावत के पश्चात् कौस्तुभमणि समुद्र से निकली और उसे विष्णु भगवान ने रख लिया। फिर कल्पवृक्ष और रम्भा नामक अप्सरा निकली। इन दोनों को देवलोक में रख लिया गया। फिर समुद्र को मथने से महालक्ष्मी जी निकलीं। महालक्ष्मी जी ने स्वयं ही भगवान विष्णु का वरण किया। उसके बाद कन्या के रूप में वारुणी प्रकट हुई जिसे असुरों ने ग्रहण किया। फिर एक के पश्चात एक चन्द्रमा, पारिजात वृक्ष तथा शंख निकले और अन्त में धन्वन्तरि वैद्य अमृत का घट लेकर प्रकट हुए। भगवन विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण कर अमृत को देवताओं के बीच बाँट दिया। देवता अमृत पीकर सबसे शक्तिशाली और अमर बन गए। राक्षस खाली हाथ रह गए। देवताओं की इस विजय से पूरे ब्रह्मांड में सुख और शांति कायम हुई। यह कहानी हमें निःस्वार्थ और करुणामय होने का प्रभावी संदेश देती है और समझाती है कि सच्ची महानता उन्हीं को मिलती है जो स्वयं से पहले दूसरों के बारे में सोचते हैं। यह कहानी हमें अपने भीतर के अमृत को ढूँढने की भी प्रेरणा देती है।

नरसिंह अवतार - अनिका अग्रवाल

हिरण्यकश्यप ने कई वर्षों तक भगवान ब्रह्मा की तपस्या की। उसे वरदान मिला कि वह न मनुष्य द्वारा मारा जाएगा, न जानवर द्वारा, न दिन में, न रात में, न अंदर, न बाहर, न जमीन पर, न समुद्र में, न आकाश में, न किसी हथियार से और न किसी के हाथों से। प्रह्लाद हिरण्यकश्यप का पुत्र था। वह भगवान विष्णु का भक्त था। हिरण्यकश्यप प्रह्लाद से क्रोधित था क्योंकि वह चाहता था कि प्रह्लाद उसकी पूजा करे क्योंकि वह अपने आप को सबसे महान मानता था। उसने प्रह्लाद को समझाने के कई प्रयास किए लेकिन प्रह्लाद नहीं माना। तब गुस्से में आकर उसने प्रह्लाद को मारने के प्रयास किए, लेकिन भगवान ने हमेशा प्रह्लाद की रक्षा की। इससे हिरण्यकश्यप पहले से भी अधिक क्रोधित हो गया और उसने चिल्लाते हुए प्रह्लाद से पूछा, "तुम्हारा भगवान कहाँ है, क्या वह इस स्तम्भ में है?" ऐसा कहते हुए हिरण्यकश्यप ने गुस्से में एक स्तम्भ को तोड़ दिया और उस स्तम्भ से विशाल अर्ध-मनुष्य, अर्ध -सिंह रुपी भगवान नरसिंह प्रकट हुए। हिरण्यकश्यप और भगवान नरसिंह के बीच कुछ समय तक संघर्ष हुआ। शाम के समय जब सूर्य अस्त हो रहा था, भगवान ने राक्षस को पकड़ा, उसे अपनी गोद में बिठाया और अपने मजबूत पंजों से उसके पेट को चीरकर उसे मार डाला। हिरण्यकश्यप को न अंदर मारा गया न बाहर, बल्कि उसके घर की चौखट पर मारा गया, न उसे किसी हथियार से, न किसी मनुष्य या जानवर के हाथों से, बल्कि नरसिंह भगवान के पंजों से मारा गया। उसे न जमीन में, न समुद्र में, न आकाश में, बल्कि भगवान की गोद में मारा गया। इस तरह भगवान नरसिंह ने हिरण्यकश्यप को भगवान ब्रह्मा के वरदान को तोड़े बिना मार डाला और अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि बुराई पर हमेशा अच्छाई की जीत होती है।

रामचरितमानस

भक्ति और कर्तव्य की प्रेरणा

शौर्य चौधरी
उच्चस्तर-१, वुडब्रिज

रामचरितमानस १६वीं शताब्दी के महान संत और कवि तुलसीदास द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध काव्य है। यह रामायण का हिंदी रूप है, जिसे पहले महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत में लिखा था। तुलसीदास ने इसे अवधी भाषा में लिखा, ताकि इसे आम लोग आसानी से समझ सकें। यह काव्य भगवान राम के जीवन पर आधारित है और हिंदू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक माना जाता है।

रामचरितमानस संरचना:

रामचरितमानस सात हिस्सों (कांडों) में बँटा हुआ है, जैसे रामायण का रूप है। इन कांडों में भगवान राम के जीवन के अलग-अलग हिस्सों का वर्णन किया गया है:

१. बाल कांड – इस कांड में राम का जन्म, उनका बचपन और सीता से विवाह का वर्णन किया गया है।

२. अयोध्या कांड – इस कांड में राम को उनके पिता राजा दशरथ द्वारा वनवास भेजे जाने की कहानी है।

३. अरण्य कांड – इसमें राम का वन में जीवन, सीता का अपहरण और राम की सीता को ढूंढने की यात्रा है।

४. किष्किंधा कांड – इस कांड में राम और हनुमान की मुलाकात, वानरों की मदद से सीता की खोज और शूर्पणखा का वध है।

५. सुंदर कांड – यह कांड हनुमान की साहसिक यात्रा और लंका में सीता का पता लगाने की कहानी है।

६. युद्ध कांड – राम और रावण के बीच युद्ध का वर्णन किया गया है, जिसमें रावण का वध और सीता की मुक्ति होती है।

७. उत्तर कांड – इसमें राम का अयोध्या लौटना, उनका राजतिलक और सीता का निष्कासन है।

मुख्य विषय: रामचरितमानस का मुख्य विषय भगवान राम के जीवन और उनके आदर्शों पर आधारित है। राम को धर्म, सत्य, और आदर्श पुरुष के रूप में दिखाया गया है। वह अच्छे और बुरे के बीच अंतर समझाते हैं, और हमें अच्छाई की राह पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। उनके जीवन से हमें भक्ति, कर्तव्य और भाईचारे जैसे अहम पाठ मिलते हैं।

आध्यात्मिक महत्व: रामचरितमानस केवल एक काव्य नहीं है, बल्कि यह एक धार्मिक ग्रंथ भी है। यह भगवान राम के प्रति भक्ति और समर्पण की महिमा को बताता है। तुलसीदास ने इस ग्रंथ को लिखकर लोगों को भगवान राम के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी।

भाषा और पहुँच: उस समय अधिकांश हिंदू धार्मिक ग्रंथ संस्कृत में होते थे, जिन्हें आम लोग समझ नहीं पाते थे। तुलसीदास ने इसे अवधी भाषा में लिखा, जो हिंदी की एक बोली है, जिससे यह ज्यादा लोगों तक पहुँच सका। यह कदम बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि इससे लोग आसानी से भगवान राम की कहानी को समझ सके और अपने जीवन में लागू कर सके।

शिक्षा: रामचरितमानस न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि यह हमें जीवन जीने के सही तरीका भी सिखाता है। भगवान राम के आदर्शों को जानकर हम अपने जीवन में अच्छाई, सत्य और धर्म को अपना सकते हैं। रामचरितमानस हमें आज भी यही संदेश देता है कि हम सब अपनी जिंदगी में राम के आदर्शों को अपनाकर अच्छा इंसान बन सकते है। मुझे रामायण पढ़ना और दूरदर्शन पर इसे देखना और रामायण का अपने जीवन में अमल करना बहुत पसंद है।

मध्यमा-१, ऑनलाइन हिन्दी पाठशाला

प्रेम, धर्म, मित्रता, बंधुत्व, सेवा भाव

भारतीय हिंदू ग्रंथों से हम ने सीखा

नमस्ते, ऑनलाइन हिन्दी पाठशाला की मध्यमा-१-E कक्षा से मैं इन्दु श्रीवास्तव अपनी युवा स्वयं सेविका ऊर्वी अखौरी, आप सब के लिए हमारी कक्षा के छात्र छात्राओं के भारतीय हिंदू ग्रंथों से सीखे कुछ विचार लेकर आये हैं। हमारा प्रयास यह है कि इस परियोजना से इनका हिन्दी शब्द ज्ञान बढ़े, लेखन बढ़िया हो और साथ ही पौराणिक हिंदू ग्रंथों से जीवन कला सीखें, उसकी प्रासंगिकता समझें और अपने जीवन से जोड़ सकें।

शबरी का प्रेम

आरूष कौशल चौथी कक्षा में पढ़ते हैं और **लेक्सिंग्टन, मैसाचुसेट्स** में रहते हैं। उनको सॉकर खेलना पसंद है। बड़े होकर वे इंजीनियर या सॉकर खिलाड़ी बनना चाहते हैं।

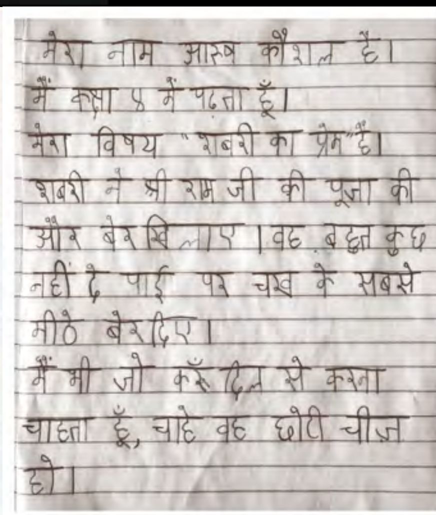

मेरा नाम आरुष कौशल है।
मैं कक्षा ४ में पढ़ता हूँ।
मेरा विषय "शबरी का प्रेम" है।
शबरी ने श्री राम जी की पूजा की और बेर खिलाए। वह बहुत कुछ नहीं दे पाई पर चख के सबसे मीठे बेर दिए।
मैं भी जो करूँ दिल से करना चाहता हूँ, चाहे वह छोटी चीज़ हो।

कृष्ण की सहायता

प्रनीता शेठ १३ वर्ष की हैं और **मेक्सिको सिटी, मेक्सिको** में रहती हैं। उन को तैरना, चित्रकारी करना और वायलिन बाजना पसंद है। बड़ी हो कर वे डॉक्टर बनना चाहती हैं।

प्रनीता शेठ — कृष्ण की मदद — 2/8/2024

कृष्ण जी जैसे सच्चे मित्र हमारे जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। चूँकि पांडव धर्म के मार्ग पर चल रहे थे, इसलिए श्री कृष्ण ने कौरवों पर जीत हासिल करने के लिए पांडवों का वनवास के दौरान और उनके हर कठिन समय में सदा ही मार्गदर्शन किया। मित्र के रूप में कृष्ण की असीम मदद का दूसरा उदाहरण सुदामा जी के साथ था। एक राजा होने के बावजूद, कृष्ण जी अपने बचपन के सखा सुदामा को कभी नहीं भूले। सुदामा जब मथुरा में किशन जी से मिले तो वो बहुत गरीब थे। कृष्ण की कृपा से सुदामा और उनके परिवार को सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो उनकी अटूट मित्रता को दिखाता है। एक सच्ची मित्रता आपको हर हाल में समर्थन, मार्गदर्शन और अपनापन प्रदान करती है। जिस प्रकार जीवन की चुनौतियों के बीच कृष्ण हमारा मार्गदर्शन करते आ रहे हैं, कृष्ण की प्रासंगिकता आज कलियुग में भी जारी है। इसीलिए हमारा धरम है कि हम उनकी सीख को याद रखें, पूजा पाठ करें और उनसे जुड़े रहें। हरे कृष्ण!

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

-Bhagavad Gita 2.46

आपको अपने कर्म (निर्धारित कर्तव्यों) का पालन करने का अधिकार है, किन्तु आप अपने कर्म (कार्यों) के फल के अधिकारी नहीं हैं। कभी भी स्वयं को अपने कर्मों के फल का कारण मत मानो और न ही अकर्म (कर्म न करना) में आसक्त रहो।

रावण का घमंड और पतन

मेरा नाम इशिका गुप्ता है। मैं ११ वर्ष की हूँ और जॉर्जटाउन, टेक्सास में रहती हूँ। मैं थोड़ी मीठी और थोड़ी तीखी हूँ। मुझे हँसना और हँसाना दोनों पसंद है। मुझे कसरत और तैराकी सीखना भी पसंद है। मैं बड़ी होकर एक नायिका बनना चाहती हूँ।

रावण एक असाधरण ज्ञानी, महान वीर और योगी था। उसने शिव भक्ति से असाधारण बल और विद्या अर्जित की थीं, लेकिन उसकी सबसे बड़ी कमजोरी थी उसका घमंड। रावण ने अपनी वीरता और ज्ञान के कारण खुद को अमर और अजेय समझ लिया। उसे लगा कि वह किसी भी देवता, मानव, या नियम से ऊपर है।

रावण के पतन का मुख्य कारण बना उसका अहंकार। अहंकार शब्द में "अहम्" का मतलब है "मैं" जिसमें कोई केवल अपने को ही बड़ा और बढ़िया समझने लगता है और दूसरें को छोटा होने का भाव दिल में रखता है।

रावण का पतन हमें यह सिखाता है कि ज्ञान, शक्ति और भक्ति होने के बावजूद अगर कोई पुरुष अपने अहंकार में अधर्म की राह पर चल पड़े, तो वह राह उसे केवल पतन की ओर ही ले जाती है। बल का सही उपयोग और धर्म का पालन जीवन में उतना ही जरूरी है जितना ज्ञान और वीरता।

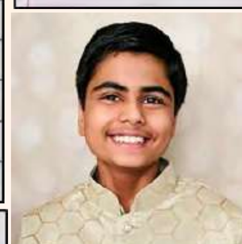

साकेत भगत
मध्यमा-१

श्री कृष्ण हमें स्वयं बताते है "इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीपते" जिसका मतलब है की ये जो हमारा शरीर रूपी रथ है यही धर्म क्षेत्र और कर्म क्षेत्र है। इस ग्रंथ में हम जीवन में कर्म और भकित का महत्व सीखते हैं।

गीता का संदेश

अहान मल्होत्रा ९ वर्ष के हैं और तीसरी कक्षा के छात्र हैं। वे अपने माता-पिता और भाई के साथ मिलबर्न, न्यू जर्सी में रहते हैं। वे पिछले चार वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. से जुड़े हुए हैं। उन्हें अपने खाली समय में पुस्तकें पढ़ना, फुटबाल, बोर्ड गेम और वीडियो गेम खेलना पसंद है।

श्रीमद् भगवद् गीता हिंदुओं का एक प्रमुख ग्रंथ है। आज से लगभग ५००० वर्ष पहले कुरुक्षेत्र, भारत में, महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन ने अपने ही परिजनों से युद्ध करने से मना कर दिया था। तब भगवान श्री कृष्ण ने उन्हें करम और धरम का उपदेश दिया था। इसी उपदेश को श्रीमद् भगवद् गीता के नाम से जाना जाता है।

भगवद् गीता ज्ञान का महासागर है। गीता में १८ खंड और ७०० छंद हैं। गीता मनुष्य को धरम की राह पर चलना, अंतर मन के ज्ञान को जानने और करम का पालन करना समझाती है। गीता को पढ़ने से मन को गहन शांति मिलती है।

भगवद् गीता हमें कई सवालों के जवाब देती है जैसे:

→ हम कौन हैं?
→ भगवान कौन है और हम भगवान को कैसे जान सकते हैं?
→ क्या मृत होने के बाद जीवन है?
→ आत्मा क्या है?
→ हम जीवन में खुश कैसे रह सकते हैं?
→ अपने क्रोध पर नियंत्रण कैसे रखें?

गीता के अनुसार:

→ आत्मा अमर है, न तो इसका जनम होता है और न ही यह मरती है।
→ हमें करम करने चाहिए और फल की चाह नहीं करनी चाहिए।
→ नरक के तीन दरवाजे होते हैं- कामना, क्रोध और लोभ; हमें इनसे बचना चाहिए।

राम और लक्ष्मण का भाईचारा

नमस्ते, मेरा नाम युवान वर्मा है। मैं **टोरेंस, कैलिफोर्निया** में रहता हूँ और तीसरी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे लेगो (lego) से नयी-नयी आकृति बनाना बहुत पसंद है। मैं बड़ा हो कर अंतरिक्ष यात्री (astronaut) बनना चाहता हूँ। लक्ष्मण की तरह मुझे भी मेरे बड़े भाई से बहुत प्यार है।

भारतीय संस्कृति में रामायण बहुत जाना पहचाना ग्रंथ है। सदियों से हम इस ग्रंथ से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को राम के गुणों जैसे वचन, धर्म और अहिंसा का पालन कर जीने का प्रयास कर रहे है। रामायण, राम और लक्ष्मण के आपसी प्रेम और बलिदान का अलौकिक उदाहरण प्रस्तुत करता है। दोनों भाइयों का साथ उनके एक दूसरे के प्रति समर्पण, सहनशीलता और प्रेम का प्रतीक है। लक्ष्मण ने हमेशा अपने बड़े भाई राम जी का साथ निभाया और उनका समर्थन किया।

विश्वामित्र जी जब राक्षसों से अपने यज्ञ-अनुष्ठान की रक्षा कराने के लिए राम जी को अपने साथ ले जा रहे थे तब लक्ष्मण जी भी बिना डरे राम जी के साथ गए। बाद में जब राम जी को वनवास मिला तब भी लक्ष्मण बिना किसी संकोच के उनके साथ १४ वर्षों के लिए वन गए। यह समय बहुत ही कठिन था। राम जी के जीवन पर जब भी संकट आया तब लक्ष्मण जी ने उनकी सुरक्षा के लिए साथ रहे और हर चुनौति का बहादुरी से सामना किया। उनका भाईचारा न केवल प्रेम और समर्पण का प्रतीक है अपितु यह भी दिखाता है कि कैसे दो भाई एक दूसरे के सुख और दुख को बराबरी से मिलकर बाँटते हैं।

लंका में हनुमान जी

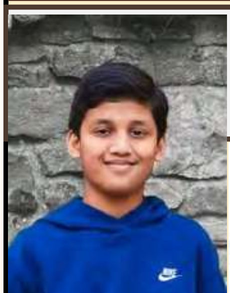

नमस्ते, मेरा नाम प्रणाल मिश्र है। मैं १२ वर्ष का हूँ। मैं **मीडिया, पेंसिल्वेनिया** राज्य में रहता हूँ। मुझे रूबिक्स क्यूब, सॉकर और शतरंज (चेस) खेलने में रुचि है।

हनुमान जी भगवान शिव के अवतार माने जाते है। महाकाव्य रामायण में हनुमान जी की वीरता की बहुत से कहानी हैं जिसमें से एक है जब लंका में सीता जी को खोजने के लिए भगवान राम ने हनुमान जी से मदद मांगी थी। हनुमान जी भगवान राम के दूत के रूप में जब लंका में रावण से मिले तो क्रोध में आकर रावण ने भाई विभीषण से हनुमान जी की पूँछ में आग लगाने का आदेश दे दिया। हनुमान जी ने आग लगी, लंबी पूँछ के साथ एक इमारत से दूसरी इमारत पर छलांग लगा दी और उनमें आग लगा दी। देखते ही देखते सोने से बनी पूरी लंका नगरी जलने लगी। हनुमान जी ने लंका में हंगामा मचा दिया और राक्षसों को परेशान कर डरा दिया। इसके बाद सागर में कूद कर अपनी पूँछ की आग बुझा कर, हनुमान जी सीता माता के पास पहुंच गये। उनकी चूड़ामणि साथ लेकर, वापस सागर लांघ कर, हनुमान जी पुनः श्री राम के पास पहुँच गये। इस तरह हनुमान जी ने कई बार अपनी सूझ से, बल से और पूजा भाव से श्री राम, सीता और रघुकुल की सेवा करी।

समुद्र मंथन और कुंभ मेले का संबंध

नमस्ते ! मेरा नाम अद्वितिया माहेश्वरी है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे नृत्य करना, चित्रकारी करना और नई-नई चीज़ें सीखना अच्छा लगता है। मैं स्टैम्फर्ड हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-२ की विद्यार्थी हूँ। गणित और अंग्रेजी मेरे सबसे पसंदीदा विषय हैं। मुझे टेनिस, स्क्वाश और सॉकर खेलना पसंद है।

हिंदू धर्म में कुंभ मेला अमृत की प्राप्ति और देव-दानव संघर्ष की याद में मनाया जाता है। जब समुद्र मंथन से अमृत कलश (अमृत का घड़ा) निकला तब देवताओं और असुरों के बीच इसे प्राप्त करने के लिए युद्ध छिड़ गया। भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर अमृत को देवताओं में बांटना शुरू किया, लेकिन उसी समय असुरों को इसका पता चल गया और वे कलश छीनने लगे। इस दौरान, देवताओं के गुरु बृहस्पति और इंद्र के पुत्र जयंत अमृत कलश को लेकर आकाश में भागे। असुर उनका पीछा करने लगे और यह युद्ध १२ दिनों तक चला, जो कि मानव कैलेंडर के अनुसार १२ वर्षों के बराबर होता है। इस युद्ध के दौरान अमृत कलश से अमृत की कुछ बूंदें धरती पर गिरीं, और इन्हीं स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता है। ये चार स्थान हैं:

१. हरिद्वार (गंगा नदी)
२. प्रयागराज (गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम)
३. उज्जैन (क्षिप्रा नदी)
४. नासिक (गोदावरी नदी)

इन्हीं स्थानों पर हर १२ वर्ष में कुंभ मेला मनाया जाता है, क्योंकि यह समुद्र मंथन के दौरान १२ दिव्य दिनों तक चले युद्ध का प्रतीक है।

कुंभ मेले का धार्मिक महत्व

१. अमृत स्नान – कुंभ मेले में श्रद्धालु यह मानते हैं कि पवित्र नदियों में स्नान करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

२. ग्रहों की विशेष स्थिति – कुंभ मेला उन्हीं वर्षों में होता है जब ग्रह और नक्षत्र उसी स्थिति में होते हैं, जैसे अमृत कलश युद्ध के दौरान थे।

३. शिव और कुंभ का संबंध – भगवान शिव को गंगाजल से अभिषेक करना और कुंभ में स्नान करना शिव कृपा पाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है। समुद्र मंथन, कुंभ और शिव का संबंध

४. भगवान शिव ने समुद्र मंथन से निकले विष (हलाहल) को पिया, जिससे पृथ्वी बची। इसी तरह, कुंभ में स्नान करने से पापों का नाश होता है।

५. शिव को नीलकंठ (नीले गले वाला) कहा गया, और कुंभ मेले में भी शिव को समर्पित विशेष पूजा-अर्चना होती है।

६. समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत के कारण कुंभ पर्व मनाया जाता है, और शिव भक्त मानते हैं कि अमृत से स्नान करने से शिव कृपा और मोक्ष प्राप्त हो सकता है।

निष्कर्ष

समुद्र मंथन की कथा न केवल अमृत की प्राप्ति की कहानी है, बल्कि यह बताती है कि संघर्ष, धैर्य और ईश्वर की भक्ति से जीवन में सफलता मिलती है। कुंभ मेला इस कथा की याद में मनाया जाता है और यह दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन बन गया है।

२०२५ का कुंभ मेला मेरे परिवार के लिए विशेष था क्योंकि मेरे माता-पिता/ नाना-नानी ने वहां जाकर पवित्र स्नान किया।

हमारे वेद

मध्यमा-२ पाठशालाएँ

वेदों से विज्ञान तक: सच्चाई का मार्गदर्शन

अन्वी दास - वेदों में बहुत सारी ऐसी बातें हैं जो बिल्कुल सच्चे विज्ञान की तरह हैं। वेदों में उल्लेख है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है और चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। वेद पहले से जानते थे कि ऊर्जा और पदार्थ एक हैं। वेदों ने बताया कि दुनिया पाँच चीजों से बनी है, पृथ्वी, पानी, आग, हवा और आकाश। वेदों में शरीर के अंदरूनी हिस्सों के बारे में बहुत सटीक जानकारी है। वे बताते हैं कि हमारा शरीर कैसे काम करता। वे कहते हैं कि साफ-सफाई रखना और अच्छा खाना खाना बहुत जरूरी है। यह हमें स्वस्थ रखता है। वेदों में गणित के ऐसे मजेदार तरीके बताए गए हैं जो आज भी काम आते हैं। इन तरीकों से हम दिमाग में ही बड़े-बड़े गणित की समस्या तेजी से हल कर सकते हैं।

अथर्व वेद

प्रिशा परमार - अथर्व वेद वेदों की सूची में स्वीकृति पाने वाला अंतिम वेद है। इस वेद में प्रयोग होने वाली भाषा भी दूसरे वेदों से नई है इस वेद की रचना अंगिरस और अथर्वण ब्राह्मणों ने की थी। अथर्व का अर्थ है “ईश्वर का ज्ञान”। इस वेद में २० काण्ड, ७३० सूक्त और ५९८७ मंत्र हैं। यह वेद बीमारियों का अध्ययन, औषधि, दीर्घायु, सूक्ष्मजीव, दोष और मंत्रों के बारे में ज्ञान देता है। इसमें योग, स्वच्छता, अच्छे विचार, भोजन, शल्य चिकित्सा अतः पानी से निरोगी जीवन जीने की विद्या प्रदान की है। यह वेद आयुर्वेद से प्रभावित है। यह वेद हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है।

सामवेद और संगीत

विराट देवरिया - सामवेद मुख्य रूप से संगीत से संबंधित वेद है। इसे "संगीत का वेद" भी कहा जाता है। सामवेद में तीन प्रमुख शाखाएँ हैं: ऋक, याजुस, और उथ्थम्भ। इसमें ऋग्वेद के मंत्रों को संगीत के साथ गाया जाता है। यह धार्मिक अनुष्ठानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें मुख्य रूप से यज्ञों में उपयोग किए जाने वाले गानों का संग्रह है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की नींव सामवेद में पड़ी है। सामवेद भारतीय संस्कृति में संगीत के महत्व को दर्शाता है।

यजुर्वेद

अर्जुन नलावड़े - यजुर्वेद हिंदू धर्म के चार वेदों में से एक है, जो मुख्य रूप से धार्मिक क्रिया और बलिदान प्रार्थनाओं पर केंद्रित है। इसे पुजारियों के लिए यज्ञ और प्रार्थना करने के लिए एक मार्गदर्शक माना जाता है। इसमें इन संस्कारों को करने के निर्देश शामिल हैं। यजुर्वेद को दो भागों में विभाजित किया गया है: शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद। शुक्ल यजुर्वेद अधिक व्यवस्थित है और यह मंत्र और ब्राह्मण के बीच अलगाव रखता है। कृष्ण यजुर्वेद में अधिक कठिन, मिश्रित जानकारी है। यह लेखन और छंद दोनों से बना है, जिसमें गद्य में भजनों की व्याख्या की गई है। कई भजन विशिष्ट देवताओं को समर्पित हैं और आशीर्वाद और सुरक्षा के लिए उनका आह्वान करते हैं। कुल मिलाकर, यजुर्वेद भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया के बीच सामंजस्य के लिए अनुष्ठानों के उचित उपयोग की व्याख्या करता है।

वेदों का आधुनिक विज्ञान से संबंध

विहान गिरधर - वेद, प्राचीन भारतीय शास्त्र, आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांतों के साथ गहरे संबंध रखते हैं। वेद और आधुनिक विज्ञान दोनों ही ज्ञान के बड़े खज़ाने हैं। वेदों में हमारे पूर्वजों ने प्रकृति, स्वास्थ्य और ब्रह्मांड के रहस्यों की बातें लिखी थीं। उनमें योग, आयुर्वेद, और खगोल शास्त्र जैसी बातें हजारों वर्ष पहले बताई गई थीं। आधुनिक विज्ञान इन बातों को नए तरीके से समझता है। उदाहरण के लिए, ऋग्वेद का नासदीय सूक्त ब्रह्मांड की उत्पत्ति का वर्णन करता है, जो बिग बैंग सिद्धांत के समान है। क्वांटम भौतिकी में सुपरपोजिशन जैसी अवधारणाएँ वेदांत के "माया" के विचार से मेल खाती हैं, जहाँ वास्तविकता को एक भ्रम के रूप में देखा जाता है। आयुर्वेद, जो अथर्ववेद से लिया गया है, समकालीन समग्र स्वास्थ्य प्रथाओं के साथ मेल खाता है। वेद और विज्ञान दोनों हमें सिखाते हैं कि कैसे जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। वेद पुरानी सोच है और विज्ञान आज का सच, लेकिन दोनों ही हमारी ज़िंदगी को आसान और ज्ञान से भरपूर बनाते हैं।

ऋग्वेद

ईशान पुरिणी - ऋग्वेद हिंदू धर्म के सबसे पुराने ग्रंथों में से एक है। यह चार वेदों में सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण वेद माना जाता है। इसमें १० मंडल और १०२८ सूक्त हैं, जिनमें देवताओं की स्तुति, प्रकृति, जीवन और ब्रह्मांड से जुड़े मंत्र लिखे गए हैं। ऋग्वेद में अग्नि, इंद्र, वरुण और अन्य देवताओं की प्रशंसा की गई है। यह वेद हमें प्राचीन भारतीय समाज, धर्म और ज्ञान के बारे में जानकारी देता है। आज भी इसके मंत्र पूजा और धार्मिक अनुष्ठानों में उपयोग किए जाते हैं। ऋग्वेद भारतीय संस्कृति और परंपराओं का एक अनमोल ग्रंथ है।

नॉर्थ ब्रुंस्विक पाठशाला

नमस्ते, मेरा नाम निरल देसाई है। मैं नॉर्थ ब्रुंस्विक हिंदी यू.एस.ए. में पिछले आठ वर्षों से पढ़ा रही हूँ। इस वर्ष का कर्मभूमि का विषय बहुत ही रोचक है। हिन्दू धर्म में कई सारे ग्रन्थ हैं जिनमें ज्ञान, भक्ति, आध्यात्मिकता और नैतिकता के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है। भगवद् गीता को सबसे लोकप्रिय हिंदू धर्मग्रंथ माना जाता है। मेरी कक्षा मध्यमा-२ के विद्यार्थियों के गीता के ज्ञान पर आधारित लेख यहाँ प्रस्तुत हैं ।

कर्म

नमस्ते, मेरा नाम त्रिशा चौरसिया है। मैं १२ वर्ष की हूँ और छठी कक्षा की छात्रा हूँ। मैं नॉर्थ ब्रुंस्विक, न्यू जर्सी में रहती हूँ और पिछले ४ वर्षों से हिंदी सीख रही हूँ। मैं वर्तमान में हिंदी यू.एस.ए. मध्यमा-२ में पढ़ती हूँ और मुझे निरल देसाई जी से शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है। अपने खाली समय में मुझे स्केचिंग और पेंटिंग करना और कराटे का अभ्यास करना पसंद है।

भगवद् गीता हिंदू धर्म की सबसे पुरानी पुस्तकों में से एक है। भगवद् गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को कर्म का महत्व समझाया है। मैंने नीचे दिए गए आलेख में कर्म के बारे में अपनी समझ देने का प्रयास किया है। भगवद् गीता में कर्म को आपके द्वारा किए जाने वाले किसी भी कार्य के रूप में व्यक्त किया गया है, जैसे कि आप क्या कहते हैं, क्या करते हैं। यदि आप किसी को चोट पहुँचाते हैं या मारते हैं, यदि आप सहायता के लिए किसी की उपेक्षा करते हैं, यदि आप किसी चीज का अनादर करते हैं, ये सभी चीजें आपके कर्म में जाती हैं। यहां तक कि आपके विचार भी, यदि आप किसी के पतन के लिए प्रार्थना कर

रहे हैं या अपने मन में उसे बुरा कह रहे हैं, वो आपके कर्म में जाता है। भगवान श्री कृष्ण ने भगवद् गीता में कर्मयोग का ज्ञान दिया है। कर्मयोग का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है कि आप जो कुछ भी करते हैं वह अपने लिए करें न कि उसके प्रतिफल के लिए। आप अपनी मेहनत और ईमानदारी से किसी भी काम को केवल सही रूप से करने का प्रयास करें, और उसके करने से कितना मिलेगा, इसका ध्यान न करें। आपको निस्वार्थ भाव से काम करना चाहिए, इसका मतलब है कि परिणाम मायने नहीं रखता। ऐसा करने से आप यह जानकर खुश और अधिक निपुण महसूस करेंगे कि आपने अपना सर्वश्रेष्ठ किया।

कर्म योग अहंकार को कम करने और मन को शुद्ध करने पर केंद्रित है। अंत में, कर्म ही वह सब कुछ है जो आप निर्णय लेते हैं या सोचते हैं। इसके लिए जरूरी है मन और विचार का शुद्ध होना।

मेहनत से काम करना

"न हि कश्यचित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्| कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः||"

नमस्ते,

मेरा नाम प्रियांश पाटले है। मैं मध्यमा - २ में पढ़ता हूँ। मैं नॉर्थ ब्रुंस्विक हिन्दी यु.एस.ए. पाठशाला में पढ़ता हूँ। मैं १२ साल का हूँ। मेरा अनुभव है कि कड़ी मेहनत और प्रयास करने पर कभी-कभी असफलता मिलती हैं लेकिन आप जो भी गलतियाँ करते हैं, आप उनसे सीखते हैं और सफल होने के लिए आगे बढ़ते हैं। मुझे तायक्वोंडो करना अच्छा लगता है। मैंने बहुत सारी ट्रोफियां अर्जित की हैं। यह मेरी समझ और मेरी कड़ी मेहनत के बिना संभव नहीं हो पाता। कोविड १९ से पहले मैं हर टूर्नामेंट में पहला स्थान जीतता था, लेकिन जब कोविड १९ फैला तो मुझे पर्याप्त व्यायाम नहीं मिल रहा था जिससे मेरा वजन बढ़ गया था। मैं घर से बाहर नहीं जा पाता था। मेरे तायक्वोंडो शुरू होने के बाद मेरे लिए स्ट्रेच और व्यायाम करना वाकई कठिन हो गया था। पूरे एक साल तक मैं टूर्नामेंट में तीसरा स्थान जीतता रहा और कभी-कभी कुछ भी नहीं जीत पाया। अपनी हर गलती के बाद मैंने उसे सुधारने के लिए हमेशा कड़ी मेहनत की। मैं रोज तायक्वोंडो जाने लगा, अब मैं बहुत सारी प्रथम स्थान की ट्रोफियां जीत रहा हूँ। इसलिए आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मेहनत करेंगे तो आपको सफलता जरूर मिलेगी।

भगवत गीता में कहा गया हैं, मेहनत का फल मीठा होता हैं। मेहनत करने से हमें सुख और संतुष्टि मिलती हैं और आत्मविश्वास भी बढ़ता हैं।

साउथ ब्रुंस्विक पाठशाला

मैं ऋचा खरे साउथ ब्रुंस्विक पाठशाला के मध्यमा-२ की अध्यापिका हूँ। मेरी सह-अध्यापिका वंदना हिरनी जी हैं। मैं पब्लिक स्कूल में कार्यरत हूँ। गत १३ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए में अध्यापन कर रही हूँ। सबसे पहले हिंदी यू.एस.ए. फ्रेंकलिन टाउनशिप में दो वर्ष स्वंयसेविका के रूप में कार्य किया और फिर साउथ ब्रन्सविक में एक वर्ष स्वयंसेविका के रूप में कार्य करना बहुत उत्साहवर्धक था। इस वर्ष बच्चों ने अपनी सरल भाषा में नैतिकता, संगीत और वेद जैसे विषयों पर लिखा है।

मैं डॉक्टर वंदना खुराना मध्यमा-२ हिन्दी शिक्षा के क्षेत्र में साउथ ब्रुंस्विक् में पिछले ११ वर्ष से एक प्रमुख भूमिका निभा रही हूँ और साथ ही विज्ञान में भी अपनी विशेषज़ता का योगदान दे रही हूँ। रटगर्स यूनिवर्सिटी और मिडलसेक्स कॉलेज में केमिस्ट्री की प्रोफेसर के रूप में भी मेरा योगदान बहुत सराहनीय है। हिन्दू अमेरिकन सोसाइटी ऑफ़ सेंट्रल न्यू जर्सी का कार्य भी बहुत सुचारु रूप से कर रही हूँ।

मित्रता के गुण

नमस्ते, मेरा नाम क्रिशिव शाह है। मैं तीसरी कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं साउथ ब्रुंस्विक् हिंदी स्कूल में जाता हूँ। मुझे बास्केटबॉल और क्रिकेट खेलना बहुत पसंद है। मुझे फुटबॉल मैच देखना भी अच्छा लगता है। तैराकी और कराटे मेरे शौक हैं।

यहाँ पर हिंदी साहित्य के आधार पर मित्रता के महत्व पर एक लेख प्रस्तुत कर रहा हूँ:

हिंदी साहित्य में मित्रता को विशेष महत्व दिया गया है। मित्रता का संबंध आत्मा से होता है और यह जीवन को खुशहाल और संतुलित बनाती है। मित्रता को इंसान के जीवन की महत्वपूर्ण पूँजी माना गया है।

प्राचीन हिंदी साहित्य, विशेष रूप से रामायण और महाभारत, मित्रता के अद्भुत उदाहरणों से भरे पड़े हैं। उदाहरण के लिए, रामायण में भगवान राम और हनुमान की मित्रता अद्वितीय है। हनुमान ने अपने मित्र राम के लिए हर कठिनाई का सामना किया और उन्हें हर संभव मदद प्रदान की। महाभारत में कृष्ण और अर्जुन की मित्रता एक और उत्कृष्ट उदाहरण है। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को युद्ध के मैदान में महत्वपूर्ण सलाह दी, जिससे अर्जुन ने धर्म का पालन करते हुए विजय प्राप्त की।

१. सच्चाई और ईमानदारी: सच्चा मित्र वही है जो हमेशा ईमानदार होता है। वह न केवल खुशियों में बल्कि दुख के समय भी साथ देता है।

२. विश्वास: मित्रता का आधार विश्वास है। सच्चे मित्र एक-दूसरे पर पूरा विश्वास करते हैं और कोई भी निर्णय लेने से पहले परामर्श करते हैं।

३. समर्पण: एक सच्चा मित्र हमेशा अपने मित्र के लिए समर्पित रहता है। वह हर मुश्किल में साथ खड़ा होता है।

४. समर्थन और प्रेरणा: मित्र का समर्थन जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। वह हमारी कमजोरियों को समझता है और हमें उन्हें सुधारने में मदद करता है।

५. संवेदनशीलता: मित्र का संवेदनशील होना आवश्यक है। वह हमारे सुख-दुःख को समझता है और हमें भावनात्मक समर्थन प्रदान करता है।

OCI
VISA
RENEWAL
TICKETING
NOTARY
PHOTO
WASHINGTON DC, NAIGRA FALL BUS TOUR
SN TRAVEL & TOUR, INC.
290 Benjamin Avenue
Iselin, NJ 08830
NJ Tel: 732-283-0566
37-11 74th St., Ste. 206
Jackson Heights, NY 11372
NY Tel: 718-639-9700
sharad@sntravel.net
www.sntravel.net
www.avisanyc.com
Travel Make Easy
ask for
Sharad Agarwal
Toll free
866-639-9700

TRANSAMERICA®
FINANCIAL ADVISORS, INC.
Products Offered
• Mutual Funds
• IRA, SEPIRA, SIMPLE IRA, ROTH IRA
• 529 College Savings Plans
• 401k Plans
• Life Insurance
• Long term Care (LTC) Insurance
• Annuities
VIJAY SINGHAL
732-668-6071
Transamerica Financial Advisors, Inc. (TFA), Member FINRA, MSRB, SIPC and federally Registered Investment Advisor, offers securities and Investment Advisory Services. World Financial Group Insurance Agency, LLC (WFGIA), offers insurance products.
WFGIA and TFA are affiliated companies. 3553320-0524

एक श्लोकी रामायण
आदौ राम तपोवनादि गमनं, हत्वा मृगं कांचनम्।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं, सुग्रीवसंभाषणम्।।
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं, लंकापुरीदाहनम्।
पश्चाद् रावण कुंभकर्ण हननम्, ऐतद्धि रामायणम्।

सामदेव: संगीत का वेद

मेरा नाम रीसा वोहरा है। मैं साउथ ब्रुंस्विक पाठशाला की मध्यमा-२ कक्षा मे पढ़ती हूँ। मैं पिछले तीन साल से हिन्दुस्तानी संगीत सीख रही हूँ। संगीत की ओर मेरी लगन ने मुझे इस विषय पर लिखने को प्रेरित किया।

संगीत हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा है। यह एक ऐसी कला है जो भावनाओं को व्यक्त करती है, मन को शांत करती है, और हमें खुशी देती है। संगीत की कोई भाषा नहीं होती, इसे हर कोई समझ सकता है। संगीत में सुर होते हैं। जैसे "सा रे गा मा पा धा नी सा" इन सात सुरों से सरगम बनती है। सुरों को सही तरीके से लगाने से ही संगीत बनता है। ताल का मतलब है लय या रिदम। ताल संगीत को एक ढांचा देता है और उसे सुंदर बनाता है। सुर और ताल दोनों मिलकर ही संगीत को पूरा करते हैं। संगीत कई प्रकार का होता है: शास्त्रीय संगीत, फिल्मी संगीत, लोक संगीत, पॉप संगीत संगीत का महत्व: यह हमें खुशी देता है, तनाव कम करता है, और हमारी संस्कृति को बढ़ावा देता है। संगीत हर जगह है, चाहे वह घर हो, स्कूल हो, या कोई समारोह। संगीत के बिना जीवन अधूरा सा लगता है।

वेद

पार्थ सक्ला, साउथ ब्रुंस्विक पाठशाला

सनातन धर्म की मान्यता के अनुसार ईश्वर अनन्त हैं और वैसे ही ईश्वरीय ज्ञान भी अनन्त है। इस धारणा के अनुसार ईश्वर के मुख से हमारे ऋषि को दिया गया ज्ञान ही वेद है। यह ज्ञान ऋषि मुनियो के द्वारा अपने शिष्यो को एसे ही बोला गया जिसे "श्रुति" भी कहते है। वेदों का दूसरा नाम "श्रुति" भी कहते हैं जिसका अर्थ है कानों से सुना गया। ऐसा माना जाता है कि ऋषियो को जब लगा की आने वाली पीढ़िया कान से सुनकर याद नही रख पाएगी तो उन्होने उन सभी श्रुतियो को चार पुस्तक में लगभग पांच हजार साल पहले लिखा। यह इतिहास के सबसे पुराने ग्रंथ पेड़ की छाल पर संस्कृत भाषा मे लिखे गए थे। इन ग्रंथो का नाम हैं ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।

ऋग्वेद इन वेदों मे सबसे पुराना और बड़ा है। इसमें सभी देवों की प्रार्थना को लिखा गया है और उनके बारे में बताया गया हैं। सामवेद गीतो का ग्रंथ हैं जो देवो को याद करने के लिए गाए जाते है। भारतीय संगीत का जन्म भी इसी वेद से हुआ है। यजुर्वेद हमे यज्ञ परंपरा सिखाता हैं। इसमे सभी अनुष्ठा की विधी बताई गई हैं। अथर्ववेद मंत्रा का ग्रंथ हैं जो हमे हमारे सामान्य जीवन की खुश बताना सिखाता हैं। इसमे प्रकृति से दवा और उपचर करना भी बताया गया हैं।

वेद भारत और हिंदू धर्म की परंपरा में ज्ञान का आधार हैं। इनको पढ़कर कोई भी अपने जीवन को सही दिशा मे ले जा सकते हैं।

अतिशय बैद, उच्चस्तर-१, एडिसन पाठशाला

योग और आयुर्वेद
भारतीय विरासत की अनमोल धरोहर

नमस्ते, मेरा नाम अतिशय बैद है। मैं छठी कक्षा में हूँ और छह साल से हिंदी स्कूल जा रहा हूँ। मैं ताइक्वांडो में सेकेंड-डिग्री ब्लैक बेल्ट हूँ, और मैं अपने ताइक्वांडो में प्रशिक्षक भी हूँ। मुझे चीज़ें बनाना और जोड़ना पसंद है। मुझे बास्केटबॉल और अमेरिकी फुटबॉल खेलना पसंद है। मुझे वास्तव में योग करना और आयुर्वेदिक चिकित्सा का उपयोग करना पसंद है और मेरा मानना है कि ये दोनों चीजें हमारे स्वास्थ्य को लाभ पहुंचाती हैं। मुझे आशा है कि मैंने जो लिखा है वह आपको पसंद आएगा।

योग और आयुर्वेद। योग और आयुर्वेद हमारे दैनिक जीवन में किस तरह से हमारी मदद करते हैं? योग भारत में सबसे लोकप्रिय है, क्योंकि इसका अर्थ है एकजुट होना, जुड़ना और जोड़ना। दूसरी ओर आयुर्वेद एक पारंपरिक हिंदू औषधि है। ये दोनों चीजें हमारे स्वास्थ्य को हर दिन मजबूत, साहसी और बेहतर बनाने में मदद करती हैं। योग हमें अधिक लचीला बनाता है और हमारी ताकत और संतुलन में सुधार करता है। आयुर्वेद आपके बालों, त्वचा और पूरे शरीर के स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है क्योंकि यह केवल प्राकृतिक जड़ी-बूटियों से बना है। २१ जून २०२३ को महाद्वीपों में सबसे अधिक योग पाठों का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड "गुजरात" भारत में आयोजित किया गया था, १४७,९५२ से अधिक प्रतिभागियों के साथ। यह दर्शाता है कि कितने लोग मानते हैं कि योग स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, खासकर भारत में। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद भारतीय इतिहास में बहुत लंबे समय से है, जो श्री राम युग से शुरू होता है। लक्ष्मण (श्री राम के भाई) को एक तीर लगा था, लेकिन हनुमान (वानर राजा) लक्ष्मण के लिए कुछ आयुर्वेद औषधि लेकर आए जिससे वे बहुत जल्दी ठीक हो गए। इससे यह प्रमाणित होता है कि आयुर्वेद का उपयोग अतीत में लक्ष्मण को ठीक करने के लिए किया गया था और वर्तमान में हमारे स्वास्थ्य की मदद के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। निष्कर्ष रूप में, आयुर्वेद और योग हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करने में सहायता करते हैं और भारतीय इतिहास और विरासत में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं।

● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ●

संध्या अग्निहोत्री

मध्यमा-१

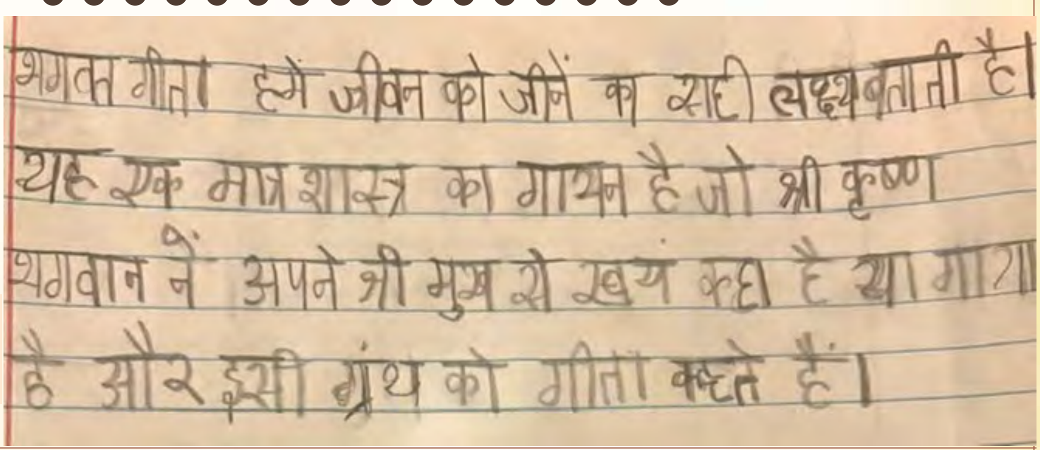

भगवत गीता हमें जीवन को जीने का सही लक्ष्य बताती है। यह एक मात्र शास्त्र का गायन है जो श्री कृष्ण भगवान ने अपने श्री मुख से स्वयं कहा है या गाया है और इसी ग्रंथ को गीता कहते हैं।

गीता के श्लोक और हरे कृष्ण महामंत्र का सार

मध्यमा-१, ऑनलाइन हिंदी पाठशाला, शिक्षिकाएँ : रचिता पांडेय, शीतल पाठक

अनिका श्री पित्तमपल्ली ९ वर्ष की हैं और डॉलस टेक्सस में तीसरी कक्षा में पढ़ती हैं। अनिका को संगीत पसंद है और वह भारतीय शास्त्रीय संगीत सीखने की दिशा में काम कर रही है। एक बार गाना सुनने के बाद उसे पहचान लेना उसके लिए बहुत ही आसान है। वह एक मज़ेदार लड़की है और अपने माता-पिता के साथ मज़ाक करना पसंद करती है। लेख में विचार और सोच सब अनिका की है, क्योंकि वह हर हफ़्ते कृष्ण की कक्षाएँ लेती है, जहाँ वह भगवद् गीता और उसमें श्लोकों के बारे में सीखती है। वह कृष्ण और कृष्ण चेतना के बारे में सीखती है। वह कक्षा में बढ़िया कीर्तन और कुछ बढ़िया कहानियाँ भी सीखती है। उसने लेख का प्रारूप ख़ुद किया था और उनकी माँ गीता जी ने उसे में थोड़ा सुधार और समझने में मदद की है।

श्री भगवद् गीता भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को कुरुक्षेत्र के युद्ध मैदान में सुनाई गई थी। इसमें ७०० श्लोक हैं। सबसे महत्वपूर्ण श्लोकों में से एक है -

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्

कुरुक्षेत्र के युद्ध क्षेत्र में अर्जुन उदास और डरा हुआ था और उसने कृष्ण से पूछा "मैं अपने गुरु, चाचा, और सभी प्रिय लोगों से कैसे लड़ सकता हूँ।"

इस श्लोक का अर्थ है "जब भी लोग दयालु और अच्छे होने को भूल जाते हैं, और बुरी चीजें करने लगते हैं, मैं [कृष्ण] सब कुछ फिर से बेहतर बनाने के लिए आता हूँ।"

एक और बहुत महत्वपूर्ण मंत्र जिसे हमेशा इस भौतिक दुनिया में जपना चाहिए वह है;

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे"

महामंत्र का अर्थ नीचे दिया गया है;

मेरे प्यारे भगवान, और भगवान की विशेष ऊर्जा, कृपया मुझे आपकी सेवा में मदद करने दें। मैं यहाँ पृथ्वी पर काम करके थक गया हूँ। कृपया मुझे आपकी सेवा में मदद करने दें।

- "हरा" का मतलब भगवान की विशेष ऊर्जा, "श्रीमती राधारानी" होता है।
- "कृष्ण" और "राम" भगवान के नाम हैं।
- "कृष्ण" और "राम" का मतलब सबसे बड़ा आनंद होता है, और "हरा" भगवान की विशेष खुश ऊर्जा होती है, जो भगवान को पुकारने पर "हरे" (हाह-रे) में बदल जाती है।

हरे कृष्ण महामंत्र का दिन में कम से कम दस बार जप करना आपके लिए बहुत अच्छा होता है।

क्यों? मैं आपको बताती हूँ। भौतिक संसार और आध्यात्मिक संसार में कुछ अंतर है। भौतिक दुनिया वह है जहाँ आप मरते हैं और आप एक मानव के रूप में पुनर्जन्म लेते हैं या आपकी आत्मा पृथ्वी पर एक अन्य जीव के रूप में वापस आती है। भौतिक संसार का उदाहरण पृथ्वी है, जहाँ आपकी आत्मा एक अलग जीव

के रूप में पुनर्जन्म लेती है।
भौतिक संसार में पुनर्जन्म लेने वाले जीवों की संख्या नीचे दी गई है;

१. ९००,००० - जलीय जीव
२. २,०००००० - पौधे
३. १,१००,००० - कीट [इस समूह में छिपकली जैसे सरीसृप भी शामिल हैं]
४. १,०००,००० - पक्षी
५. ३,०००,००० - जानवर [जमीन पर रहने वाले जीव जैसे हाथी]
६. ४००,००० - मनुष्य

आध्यात्मिक संसार में आप और कृष्ण एक ही उम्र के होते हैं (आप अपनी पसंद की उम्र चुन सकते हैं)। अगर आप आध्यात्मिक संसार में नहीं पहुँचते हैं तो आपकी आत्मा एक अन्य प्राणी के रूप में एक अलग शरीर ले लेगी। उदाहरण के लिए अगर मैं आध्यात्मिक दुनिया में नहीं जाता हूँ, तो मेरी आत्मा एक भेड़िए के शरीर में निवास कर सकती है। हरे कृष्ण महामंत्र का हर दिन जप करना आपको आध्यात्मिक संसार तक पहुँचने में मदद करता है और आपकी आत्मा को एक अन्य शरीर लेने से रोकता है।

दादा जी की घड़ी: मेरे जीवन का अमूल्य पाठ

आकाश सेनगुप्ता

नमस्ते, मेरा नाम आकाश सेनगुप्ता है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे बास्केटबॉल खेलना बहुत अच्छा लगता है। इसके अतिरिक्त मुझे तैराकी और रोबोटिक्स का भी बहुत शौक है। मुझे गणित और विज्ञान बहुत पसंद हैं। मैं आशा करता हूँ कि मेरा लेख आपको पसंद आएगा, धन्यवाद!

पिछले साल मैं गर्मी की छुट्टियों में भारत गया और मैंने अपना बारहवाँ जन्मदिन भारत में मनाया। मेरे माता-पिताजी ने मेरे जन्मदिन के लिए एक जलसे का आयोजन किया। हमने अपने दोस्तों और परिवार को आमंत्रित किया। उन्होनें मुझे किताबें, चॉकलेट, खिलौने, कपड़े और गिफ्ट कार्ड जैसे कई उपहार दिए। लेकिन एक खास उपहार मेरे दादाजी ने दिया, जो एक मुलायम और मखमली बक्से में था। जैसे ही मैंने उसे खोला, मैंने एक सुनहरी जेब घड़ी देखी। मेरे दादाजी ने कहा "ये सोने से बनी है"। घड़ी के साथ दादाजी के हाथ से लिखा हुआ एक पत्र भी था। "यह घड़ी अब तुम्हारी है। समय एक बार खो गया तो उसे वापस नहीं लाया जा सकता। लेकिन तुम यह चुन सकते हो कि इसे कैसे उपयोग करना है। इसे समझदारी से उपयोग करो।" मेरे दादाजी ने बताया कि यह घड़ी उन्हें मेरे परदादा से मिली थी, और अब उन्होंने इसे मुझे दे दिया। अगले कुछ दिनों तक मैं हर दिन कई बार जेब घड़ी को देखता रहा। मुझे उससे एक विशेष लगाव महसूस हुआ, इसलिए जब मैं अमेरिका लौटा तो मैं इसे अपने साथ ले आया। मेरे दादा जी ने मुझे हमेशा आपने समय का अधिकतम उपयोग करने के लिए कहा था, लेकिन इस अनोखे उपहार ने मुझे एहसास कराया कि समय बहुत मूल्यवान है। वह घड़ी और उसका संदेश मेरे लिए एक खजाना बन गया है जिसे मैं हमेशा अपने साथ रखूँगा।

चैरी हिल हिंदी पाठशाला, मध्यमा-३

भारतीय धार्मिक और आध्यात्मिक कथाओं की अद्भुत झलक

वाल्मीकि रामायण

कार्तिक राय

वाल्मीकि की पृष्ठभूमि

'वाल्मीकि रामायण' वाल्मीकि नामक ऋषि द्वारा लिखी गई है। वाल्मीकि को 'आदि कवि' कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'पहला कवि'। वाल्मीकि का एक खुशहाल शादीशुदा परिवार था, लेकिन बारह साल के लंबे सूखे ने उन्हें चोर बना दिया। वाल्मीकि लोगों को लूटता और मारता था। उन्होंने कहा कि उसके पास पत्थरों से भरा एक छोटा बर्तन था।

प्रत्येक पत्थर एक हत्या का प्रतिनिधित्व करता था। एक दिन जब नारद जंगल से गुजर रहे थे, वाल्मीकि ने उनका सामना किया और उन्हें मारने की धमकी दी। नारद ऋषि ने कहा कि वह उनके हाथों मरने के लिए तैयार हैं, बशर्ते कि वह पहले उनके प्रश्नों का उत्तर दें। वाल्मीकि इस पर सहमत हुए और नारद ने पहले पूछा "आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?" वाल्मीकि ने कहा कि वह अपने परिवार के लिए ऐसा कर रहे हैं। नारद ने वाल्मीकि से कहा कि वह अपने परिवार के पास जाए और पूछे कि क्या वे उसके पापों को स्वीकार करेंगे। इसलिए वाल्मीकि ने वैसा ही किया जैसा उन्हें बताया गया था, लेकिन जब उन्होंने अपने परिवार से पूछा तो उन्होंने उसके पापों को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। वाल्मीकि को एहसास हुआ कि उन्होंने क्या किया है, वे भगवान नारद के पास गए और पूछा कि वे पश्चाताप कैसे कर सकते हैं। भगवान नारद ने उन्हें 'राम'कहने के लिए एक मुहावरा दिया। वाल्मीकि इतने बड़े पापी थे कि वे पवित्र नाम 'राम' का उच्चारण करने में सक्षम नहीं थे। इसलिए ऋषि नारद ने उन्हें एक और मुहावरा दिया जिसका अर्थ है 'मरा'। उन्हें एक नया नाम भी दिया गया, 'वाल्मीकि' जिसका संस्कृत में अर्थ है चींटी का टीला।

रामायण लिखने की उनकी प्रेरणा कहाँ से आई

वाल्मीकि ऋषि बन गए, नारद उनसे मिलने आए। वाल्मीकि ने भगवान नारद से पूछा कि क्या दुनिया में एक भी ऐसा व्यक्ति है जिसके पास सबसे शानदार गुण हैं। वाल्मीकि को बताया गया कि हालांकि सभी अच्छे गुणों का होना असंभव है, नारद ने उन्हें भगवान राम के बारे में बताया। एक बार स्नान करने के लिए नदी पर जाते समय ऋषि वाल्मीकि ने एक सारस जोड़े को प्रेमालाप करते देखा। वे पक्षियों को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। अचानक एक शिकारी द्वारा फेंके गए तीर ने नर पक्षी को मार डाला। अपने साथी की मृत्यु के सदमे से मादा पक्षी भी मौके पर ही मर गई। इस घटना ने उसके दिल को झकझोर कर रख दिया। क्रोधित होकर उसने चारों ओर देखा कि यह घोर पाप किसने किया। उसने एक शिकारी को धनुष-बाण के साथ देखा। वाल्मीकि ने शिकारी को श्राप दिया और उसका श्राप रामायण का पहला श्लोक बन गया।

“मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥”

अर्थ: “तुम्हें अनंत काल तक कोई आराम नहीं मिलेगा। क्योंकि तुमने प्रेम में और बिना किसी संदेह के एक पक्षी को मार डाला।”

जब ऋषि वाल्मीकि निराश होकर अपने आश्रम लौटे तो भगवान ब्रह्मा ने उनसे मुलाकात की और उन्हें बताया कि उन्होंने ही उन्हें नदी के किनारे ये वाक्य बोलने के लिए प्रेरित किया था और उन्हें भगवान राम के जीवन की कहानी काव्यात्मक रूप में बताने की क्षमता का आशीर्वाद दिया था। उन्होंने वाल्मीकि को वरदान दिया कि वे भगवान राम के पूरे जीवन को जान लेंगे और वे जो कुछ भी लिखेंगे वह सटीक होगा। जब भगवान ब्रह्मा गायब हो गए तो ऋषि वाल्मीकि ने ध्यान करना शुरू कर दिया और भगवान राम और उनके माता-पिता के पूरे जीवन को देखा। उन्होंने भगवान राम का भविष्य भी देखा। जब तक उन्होंने रामायण लिखना समाप्त किया, देवी सीता अयोध्या से निर्वासित होकर उनके आश्रम में आ गईं। उन्होंने बाद में अपने बेटों लव और कुश को रामायण पढ़ाई।

समुद्र मंथन - आदित्री गोयल

समुद्र मंथन क्या है? एक समय, देवता और राक्षस दोनों ब्रह्मांड में सबसे शक्तिशाली बनना चाहते थे। वे भगवान विष्णु के पास अनंत शक्ति का रहस्य जानने गए। भगवान विष्णु ने सुझाव दिया कि देवता और राक्षस दोनों मिलकर क्षीरसागर का मंथन करें, जिससे अमृत निकलेगा जो शक्ति और अमरता प्रदान करता है। इस मंथन प्रक्रिया को "समुद्र मंथन" कहा गया।

समुद्र मंथन में किसका प्रयोग किया गया था? सागर का मंथन करने के लिए एक मथानी और एक मजबूत रस्सी की आवश्यकता थी। मथानी के लिए विशाल मंदराचल पर्वत को चुना गया, और शक्तिशाली साँप वासुकी को रस्सी की तरह प्रयोग किया गया।

समुद्र मंथन से कितने रत्न निकले? - समुद्र मंथन से १४ रत्न निकले।

समुद्र मंथन से कौन से रत्न निकले? कालकूट, ऐरावत, कामधेनु, उच्चैःश्रवा, कौस्तुभ एवं पद्मराग मणि, कल्पवृक्ष, अप्सरा रम्भा, महालक्ष्मी, वारुणी, मदिरा, चन्द्रमा, शारंग धनुष, पांचजन्य शंख, धन्वन्तरि, अमृत

समुद्र मंथन से निकले रत्नों का क्या हुआ?

१. विष - समुद्र मंथन के दौरान सर्वप्रथम कालकूट विष निकला, तब इसे भगवान शिव ने ग्रहण कर लिया। इस विष के कारण महादेव का कंठ नीला पड़ गया जिस कारण उन्हें नीलकंठ नाम मिला।

२. कामधेनु - समुद्र मंथन के दौरान दूसरी बार एक दिव्य गाय उत्पन्न हुई जिसे कामधेनु के नाम से जाना जाता है। यह गाय अग्निहोत्र (यज्ञ) की सामग्री उत्पन्न करने वाली थी, इसलिए ब्रह्मऋषियों ने इसे ग्रहण किया।

३. उच्चैःश्रवा - समुद्र मंथन के दौरान उत्पन्न हुए इस सफेद रंग के अश्व को घोड़ों का राजा कहा जाता है। इसे असुरों के राजा बलि ने अपने पास रख लिया।

५. ऐरावत - यह एक सफेद रंग का हाथी था जिसके चार दाँत थे। इसे देवराज इंद्र ने अपना वाहन बनाया।

५. कौस्तुभ मणि - समुद्र मंथन में पाँचवे क्रम पर कौस्तुभ मणि उत्पन्न हुई, जिसे भगवान विष्णु ने अपने हृदय पर धारण कर लिया।

६. कल्पवृक्ष - कल्पवृक्ष इच्छापूर्ति वाला एक दिव्य वृक्ष है। इसे देवताओं ने स्वर्ग में स्थापित कर दिया।

७. रंभा - समुद्र मंथन के दौरान रंभा नाम की एक अप्सरा उत्पन्न हुई जो ब्रह्मांड में सबसे सुंदर नारी मानी गई। ये भी देवताओं के पास चली गई।

८. देवी लक्ष्मी - धन की देवी लक्ष्मी भी क्षीर सागर से प्रकट हुईं। असुर, देवता, ऋषि आदि सभी चाहते थे कि लक्ष्मी उन्हें मिल जाएं, लेकिन माता लक्ष्मी ने भगवान विष्णु का वरण किया।

९. मदिरा - मदिरा की उत्पत्ति समुद्र मंथन से ही हुई थी। भगवान की अनुमति से दैत्यों ने इसे ग्रहण किया।

१०. चंद्रमा - पौराणिक मान्यताओं के अनुसार चंद्रमा की उत्पत्ति भी समुद्र मंथन से ही हुई है। चंद्रमा को भगवान शिव ने अपने मस्तक पर धारण कर लिया।

११. पारिजात पुष्प - समुद्र मंथन से पारिजात वृक्ष निकला। इस वृक्ष की खासियत यह थी कि इसे छूने से थकान मिट जाती थी। यह भी देवताओं के हिस्से में गया।

१२. पांचजन्य शंख - समुद्र मंथन के दौरान उत्पन्न हुआ पांचजन्य शंख विजय का प्रतीक माना जाता है। यह शंख श्री विष्णु को मिला।

१३. धंवंतरि - समुद्र मंथन से सबसे अंत में भगवान धंवंतरि अपने हाथों में अमृत कलश लेकर निकले। इन्हें भगवान विष्णु के अंशावतार और आयुर्वेद का जनक माना गया है।

१४. अमृत - समुद्र मंथन से प्राप्त हुआ अंतिम रत्न 'अमृत' था। इसके निकलते ही देव-दानवों में इसे ग्रहण करने के लिए झगड़ा होने लगा। अंत में भगवान विष्णु ने देवताओं को अमृत पिलाकर अमर कर दिया।

देवताओं और असुरों में कितने दिनों तक युद्ध चलता रहा? अमृत कुंभ को पाने के लिए देवताओं और असुरों में १२ दिनों तक लड़ाई चली।

कुंभ और समुद्र मंथन का क्या संबंध है?

लड़ाई के दौरान अमृत कुंभ से चार बूँदें चार अलग-अलग जगहों पर गिरीं। वे जगह आज के प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक हैं। इन चार जगहों पर हर १२ साल बाद बारी-बारी से कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है।

समुद्र मंथन की कहानी से आप क्या सीखते हैं?

यह कहानी सिखाती है कि हमें निःस्वार्थ होना चाहिए और दूसरों के लिए करुणा रखनी चाहिए।

मोक्ष का अर्थ

अन्विषा आनंद

मेरा नाम अन्विषा आनंद है, और मैं तेरह वर्ष की हूँ। अन्विषा का मतलब है खोज करना। मेरे नाम के अनुरूप ही मेरा शौक है विभिन्न किताबों में ज्ञान की खोज करना। मोक्ष प्राप्ति के लिए मैं रोज विहंगम योग का पूजा ध्यान करती हूँ और साप्ताहिक बाल सत्संग में भाग लेती हूँ।

हम अपने जीवन में बहुत कुछ पाना चाहते हैं। जैसा हम चाहते हैं वैसा जीवन में हो जाए वह जरूरी नहीं है। इसका अर्थ है कि हमारे जीवन में बंधन है। इन्हीं बंधनों से मुक्त होने का नाम मोक्ष है। आत्मा को जन्म और मृत्यु के चक्र से छुड़ाकर परमात्मा के मुक्ति धाम में पहुंचाना मोक्ष है।

मोक्ष को कैसे प्राप्त करें? मुण्डकोपनिषद के श्लोक ३.१.८ में बताया गया है,

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मण वा।
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः॥

"ईश्वर की प्राप्ति से मोक्ष प्राप्त होता है। लेकिन ईश्वर आँखों से नहीं देखा जा सकता, वाणी से नहीं पाया जा सकता, तरह-तरह के कर्मकांड से भी वह नहीं प्राप्त होता है। जब एक योगी ध्यान में बैठता है तब ध्यान के अनुभव में ईश्वर के प्रकाश स्वरूप को प्राप्त किया जाता है।"

अत: मोक्ष तो मानव शरीर में जीते जी ध्यान के द्वारा पाया जाता है। मरने के बाद कर्मों के अनुरूप मात्र पुनर्जन्म होता है। विहंगम योग वही ध्यान की विधि है जिसमें मन नियन्त्रण से लेकर मोक्ष प्राप्ति तक की पाँच भूमि की ध्यान साधना बताई जाती है। इसी ध्यान में सारा ज्ञान परमात्मा से आत्मा को प्राप्त हो जाता है।

कृष्ण की कहानियाँ

अन्विताश्री भामिडीपट्टी

नमस्ते, मेरा नाम अन्विताश्री भामीडीपाटी है। मैं एडिसन न्यू जर्सी में मेरी माताजी, पिताजी, और दीदी के साथ रहती हूँ। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे भरतनाट्यम करना, तैरना और बेकिंग करना पसंद है।

भगवान, एक ऐसा नाम जो असीम प्रेम, चंचलता और ढेर सारी दोस्ती का प्रतीक है। भगवत गीता में उनकी शिक्षाएँ विश्व प्रसिद्ध हैं, लेकिन चमत्कारों से भरा उनका बचपन सबका दिल जीत लेता है और हमारी कल्पना को जगा देता है। परियों की कहानियों से दूर, यहाँ हमारे प्यारे बाल गोपाल कि कई चमत्कार और शरारतों की कहानियाँ हैं।

मक्खन चोर की कहानी:

बाल गोपाल एक शरारती बालक थे जो अपने माखन प्रेम के लिए जाने जाते हैं। कृष्ण अपने गोप मित्रों के साथ वृन्दावन के घरों में घुस जाते थे, उनके छोटे-छोटे हाथ स्वादिष्ट मक्खन की ओर बढ़ते थे। लेकिन कृष्ण और उनके मित्र कोई साधारण चोर नहीं थे। भले ही वे चोर थे, उन्होंने कई गोपिकाओं का दिल जीत लिया। कई बार जब गोपिकाएँ कृष्ण के माखन चुराने की शिकायत करती थीं तो यशोदा मैया ने कभी इस पर विश्वास नहीं किया। एक बार यशोदा मैया ने कृष्ण को रंगे हाथों पकड़ लिया और अपने मातृ प्रेम के कारण उसने सजा के रूप में कृष्ण को रस्सी से पीसने वाले पत्थर से बाँधने का फैसला किया। कृष्ण हालांकि एक बालक थे और पीसने वाले पत्थर के साथ चलने में सक्षम थे और उन्होंने दो पेड़ों को भी उखाड़ दिया। यह हमारे बाल गोपाल की ताकत का स्पष्ट उदाहरण है और यह उनके बचपन के कई चमत्कारों में से एक है।

कृष्ण की मिट्टी खाने की कहानी:

जब कृष्ण छोटे थे तो यशोदा मैया ने उन्हें इस डर से कभी बाहर नहीं जाने दिया कि कहीं उनके साथ कुछ बुरा न हो जाए या कोई राक्षस उन्हें नुकसान न पहुंचा दे। कृष्ण चार साल की उम्र तक इसी नियम के साथ रहे। एक दिन कृष्ण बाहर गए। उनका भोला-भाला विचार था कि मिट्टी धरती माता का प्रसाद है और हमें इसे खाना चाहिए। यशोदा मैया ने उन्हें मिट्टी खाते हुए पकड़ लिया। जब यशोदा मैया ने कृष्ण को रंगे हाथों पकड़ा तो उन्होंने उनसे अपना मुँह खोलने को कहा क्योंकि उन्हें पता था कि वे मिट्टी खा रहे हैं। यशोदा मैया ने सोचा कि वे मिट्टी से भरा मुँह देखेंगी लेकिन इसके बजाय उन्होंने पूरा ब्रह्मांड, आकाशगंगा और ग्रह देखे। हालाँकि कृष्ण को एक छोटे लड़के के रूप में दर्शाया गया है, लेकिन ऐसे चमत्कार हमें याद दिलाते हैं कि वे कोई और नहीं बल्कि भगवान विष्णु हैं।

कृष्ण गोवर्धन पर्वत उठाने की कहानी:

जब वृन्दावन के लोग इन्द्रदेव की जगह गोवर्धन पर्वत की पूजा कर रहे थे तो इंद्र देव के अहंकार को ठेस पहुँची। भगवान इंद्र ने गाँववालों को उनकी पूजा न करने के लिए दंड देने का निर्णय लिया कि वे वृन्दावन में विनाशकारी तूफान और बाढ़ लाएँगे। बाल गोपाल पीछे नहीं हटे, बल्कि उन्होंने पूरे गाँव की रक्षा करने का फैसला किया। उन्होंने अपनी छोटी उंगली से गोवर्धन पर्वत को उठा लिया जिससे तूफान के दौरान सभी गाँववाले और उनके पशुओं के लिए पूरे एक सप्ताह के लिए एक सुरक्षित स्थान बन गया। कृष्ण की शक्ति का यह प्रदर्शन हमें हर एक प्राणी के प्रति उनके प्रेम को दर्शाता है।

कृष्ण कालिया नाग को पराजित करने की कहानी:

एक बार जहरीले साँप कालिया ने यमुना नदी में जहर फैला दिया। जब कृष्ण ने कालिया के साथ भयंकर युद्ध किया तब उन्होंने कालिया को वश में किया। कृष्ण ने बहादुरी और दिव्यता का प्रदर्शन करते हुए कुशलतापूर्वक शक्तिशाली कालिया के सिरपर नृत्य किया था। यह इस बात का एक आदर्श उदाहरण है कि कैसे कृष्ण ने नकारात्मकता को खत्म करने और संतुलन स्थापित करने के लिए अपनी दिव्य शक्ति का उपयोग किया।

कंस और कृष्ण की कहानी:

कृष्ण का बचपन केवल चंचल शरारतों के बारे में नहीं था; यह बुराई के विरुद्ध एक निरंतर लड़ाई थी। कंस ने कृष्ण को खत्म करने के लिए राक्षसों को भेजा। विशाल पूतना जिसने जहर और धोखे से कृष्ण का दम घोंटने का प्रयास किया था और अन्य डरावने राक्षसों तक कृष्ण ने सरलता से उन सभी को हराया, निर्दोषों की रक्षा

की। कृष्ण ने अपने मामा कंस का भी वध किया। कंस बहुत दुष्ट था। कंस ने कृष्ण के जन्मदाता देवकी और वासुदेव जो कंस की बहन भी थी को बहुत कष्ट पहुँचाया। कृष्ण का बचपन अद्भुत शरारतों, भक्ति और दिव्य चमत्कारों से भरा है। उनकी कहानियाँ माखन चोरी से लेकर राक्षसों से युद्ध, गोपिका के साथ रास लीला से लेकर भगवत गीता तक अंतहीन प्रेम से भरी हैं। बाल गोपाल के बचपन की ये अनेक दिव्य लीलाएँ हमें याद दिलाती हैं कि वे भले ही मनमोहक हों, हमारी रक्षा तो वे ही करते हैं।

गणेश जी और उनका मूषक

शिविन जिंदल

मेरा नाम शिविन जिंदल है। मैं मध्यमा -३ का छात्र हूँ। मुझे फुटबॉल खेलना, विडियो गेम खेलना पसंद है। मैं अपने स्कूल का अध्यक्ष हूँ, मेरा पसंदीदा विषय अंग्रेजी है और अपने खाली समय में मुझे पुस्तकें पढ़ना पसंद है।

मैं गणेश जी और उनके चूहा, जिसे संस्कृत में 'मूषक' कहते है, उनकी दो दिलचस्प कहानियाँ साझा करने जा रहा हूँ। 'मत्स्य पुराण' की इन कहानियों के माध्यम से आपको पता चलेगा कि गणेश जी और चूहा कैसे मित्र बने, चूहा उनकी सवारी कैसे बना और इस कहानी से हम क्या सीखते हैं।

कहानी १:

हिंदू पौराणिक कथाओं में, क्रौंच के भगवान गणेश के वाहन मूषक में बदलने की कहानी, विनम्रता और क्षमा के बारे में सबक सिखाती है।

दैवीय सभा और क्रौंच का अभिशाप: स्वर्ग में एक सभा के दौरान एक कुशल संगीतकार क्रौंच का पैर गलती से ऋषि वामदेव के पैर पर पड़ गया। क्रोध में आकर ऋषि ने क्रौंच को चूहा बनने का श्राप दे दिया और जंगल में लक्ष्यहीन रूप से भटकने की सजा दी।

विशालकाय चूहे की भगदड़: एक विशाल चूहे में परिवर्तित होकर क्रौंच ने विनाश किया, फसलों, जानवरों और लोगों को नुकसान पहुँचाया। ब्रह्मांड उसके प्रकोप से पीड़ित था और लोगों ने उनकी दुर्दशा को समाप्त करने के लिए एक उद्धारकर्ता के लिए प्रार्थना की।

भगवान गणेश का हस्तक्षेप: ऋषि पराशर के आश्रम में मौजूद भगवान गणेश ने विशाल चूहे को रोकने का फैसला किया। भीषण युद्ध के बाद गणेश जी ने चूहे को वश में कर लिया। विनम्र होकर चूहे ने गणेश जी से क्षमा मांगी।

मूषक का परिवर्तन: जैसे ही गणेश ने विशाल चूहे की सवारी करने का प्रयास किया, मूषक को वजन सहन करने के लिए संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने गणेश जी से अपना आकार छोटा करने का अनुरोध करते हुए दया की गुहार लगाई। दयालु गणेश सहमत हुए और एक छोटा रूप धारण किया। कृतज्ञ मूषक ने गणेश जी के वाहन के रूप में सेवा करने का अनुरोध किया। गणेश ने उनकी इच्छा पूरी की और मूषक को अपना शाश्वत साथी और वाहन बना लिया।

यह कहानी अहंकार के शमन और दैवीय दया की शक्ति का प्रतीक है।

कहानी २:

मुशिकासुर की कथा: एक बार चूहे के रूप वाले मुशिकासुर नाम के राक्षस ने ब्रह्मांड में तबाही मचा दी थी। देवताओं ने उसे हराने के लिए भगवान गणेश से मदद मांगी। गणेश जी ने मुशिकासुर के साथ युद्ध किया और अंततः उसे हरा दिया। सजा से बचने के लिए मुशिकासुर ने गणेश के वाहन के रूप में सेवा करने की पेशकश की। गणेश ने स्वीकार कर लिया और तभी से मुशिकासुर गणेश का

वाहन बन गया।

इन दोनों कहानियों से हम बहुत कुछ सीखते हैं

१. बाधाओं पर काबू पाना: चूहे का छोटा आकार, तंग जगहों से गुजरने में सक्षम, गणेश की बाधाओं को दूर करने और कौशल और रचनात्मकता के साथ कठिन परिस्थितियों को संभालने की क्षमता का प्रतीक है।

२. अहंकार का दमन: कुछ कहानियों में चूहा एक राक्षस है जिसे गणेश ने हराया था, जो अहंकार और अभिमान को नियंत्रित करने के महत्व का प्रतीक है।

३.विनम्रता और ज़मीनी स्तर: गणेश के बड़े हाथी के सिर और छोटे चूहे के बीच का अंतर विनम्रता के महत्व और महान शक्ति के बावजूद जमीन पर बने रहने पर जोर देता है।

अंत में, दोनों कहानियाँ विनम्रता, मुक्ति और दैवीय कृपा की परिवर्तनकारी शक्ति के विषयों पर प्रकाश डालती हैं।

शिव और सती: अमर प्रेम की गाथा

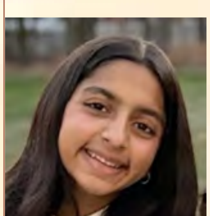
देवांशी पहूजा

मेरा नाम देवांशी पहूजा है। मैं तेरह वर्ष की हूँ और आठवीं कक्षा में वुडरो विल्सन मिडिल स्कूल में अध्ययन कर रही हूँ । मैं मध्यमा-३ में पढ़ती हूँ और मुझे पौराणिक कथाओं और लेखन में गहरी रुचि है। इस लेख के माध्यम से मैं शिव और सती की अमर प्रेम कथा साझा करना चाहती हूँ जो हमें सच्चे प्रेम, त्याग और भक्ति का मूल्य सिखाती है।

प्राचीन काल की एक दिव्य प्रेम कथा जो आज भी प्रेम, त्याग और समर्पण का प्रतीक मानी जाती है – यह है भगवान शिव और सती की गाथा। यह कथा हमें सिखाती है कि सच्चा प्रेम कभी हारता नहीं, चाहे परिस्थितियाँ कितनी ही प्रतिकूल क्यों न हों।

कैसे शुरू हुई यह कथा?

राजा प्रजापति दक्ष की पुत्री सती भगवान शिव की परम भक्त थीं। उन्होंने शिव से विवाह करने का निश्चय किया और कठिन तपस्या के बाद शिव को प्रसन्न कर लिया। विवाह के पश्चात सती शिव के साथ कैलाश पर्वत पर रहने लगीं, परंतु उनके पिता दक्ष को यह संबंध स्वीकार नहीं था। एक दिन दक्ष ने भव्य यज्ञ का आयोजन किया और सभी देवताओं को आमंत्रित किया, लेकिन भगवान शिव को निमंत्रण नहीं भेजा। सती ने अपने पति की अनुमति लेकर यज्ञ में जाने का निर्णय लिया। वहाँ उन्होंने देखा कि उनके पिता ने शिव का अपमान किया। यह अपमान सहन न कर पाने के कारण सती ने स्वयं को योगाग्नि में भस्म कर लिया।

शिव का क्रोध और तांडव: जब भगवान शिव को सती की मृत्यु का समाचार मिला तो वे अत्यंत क्रोधित हो उठे। उन्होंने अपने गण वीरभद्र को भेजकर दक्ष के यज्ञ को नष्ट कर दिया। फिर शिव स्वयं सती के पार्थिव शरीर को लेकर पूरे ब्रह्मांड में तांडव करने लगे। ब्रह्मांड को विनाश से बचाने के लिए भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर के टुकड़े कर दिए। ये टुकड़े भारत के विभिन्न हिस्सों में गिरे, जिन्हें आज शक्ति पीठों के रूप में पूजा जाता है।

प्रेम फिर से जीवित हुआ: सती के बलिदान के बाद भी प्रेम समाप्त नहीं हुआ। कई वर्षों बाद सती ने पार्वती के रूप में पुनर्जन्म लिया और कठोर तपस्या करके शिव से दोबारा विवाह किया। यह प्रेम की विजय थी – एक ऐसा प्रेम जो मृत्यु के बाद भी अटल रहा।

शिक्षा: प्रेम, त्याग और अडिग विश्वास

शिव और सती की कथा हमें यह सिखाती है कि सच्चा प्रेम सिर्फ बाहरी आकर्षण नहीं, बल्कि आत्मा का संबंध होता है। यह प्रेम त्याग, धैर्य और विश्वास पर आधारित होता है।

संदेश: सच्चा प्रेम समय और कठिनाइयों की परीक्षा में हमेशा अडिग रहता है। सती और शिव की तरह यदि प्रेम सच्चा है तो वह पुनः मिलन का मार्ग खोज ही लेता है। तो क्या सच्चा प्रेम कभी हारता है? नहीं! शिव और सती की कथा इसका सबसे बड़ा प्रमाण है।

शिव और सती: प्रेम, त्याग और धैर्य की सीख

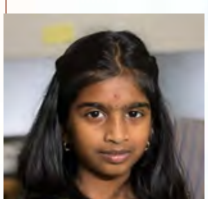

कृतिका आनंद

नमस्ते, मेरा नाम कृतिका आनंद है। मैं मध्यमा-३ में पढ़ती हूँ, और मैं ग्यारह वर्ष की हूँ। मेरा कर्मभूमि निबंध शिव और सती की सुंदर प्रेम की कहानी के बारे में बात करने जा रहा है।

भगवान शिव और माता सती की प्रेम कहानी बहुत गहरी और भावनाओं से भरी हुई है। यह हमें सिखाती है कि सच्चा प्रेम केवल एक जन्म का नहीं होता, बल्कि आत्मा से जुड़ता है और कई जन्मों तक बना रहता है। सती राजा दक्ष की पुत्री थीं और बचपन से ही भगवान शिव को मन ही मन अपना पति मान चुकी थीं। शिव जी को भी सती की भक्ति और प्रेम ने आकर्षित किया और दोनों ने विवाह कर लिया।

लेकिन सती के पिता दक्ष को यह विवाह पसंद नहीं था। वे शिव जी को योगी समझते थे जो महलों और राजसी ठाट-बाट से दूर रहते थे। उनके मन में शिव जी के लिए आदर नहीं था। अपने इसी अहंकार में उन्होंने एक बड़ा यज्ञ किया और सभी देवताओं को बुलाया, लेकिन शिव जी को आमंत्रण नहीं भेजा। जब सती को यह पता चला तो वे अपने पिता के पास गईं और उनसे विनती की कि शिव जी का अपमान ना करें। लेकिन दक्ष अपने अहंकार में डूबे थे, उन्होंने सती की बात नहीं मानी और शिव जी के लिए अपशब्द कहे। पति का यह अपमान सती से सहन नहीं हुआ। वे बहुत दुखी हुईं और उन्होंने वहीं यज्ञ की अग्नि में अपने प्राण त्याग दिए। जब यह समाचार शिव जी तक पहुंचा तो वे अत्यंत दुखी हो गए। उन्होंने सती के मृत शरीर को उठाया और पूरे ब्रह्मांड में इधर-उधर घूमने लगे। उनके दुख और क्रोध से सृष्टि का संतुलन बिगड़ने लगा। भगवान विष्णु ने स्थिति को संभालने के लिए अपने चक्र से सती के शरीर को कई टुकड़ों में विभाजित कर दिया। ये टुकड़े जहाँ-जहाँ गिरे, वहाँ शक्तिपीठ बने, जो आज भी पूजनीय हैं। सती की आत्मा अमर थी। उन्होंने अगले जन्म में पार्वती के रूप में जन्म लिया। इस बार भी उन्होंने शिव जी को पति के रूप में पाने के लिए कठोर तपस्या की। उनकी भक्ति और समर्पण से शिव जी प्रसन्न हुए और उन्हें फिर से अपनी अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया। भगवान शिव और माता सती की यह कथा हमें प्रेम, त्याग, धैर्य और सम्मान का सही अर्थ समझाती है। सच्चा प्रेम साथ रहने से अधिक, भावनाओं की कद्र और आत्मा से जुड़ाव में होता है।

श्री कृष्ण की बाल लीलाएँ

क्रिशा सावलिया

मेरा नाम क्रिशा सावलिया। मैं ग्यारह वर्ष की हूँ। मैं जॉन एडम्स मिडिल स्कूल में छठी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. में मध्यमा-३ में पढ़ती हूँ। मैं आपको "श्री कृष्ण की बाल लीलाएँ" बताने जा रही हूँ।

श्री कृष्ण, महाभारत के मुख्य पात्रों में से एक थे। उनका जन्म द्वापर युग में हुआ था। श्री कृष्ण भगवान विष्णु के आठवें अवतार हैं। कृष्ण एक महान राजा, योद्धा पुत्र, मित्र और महाभारत के युद्ध के दौरान मित्र अर्जुन के प्रिय व्यक्ति थे।

श्री कृष्ण कान्हा, केशव, माधव, श्याम, मोहन, गोपाल, कन्हैया, द्वारकाधीश, और लड्डू गोपाल के नाम से भी जाने जाते हैं। कृष्ण का जन्म मथुरा में शुक्ल पक्ष की

अष्टमी को हुआ था और वह देवकी और वासुदेव की संतान हैं। लेकिन कृष्ण को गोकुल में स्थानांतरित कर दिया गया, जिनका पालन-पोषण नंदराय और यशोदा ने गोकुल में किया।

श्री कृष्ण का व्यक्तित्व बालक स्वरूप से ही बहुत मोहक एवं नटखट था। उसकी शरारतें सभी गाँववालों को एवं

गोपियों को खुब खूब सताती थीं। श्री कृष्ण की लीला अपरंपार है। वे मैया यशोदा एवं गोपियों के साथ खूब आँख मिचौली करके मक्खन चुराया करते थे। बाल गोपाल स्वयं के घर एवं अन्य गोकुल वासियों के घर माखन चुराकर खाते थे और सब को बांटते थे। श्री कृष्ण गोपियों को निद्रावश करके मक्खन चुराया करते थे। जब यशोदा मैया ने डाँटकर कहा "कान्हा मिट्टी नहीं खाते।" तब मैया के कहने से मुख में ही ब्रह्मांड

के दर्शन कराए थे। वे अपने संग गाय चराने जाते थे, नदी किनारे गोपियाँ स्नान कर रही होती थीं तब वे उनके वस्त्र छुपा दिया करते थे। कान्हा ने गाँव वालों को मूसलाधार वर्षा से बचाने के लिए अपनी एक ही उंगली पर गोवर्धन पर्वत उठा लिया था। इसके अतिरिक्त श्री कृष्ण की लीलाएँ, रासलीला, पूतना वध, गोवर्धन लीला, गोचारण लीला, बकासुर वध, मधुर बांसुरी वादन, भी प्रसिद्ध हैं।

बुद्धिमान गणेश

ओम नानावटी

नमस्ते, मेरा नाम ओम नानावटी है। मैं मध्यमा-३ में पढ़ रहा हूँ। मैंने गणेश की बुद्धिमत्ता के बारे में एक कहानी लिखी है।

गणेश और कार्तिकेय भाई थे। सामान्य भाइयों की तरह ही वे भी समय-समय पर एक-दूसरे से लड़ते रहते थे। एक दिन गणेश और कार्तिकेय एक-दूसरे के साथ घूम रहे थे। जब वे आपस में बात कर रहे थे, गणेश ने एक अनोखा फल देखा। दोनों ने फल उठाया और फल के लिए लड़ने लगे। वे अपने माता-पिता शंकर भगवान और माता पार्वती के पास गए। जब वे वहाँ पहुँचे तो उन्होंने बताया कि वे फल के हकदार क्यों हैं। "मैं सबसे छोटा हूँ और मैंने इसे सबसे पहले देखा" गणेश ने कहा। "मैं सबसे बड़ा हूँ और मैंने इसे सबसे पहले छुआ" कार्तिकेय ने कहा।

माता पार्वती ने उन्हें फल को आधा काटने के लिए कहा। लेकिन शंकर भगवान ने मना कर दिया और कहा कि उन्हें नारद मुनि को बुलाना चाहिए। नारद ने उन्हें बताया कि उन्हें एक प्रतियोगिता में भाग लेना चाहिए और जो भी जीतेगा वह फल अपने लिए ले सकता है। प्रतियोगिता में दुनिया के तीन चक्कर लगाने थे। दोनों भाई सहमत हो गए। कार्तिकेय के मन में एक विचार आया कि वह अपने मोर पर सवार होकर जल्दी से पूरी दुनिया का चक्कर लगाए। गणेश का चूहा उड़ नहीं पा रहा था इसलिए वे सोच में पड़ गए कि उन्हें क्या करना चाहिए। गणेश को अचानक एक विचार आया और वह मुस्कुराने लगे। गणेश अपने माता-पिता के पास गए और उनके चारों ओर ३ बार चक्कर लगाया। हर कोई हैरान था। गणेश के ३ चक्कर पूरे करने के बाद शंकर भगवान ने उनसे पूछा कि गणेश ने अभी क्या किया। गणेश ने समझाया कि हमारे माता-पिता ही हमारी दुनिया हैं इसलिए मैं तीन बार पूरी दुनिया का चक्कर लगाकर आया। गणेश की बुद्धिमत्ता पर सभी बहुत हैरान थे। कार्तिकेय वापस आया और उसने सोचा कि वह जीत गया। वह गुस्से में वापस हवा में चला गया क्योंकि वह हार गया था। गणेश ने खुशी-खुशी फल खा लिया।

गणेश जी और चूहा

क्रिश पटेल

चूहा गणेश भगवान का वाहन है। गजमुख राक्षस भगवान शंकर की बहुत पूजा करता था, तो एक दिन भगवान शंकर ने प्रसन्न होकर राक्षस को वरदान दिया और उसको बताया कि इस वरदान से तुम अच्छे काम करना। पर वह तो एक राक्षस था। इसलिए उसने वरदान का दुरुपयोग किया और सभी लोगों और देवताओं को परेशान करने लगा। उससे तंग आकर सभी देवता लोग शंकर भगवान से मिलने गए और उनको बताया कि यह राक्षस हमें बहुत परेशान करता है। तब शंकर भगवान ने गणपति जी को बताया कि अब आप जाकर इस राक्षस को सुधारो। तब गणेश जी ने राक्षस के साथ लड़ाई की और उसे हरा दिया। तब गजमुख चूहा बन गया और बोला में चूहा बनकर आपके साथ रहूँगा और आप का वाहन बनकर रहूँगा। तब से चूहे ने गणेश जी की सेवा में अपनी पूरी शक्ति लगा दी और उनके लिए सारे काम किए।

गणेश जी और चूहे की कहानी हमें यह सिखाती है की आकार और शक्ति का कोई महत्व नहीं है। चूहे ने अपनी छोटी सी आकृति के बावजूद गणेश जी की सेवा में बहुत बड़ा योगदान दिया। यह कहानी हमें यह भी सिखाती है कि हमें अपनी विशेषताओं को पहचानना चाहिए और उन्हें दूसरों की सेवा में लगाना चाहिए।

उपनिषदों की बातें

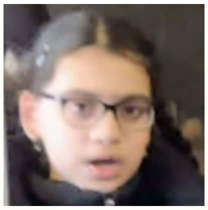

हरिप्रिया

१) आत्मा कौन है?

आत्मा हमारे अंदर की असली शक्ति है। हमें अपने अंदर के भगवान से जुड़ना चाहिए।

२) गुरु और शिष्य का रिश्ता?

गुरु से हमें सच्चा ज्ञान मिलता है। हमें गुरु की इज्जत करनी चाहिए और मन लगाकर सीखना चाहिए।

३) जीवन की बाद क्या होता है?

शरीर खत्म हो जाता है, लेकिन आत्मा हमेशा रहती है और नया जन्म लेती है।

४) मोक्ष का अर्थ क्या है?

मोक्ष मतलब जन्म और मरण से छुटकारा पाना। यह अच्छे काम और सच्चे ज्ञान से मिलता है।

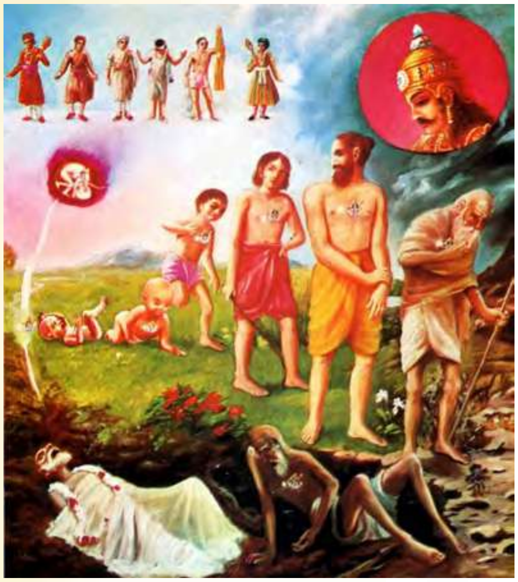

९) ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान?
हर इंसान के अंदर भगवान बसते हैं। हमें खुद पर भरोसा रखना चाहिए।

६) सपनों का महत्व?
सपने हमें कुछ नया सिखाते है और आगे बढ़ने की ताकत देते हैं।

७) ध्यान और एकाग्रता?
ध्यान करने से मन शांत रहता है और काम में सफलता मिलती है।

८) सत्य बोलने का महत्त्व?
हमें हमेशा सच बोलना चाहिए क्योंकि सच की ताकत से हम हर मुश्किल का सामना कर सकते हैं।

९) एकता का संदेश?
सभी इंसान एक जैसे हैं। हमें प्यार से रहना चाहिए।

१०) अज्ञान से ज्ञान की और?
पढ़ाई और कुछ नया सीखने की चाह, हमें अच्छा इंसान बनाते हैं।

११) कर्म का महत्व?
हमें नतीजे की चिंता किया बिना मेहनत और ईमानदारी से काम करना चाहिए।

कर्म

सृजन जैन

नमस्ते, मेरा नाम सृजन जैन है। मै मध्यमा-३ का छात्र हूँ। में ९ वर्ष का हूँ। मेरी कला, क्रिकेट, और भिन्न-भिन्न भाषाएँ सीखने में रुचि है। मुझे हिंदी बोलना पसंद है।

कर्म का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। अच्छे कर्म हमें मानसिक शांति, आत्म संतोष, और उन्नति प्रदान करते है। बुरे कर्म हमारे जीवन में अशांति लाते हैं और तनाव का कारण बनते हैं। कर्मों का हमारे दोनों वर्तमान और भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए हमें हर कर्म समझदारी और ईमानदारी से करना चाहिए। पहले किए गये कर्म हमे वर्तमान में या भविष्य में फल दे सकते हैं। ये बीज के समान होते हैं। जैसे अच्छे बीज अच्छी फसल देते हैं, वैसे ही अच्छे कर्मों का फल सुख दायक होता है और बुरे कर्मों का दुख दायक। इसलिए हमें हमेशा अपने कार्यों को सत्य, अहिंसा और प्रेम के आधार पर करना चाहिए। हमे कर्म सिद्धांत को समझना चाहिए जिससे न केवल हम अपने जीवन को सुधार सकें, बल्कि समाज और मानवता को बेहतर बना सकें।

आत्मा क्या है?

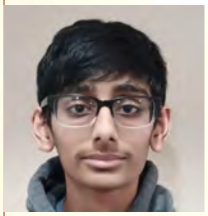
हर्षवर्धन पारेख

आत्मा हमारा आध्यात्मिक हिस्सा है। हर किसी के पास यह हिस्सा होता है। हमारी चेतना ही हमें बताती है कि हमारा अस्तित्व है। आत्माएँ उसी से जुड़ी हैं।
हर जीवित चीज़ में आत्मा होती है जिसमें जानवर भी सम्मिलित हैं। जीवन में अच्छे और बुरे कर्म होते हैं। जब आप अच्छे कर्म करते हैं तो आपकी आत्मा जिस अगले जीवन में जाती है वह बेहतर हो जाती है। अगर कोई अपने जीवन में कीड़ा है और अच्छे कर्म करता है तो वह गाय या हाथी जैसे बडा जानवर बन सकता है। हालाँकि यदि आप बुरे कर्म करते हैं तो विपरीत होता है। आप एक छोटे रूप में बदले जा सकते हो।
हमारी आत्माएँ कई जन्मों से गुज़रती हैं और इस दौरान हम मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। इससे हमारी आत्मा अनंत जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाएगी। इसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य को आत्मज्ञान प्राप्त करना चाहिए, जो स्वयं का ज्ञान है।
हमारी आत्माएँ मन से भी जुड़ी हुई हैं। जीवन में हमारे पास जो चेतना है वह आत्मा से है। प्रत्येक व्यक्ति के अंदर एक आध्यात्मिक चिंगारी होती है जो शरीर और मन से बड़ी और अलग होती है।
आत्माएँ हमारे लिए सब कुछ हैं जो हमारे नश्वर रूपों को हमारा व्यक्तित्व देती हैं। हमें जीवन में अच्छे कर्म करना याद रखना चाहिए ताकि हम उच्च रूप में पहुँच सकें।

हिंदू ग्रंथों का महत्व

अर्णव सेठी

नमस्ते, मेरा नाम अर्णव सेठी है। मैं मार्लटन में रहता हूँ। मैं हिंदी कक्षा में उच्चस्तर-२ का छात्र हूँ। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ और मेरे मनपसंद विषय गणित और विज्ञान हैं। मुझे अपने खाली समय में पुस्तकें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। मुझे टेनिस खेलना भी बहुत पसंद है।

हिंदू ग्रंथ जैसे वेद, भगवद् गीता, रामायण, महाभारत, उपनिषद और पुराण जीवन और भगवान के बारे में सिखाते हैं। वेद पूजा और ब्रह्मांड के बारे में बताते हैं, और भगवद् गीता से सही रास्ते और भगवान की भक्ति का ज्ञान मिलता है। रामायण और महाभारत में राम और कृष्ण की कहानियाँ हैं, जो अच्छाई और बुराई के बारे में बताती हैं। उपनिषद आत्मा और सच्चाई के बारे में बताते हैं, और पुराण देवताओं की कहानियाँ बताते हैं। इन ग्रंथों में कुछ प्रतीक होते हैं, जैसे शिव का त्रिशूल, जो रचना, पालन और संहार का प्रतीक है। विष्णु के अवतार जो भगवान की रक्षा करते हैं, लक्ष्मी, जो धन और सुख का प्रतीक हैं, और गणेश का हाथी जैसा सिर, जो बाधाओं को दूर करता है। पूजा और हवन जैसे कर्म भगवान से जुड़ने और शांति पाने में मदद करते हैं।

शिक्षिकाएँ- जुही चतुर्वेदी, चेतना सिंह

साउथ ब्रन्सविक पाठशाला उच्च स्तर-२

नवरात्रि - देवी के नौ रूप

आशी वाला

नवरात्रि एक नौ-दिवसीय हिंदू पर्व है जिसमें देवी दुर्गा और उनके विभिन्न रूपों की पूजा की जाती है। नवरात्रि का त्योहार भारत के विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग प्रकार से मनाया जाता है। लोग उपवास रखते हैं, गरबा और डांडिया जैसे पारंपरिक नृत्य करते हैं, और प्रतिदिन देवी की आराधना करते हैं। यह त्योहार विजयादशमी के साथ समाप्त होता है जो अच्छाई की बुराई पर जीत को दर्शाता है। नवरात्रि में प्रत्येक दिन देवी के अलग-अलग स्वरूप की पूजा की जाती है।

पहला दिन

समीक्षा अग्रवाल

नवरात्रि का त्योहार भारत के ज्यादातर हिस्सों में मनाया जाता है। नवरात्रि में माँ दुर्गा के नौ रूपो की पूजा की जाती है। सर्वप्रथम माँ शैलपुत्री की पूजा की जाती है। शैल अर्थात पर्वत, इसलिए वे शैलपुत्री कहलाती हैं, क्योंकि उन्होंने पर्वतराज हिमालय और मैनावती की पुत्री के रूप में जन्म लिया। असुरों का संहार करने के लिए माँ ने नौ रूपों को धारण किया, इसलिए नवरात्रि का त्योहार नौ दिन का होता है। इस दिन माँ की पूजा करने से माँ प्रसन्न होती है।

दूसरा दिन

जाह्नवी रस्तोगी

नवरात्रि का दूसरा दिन माँ ब्रह्मचारिणी को समर्पित है। वे पवित्रता, ज्ञान और शांति का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे एक सफेद साड़ी पहनती हैं और एक हाथ में कमंडल और दूसरे हाथ में रुद्राक्ष की माला रखती हैं। हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार देवी पार्वती ने भगवान शिव को पति के रूप में पाने के लिए तपस्या करने के लिए राजा हिमावत की पुत्री के रूप में पृथ्वी पर जन्म लिया था। पार्वती को खोने से भगवान शिव का दिल टूट गया और वे सांसारिक मामलों में शामिल नहीं हुए। भगवान शिव से विवाह करने के लिए उन्होंने हजारों वर्षों तक केवल फूल और जड़ी-बूटियाँ खाकर उपवास किया। अंततः उन्होंने खाना-पीना पूरी तरह से छोड़ दिया। देवी पार्वती को इस अवस्था में देखकर देवता और सप्तऋषि चिंतित हो गए। उन्होंने भगवान शिव के हृदय को छेदने के लिए प्रेम के देवता कामदेव को भेजा। वे अपनी ध्यान अवस्था से जागे और फिर से देवी पार्वती से प्रेम करने लगे। इस दिन कई लोग सुबह जल्दी उठते हैं और विशेष भोजन तैयार करते हैं। वे माँ ब्रह्मचारिणी को चमेली के फूल, चावल, चंदन, रोली/कुमकुम भी चढ़ाते हैं। कई लोग हरा रंग भी पहनते हैं क्योंकि यह विकास और नवीनीकरण का प्रतीक है।

तीसरा दिन

भाविनों शर्मा

नवरात्रि के तीसरे दिन लोग देवी दुर्गा के रूप माँ चंद्रघंटा की पूजा करते हैं। वह अपने माथे पर आधे चाँद के लिए जानी जाती हैं, जो घंटी की तरह दिखता है। कहानी यह है कि वह शांति लाने और राक्षसों से लड़ने के लिए प्रकट हुई थीं। इस दिन, लोग उनका आशीर्वाद पाने और दर्द रहित जीवन

की आशा के लिए विशेष प्रार्थनाएँ करते हैं। वे उन्हें फूल, मिठाइयाँ और फल चढ़ाते हैं और भजन और मंत्र भी पढ़ते हैं। बहुत लोग उपवास करते हैं, सामुदायिक समारोहों में सम्मिलित होते हैं और अपनी भक्ति और खुशी दिखाने के लिए गरबा और डांडिया नृत्य करते हैं। यह सब नवरात्रि के तीसरे दिन के बारे में है।

चौथा दिन

मोहित कावले

नवरात्रि के चौथे दिन हम देवी कुष्मांडा की पूजा करते हैं। माँ कुष्मांडा को हमारे ब्रह्मांड की मुख्य शक्ति के रुप में जाना जाता है। हिंदू धर्म में यह माना जाता है कि माँ कुष्मांडा ने अपनी मुस्कान के साथ कमारे ब्रह्मांड का निर्माण किया। उन्हें अष्टभुजा देवी भी कहा जाता है क्योंकि उनके आठ अंग हैं। यह दिन सभी

हिंदुओं के लिए शक्ति का प्रतिक है। हम शकित और हम शक्ति और समृद्धि पाने के लिए माँ कुष्मांडा से प्रार्थना करते हैं। माँ कुष्मांडा की पूजा करने से सभी भक्तों को खुशियाँ मिलती हैं। इस दिन नारंगी रंग का महत्व होता है। यह रंग उत्साह और आत्मविश्वास का प्रतीक है। हम अपने घरों और दुकानों में माँ कुष्मांडा की पूजा करते हैं। प्रार्थना करते समय भजन गाए जाते हैं और लोग व्रत रखते हैं।

पाँचवाँ दिन

अर्हम सिंघवी

नवरात्रि के पांचवें दिन आप देवी स्कंदमाता की पूजा करें। ५वें दिन आप जल्दी उठें और अपने पूजा कक्ष सहित घर की सफाई करें। फिर आप साफ़ कपड़े पहन लें। यह सब करने के बाद आप एक दिया जलाएँ और घी का उपयोग करके मूर्ति के सामने रखें। हम

स्कंदमात्ता की पूजा करते हैं क्योंकि वह भगवान कार्तिकेय और भगवान कृष्ण की माता हैं। स्कंद मत्त मातृत्व, प्रेम, पोषण, सुरक्षा और शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। नवरात्रि के ५वें दिन आप यही करें।

छठवाँ दिन

वर्षा कोलाचीना

नवरात्रि का छठा दिन माँ कात्यायनी को समर्पित है, जो देवी पार्वती का उग्र योद्धा रूप है जिसे राक्षस महिषासुर को नष्ट करने के लिए बनाया गया था। वे शेर की सवारी करती हैं और ज्ञान, सद्भाव और शक्ति का प्रतीक हैं। इस दिन भक्त जल्दी उठते हैं, लाल कपड़े पहनते हैं, पूजा क्षेत्र को साफ करते हैं और ताजे फूलों, प्रार्थनाओं और मंत्रों के साथ माँ कात्यायनी की पूजा करते हैं। वे पूजा करते समय कमल के फूल पकड़ते हैं और उनका आशीर्वाद लेने के लिए प्रसाद के रूप में शहद चढ़ाते हैं। इस दिन का शुभ रंग लाल है, जो जुनून, प्रेम और जीवन शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है और यह देवी को चढ़ाई जाने वाली चुनरी के लिए पसंदीदा रंग है।

सातवाँ दिन

सिद्धार्थ पाठक

नवरात्रि के सातवीं दिन माँ कालरात्रि के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ। नवरात्रि के सातवें दिन माँ कालरात्रि की पूजा की जाती है। इस दिन को महासप्तमी भी कहते हैं। माँ कालरात्रि को शुभंकरी और महायोगिनी भी कहते है। जब शुंभ, निशुंभ और रक्तबीज असुरों ने अपने अत्याचारों से पृथ्वी हाहाकार मचा दी तो माँ दुर्गा ने रक्तबीज का वध कर किया तो उसके रक्त से लाखों रक्तबीज पैदा हो गये थे। यह देखकर माँ दुर्गा बहुत क्रोधित हो गईं और उनका चेहरा गुस्से से काला पड़ गया। इसी स्वरूप से देवी कालरात्रि की उत्पत्ति हुई और इसके बाद माँ कालरात्रि ने रक्तबीज समेत सभी दैत्यों का वध कर दिया और उनके शरीर से निकलने वाले रक्त को जमीन पर गिरने से पहले अपने मुख में भर लिया। इस तरह सभी असुरों का अंत हुआ। इस कारण से माता को शुभंकरी भी कहा गया। माँ कालरात्रि की पूजा के लिए सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि के बाद माँ की प्रतिमा को गंगाजल से स्नान करा कर माँ को लाल रंग के वस्त्र भेंट करते है। माँ कालरात्रि को लाल रंग की चीज़ें पसंद हैं। महा सप्तमी के दिन माँ कालरात्रि को भोग मे गुड़ या उससे से बनी चीजें और मालपुआ का भोग लगाया जाता है। माँ कालरात्रि को प्रसन्न करने के लिए मंत्रों का जाप करना चाहिए।

आठवाँ दिन

अभिराम दुव्वूरी

दुर्गा अष्टमी नवरात्रि का आठवी दिन है। यह आश्विन माह में मनाते है। दुर्गा अष्टमी के दिन पर देवी दुर्गा ने राक्षस महिषासुर का वध किया था। इसीलिए दुर्गा अष्टमी मनाई जाती है। दुर्गा अष्टमी के दिन देवी दुर्गा को दिव्य स्त्री शक्ति का अवतार में पूजा करते हैं। दुर्गा अष्टमी बुराई पर अच्छाई की विजय का

प्रतीक है। दुर्गा अष्टमी धर्म के महत्व और धार्मिक जीवन जीने का भी संकेत देती है। इस दिन पूजा और यज्ञ भी किए जाते हैं। भारत के कुछ प्रांतों में युवा लड़कियों को देवी के अवतार के रूप में पूजते हैं। इसको कन्या पूजा भी कहते हैं।

नौवाँ दिन

तुषार राकुंडलिया

नवरात्रि के नौवें दिन महानवमी पर माँ सिद्धिदात्री की पूजा होती है, जो भक्तों को आठ प्रकार की सिद्धियां प्रदान करती हैं – अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्ब्य, ईशित्व और वशित्व। माना जाता है कि भगवान शिव को भी उनकी कृपा से ये सिद्धियाँ प्राप्त हुई थीं। इस दिन भक्त स्नान कर नए वस्त्र पहनते हैं, माँ सिद्धिदात्री को पुष्प, फल व मिठाई अर्पित कर 'ॐ देवी सिद्धिदात्र्यै नमः' मंत्र का जाप करते हैं। भक्त प्रायः बैंगनी वस्त्र पहनकर आध्यात्मिक और सांसारिक सफलता के लिए देवी से आशीर्वाद मांगते हैं।

चैतन्य महाप्रभु: कृष्ण भक्ति के महान संत

काव्या पै , ऑनलाइन पाठशाला , उच्चस्तर-२

काव्या पै

चैतन्य महाप्रभु का जन्म १८ फरवरी, १४८६ को नवद्वीप, बंगाल में हुआ था। उनके जन्म के समय चंद्र ग्रहण था, और गाँव के लोग श्री कृष्ण के मंत्र का जाप कर रहे थे। उनके माता-पिता ने उनका नाम विश्वंभर रखा।

बाल्यकाल और प्रारंभिक जीवन: विश्वंभर श्री कृष्ण के महान भक्त थे। ऐसा कहा जाता है कि जब वे छोटे थे, तब तक रोते नहीं थे जब तक कोई कृष्ण के मंत्रों का जाप न करे। ११ वर्ष की आयु तक उन्होंने संपूर्ण वैदिक ज्ञान अर्जित कर लिया था। एक दिन जब विश्वंभर २२ वर्ष के थे, वे अपने पिता के श्राद्ध कर्म के लिए गया नामक स्थान गए। वहाँ उनकी भेंट गुरु ईश्वरपुरी से हुई। गुरु ने उन्हें कृष्ण महामंत्र दिया जिससे उनका संपूर्ण जीवन परिवर्तित हो गया।

कृष्ण भक्ति का प्रसार: चैतन्य महाप्रभु का उद्देश्य लोगों को कृष्ण भक्ति का महत्व दिखाना था। उन्होंने गौड़ीय वैष्णववाद की स्थापना की जिसमें भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। उन्होंने लोगों को संकीर्तन (सामूहिक कीर्तन) के माध्यम से भक्ति का मार्ग दिखाया। उनका लक्ष्य हरे कृष्ण महामंत्र का प्रचार करना था जिसे उन्होंने पूरे समाज में फैलाया।

चैतन्य महाप्रभु की विरासत: आगे चलकर उनकी शिक्षाओं से प्रेरित होकर श्रील प्रभुपाद ने इस्कॉन (अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ) की स्थापना की। १५३४ ईस्वी में ४८ वर्ष की आयु में चैतन्य महाप्रभु ने इस संसार को त्याग दिया। उन्हें श्री कृष्ण और राधारानी के भक्ति रूपों का अवतार माना जाता है, और वे अपनी शिक्षाओं एवं भक्ति आंदोलन के कारण अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

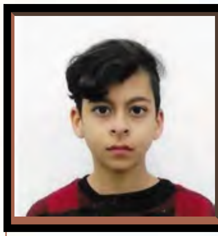

संत सूरदास

आर्यन शर्मा
ऑनलाइन पाठशाला
उच्चस्तर -२

संत सूरदास (१४७८-१५८३) एक प्रमुख भक्ति कवि थे, जो भारत में भक्ति आंदोलन के महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक थे। वे अपनी हार्दिक भक्ति से ओत-प्रोत रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं, जिनमें से अधिकांश भगवान कृष्ण के प्रति समर्पित हैं। उनके कार्यों ने हिंदी भाषा में भक्ति साहित्य की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सूरदास का जन्म १४७८ में उत्तर प्रदेश राज्य के एक छोटे से गाँव में हुआ था। अधिकांश स्रोतों के अनुसार वे जन्म से ही नेत्रहीन थे, जबकि कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि उनका अंधत्व जीवन के किसी चरण में विकसित हुआ। सूरदास बहुत ही विनम्र पृष्ठभूमि से थे और प्रारंभ में एक साधारण गायक और संगीतकार के रूप में कार्य करते थे।

उनकी आध्यात्मिक यात्रा तब शुरू हुई जब उन्हें भक्ति आंदोलन के बारे में जानकारी मिली, जो अनुष्ठानिक प्रथाओं के बजाय एक व्यक्तिगत ईश्वर की भक्ति पर केंद्रित था। सूरदास भगवान कृष्ण के प्रति अत्यंत समर्पित हो गए और उन्हें अपने दिव्य गुरु के रूप में पूजने लगे। वे प्रसिद्ध भक्ति संत और आचार्य वल्लभाचार्य के शिष्य बने और पुष्टिमार्ग (कृपा का मार्ग) का अनुसरण किया, जो भगवान कृष्ण को सर्वोच्च ईश्वर मानते हुए भक्ति पर बल देता है।

सूरदास का जीवन भगवान कृष्ण के प्रति उनके गहन प्रेम और भक्ति से प्रेरित था। उन्होंने भगवान के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिए असंख्य भजन, कविताएँ और भक्ति गीतों की रचना की। उनकी रचनाएँ मुख्य रूप से भगवान कृष्ण के बचपन और प्रारंभिक जीवन पर केंद्रित हैं, विशेष रूप से वृंदावन में उनके बाल्यकाल की शरारतों पर। सूरदास की कविताएँ भगवान कृष्ण की दिव्य लीलाओं और गोपियों के प्रति उनकी भक्ति पर विशेष रूप से प्रकाश डालती हैं। सूरदास की साहित्यिक कृतियाँ ब्रज भाषा (हिंदी की एक प्रमुख बोली) में लिखी गई हैं और उनकी रचनाएँ सरलता, गहरी भावनाओं और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण हैं। उन्होंने कई भजनों और पदों की रचना की जो आज भी घरों और मंदिरों में श्रद्धा के साथ गाए जाते हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति "सूर सागर" है, जो भगवान कृष्ण को समर्पित कविताओं का संग्रह है। उनकी कविता में देवता की सुंदरता, बुद्धि और आकर्षण का वर्णन करने के लिए रूपकों और सजीव कल्पनाओं का सुंदर प्रयोग मिलता है।

संत सूरदास का १५८३ में १०५ वर्ष की आयु में निधन हो गया। हालांकि उनकी शिक्षाओं और रचनाओं ने भक्ति आंदोलन को व्यापक रूप से फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से भारत के उत्तरी क्षेत्रों में उनकी भक्ति रचनाओं ने मीरा बाई, तुलसीदास और अन्य महान कवियों को भी प्रेरित किया। उनके भजनों को बाद में विभिन्न ग्रंथों और संग्रहों में संकलित किया गया।

संत सूरदास की विरासत उनकी अमर कविताओं और गीतों के माध्यम से आज भी जीवित है। भगवान कृष्ण के प्रति उनकी भक्ति उनकी गहरी भावनात्मक अभिव्यक्ति और भक्ति आंदोलन पर उनका प्रभाव उन्हें भारतीय आध्यात्मिकता और साहित्य में एक अमिट स्थान प्रदान करता है। उनके भजन आज भी व्यापक रूप से गाए जाते हैं और कृष्ण भक्ति के अनिवार्य अंग बने हुए हैं।

महाकुंभ एक अनोखा पर्व

काव्या गोयल
मोंटगोमेरी पाठशाला
उच्चस्तर -२

इस वर्ष भारत में सनातन धर्म (जिसे हिंदू धर्म भी कहते है) का सबसे बड़ा धार्मिक महाकुंभ मेले का आयोजन किया गया। कुंभ नाम का यह पर्व भारत में चार स्थानों पर - हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक – लगभग ३ वर्ष के अंतराल से होता है। चौथा कुंभ जो १२ वर्ष के बाद आता है उसे महाकुंभ या पूर्ण कुंभ कहा जाता है और यह हमेशा वैदिक कैलेंडर पंचांग के अनुसार माघ के महीने में प्रयागराज में तीन पवित्र नदियों (गंगा, यमुना और सरस्वती) के संगम पर मनाया जाता है । इस साल महाकुंभ मेला १३ जनवरी से शुरू हुआ और २६ फरवरी, २०२५ को समाप्त हुआ। ऐसा अनुमान है कि ४५ दिनों के इस महाकुंभ में ६६ करोड़ से अधिक भक्त पवित्र गंगा नदी में स्नान करने और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेने के लिए प्रयागराज आए।

कुंभ पर्व को लेकर हमारे मन में कई सवाल आते हैं। पहला, कुंभ पर्व कब और कैसे शुरू हुआ? दूसरा, यह केवल प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में ही क्यों मनाया जाता है? भारत के अन्य शहरों में क्यों नहीं? इसे १२ वर्ष के एक चक्र के साथ ३ वर्ष के अंतराल पर ही क्यों मनाया जाता है? एक और सवाल यह है कि कुंभ पर्व की तारीखें कैसे तय की जाती हैं?

सनातन धर्म में कुंभ पर्व एक प्राचीन परंपरा है। इसका वर्णन हमारे वेदों और कई पुराणों में पाया जाता है। विष्णु पुराण (भाग १, अध्याय ९) में कुंभ की शुरुआत से जुड़ी समुद्रमंथन की एक कथा है। अति प्राचीन वैदिक काल में एक बार देवों (भले पुरुषों) और राक्षसों (बुरे पुरुषों) के बीच युद्ध हुआ था। देव राक्षसों से अपनी विनाशकारी हार से डरे हुए भगवान विशु के पास गए और उनसे सहायता के लिए प्रार्थना की। विष्णु ने देवों को क्षीरसागर नाम के एक पवित्र महासागर का मंथन करने के लिए कहा। उन्होंने देवों को आश्वासन दिया कि समुद्र मंथन से एक अमृत से भरा घड़ा (कुंभ) निकलेगा और उस अमृत को पीने से सभी देव शक्तिशाली और अमर हो जायेंगे। चूँकि क्षीरसागर का मंथन एक कठिन कार्य होगा, इसलिए भगवान विष्णु ने देवों को राक्षसों से मिलकर इसे करने के लिए कहा। देवों ने राक्षसों से कूटनीतिक रूप से संपर्क किया और उनके साथ अमृत साझा करने का प्रस्ताव दिया, जिसे मानकर राक्षस देवों के साथ मिलकर पवित्र क्षीरसागर का मंथन करने के लिए सहमत हो गए। समुद्र मंथन से १४ बहुमूल्य रत्न बाहर निकले। सबसे अंत में धनवंतरी नाम के एक आयुर्वेदिक चिकित्सक जिन्होंने अमृत का एक घड़ा (कुंभ) हाथ में लिया हुआ था प्रकट हुए। जैसे ही राक्षसों ने घड़े को देखा, उन्होंने उसे धन्वंतरि के हाथों से छीन लिया। तभी देवों ने घड़े को छीनने के लिए राक्षसों पर आक्रमण कर दिया। भगवान विष्णु तब उनके विवाद को सुलझाने के लिए मोहनी नाम की एक सुन्दर महिला के रूप में प्रकट हुए।

किंवदंतियों के अनुसार मोहिनी के आने से पहले देवों और राक्षसों के बीच संघर्ष के समय अमृत की कुछ बूंदें छलक कर ४ स्थानों पर गिर गईं - हरिद्वार और प्रयाग में पवित्र गंगा नदी में, उज्जैन में शिप्रा नदी में और नासिक में गोदावरी नदी में। तभी से कुंभ त्योहार उन चार स्थानों पर ही आयोजित किया जाता है जहाँ लोग उन नदियों में स्नान करते हैं और ज़ान, समृद्धि, अच्छे स्वास्थ्य और मोक्ष के लिए प्रार्थना करते हैं। प्रयागराज में ३ पवित्र नदियों का संगम होने के कारण प्रयागराज का महाकुंभ विशेष महत्वपूर्ण है। कुंभ पर्व की तिथियाँ हमारे

सौर मंडल में ग्रहों की स्थिति की खगोलीय गणनाओं पर तय की जाती हैं। बृहस्पति, सूर्य और चंद्रमा की सापेक्ष स्थितियाँ सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। चूंकि बृहस्पति ग्रह लगभग १२ वर्षों में सूर्य का चक्कर पूरा करता है, इसलिए कुंभ का १२ साल का चक्र चार स्थानों पर निर्धारित किया गया है।

भारतीय हजारों वर्षों से कुंभ मेलों में जाते रहे हैं। कुंभ त्योहारों की एक बहुत विशिष्ट विशेषता यह है कि वहाँ बड़ी संख्या में साधु और संन्यासी (जो ज्ञान और मोक्ष की तलाश में भौतिक दुनिया से लगाव त्याग चुके हैं) आते हैं। उन लोगों को आम तौर पर नागा कहते हैं और वे एकांत स्थानों पर जैसे हिमालय और भारत के अन्य पहाड़ों की गुफाओं में रहते हैं और सार्वजनिक दृष्टि से दूर गहरे ध्यान और धार्मिक गतिविधियों में लगे रहते हैं। ऐसे साधु और संत सभी कुंभ मेलों में बड़ी संख्या में आते हैं और वहाँ स्नान करने के अलावा धार्मिक सभाओं का आयोजन करते हैं। आम लोग प्रमुख साधुओं के दर्शन करने आते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं।

तपस्या का फल

आयुष सिन्हा

नमस्ते, मेरा नाम आयुष सिन्हा है। मैं ९ वीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं जर्सी सिटी हिंदी यू.एस.ए. में उच्चस्तर-२ कक्षा का छात्र हूँ। मुझे पुस्तकें पढ़ना और कला पसंद है। मेरा मन पसंद खेल फुटबॉल, तैराकी, और क्रिकेट है।

जीवन में हिंदू धर्म को समझने के लिए देवताओं से जुड़े पुराणों का अध्ययन करना अति आवश्यक है। उन पुराणों में शिव पुराण का भी अत्यंत महत्व है। इसमें भगवान शिव की लीलाओं और कथाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। शिव पुराण में देवी पार्वती की तपस्या का एक सुंदर वर्णन मिलता है। इस कथा के अनुसार माँ पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कई वर्षों तक कठोर तपस्या की। एक दिन तपस्या के दौरान उन्हें एक छोटे बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। यह सुनकर माँ पार्वती तपस्या से उठीं और आवाज की दिशा में भागीं। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि एक मगरमच्छ एक बच्चे को निगलने का प्रयास कर रहा है। माँ पार्वती ने मगरमच्छ से कहा, "इस बच्चे को छोड़ दो, और बदले में मैं अपनी तपस्या का फल तुम्हें प्रदान कर दूँगी। "यह सुनकर मगरमच्छ संतुष्ट हो गया। तपस्या का पुण्य प्राप्त होते ही उसकी बुद्धि शुद्ध हो गई, और उसने बच्चे को छोड़ दिया। माँ पार्वती बच्चे को सुरक्षित उसके घर लौटा कर पुनः अपनी तपस्या में लीन हो गईं। कुछ क्षण बाद भगवान शिव प्रकट हुए और बोले, "तुम्हें अब और तपस्या करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हर प्राणी में मेरा ही वास है। तुमने मगरमच्छ को जो पुण्य प्रदान किया, वह वास्तव में मुझे ही प्राप्त हुआ। मैं तुम्हारी करुणा और दया से अत्यंत प्रसन्न हूँ और तुम्हें अपनी अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार करता हूँ।"

इस कथा से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

यह कथा हमें सिखाती है कि तपस्या, श्रद्धा और करुणा से किसी भी कठिन परिस्थिति का समाधान संभव है। निःस्वार्थ सेवा और दृढ़ संकल्प से हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। माँ पार्वती के धैर्य, प्रेम और त्याग के कारण ही उन्हें भगवान शिव का साथ प्राप्त हुआ।

गणेश जी और कार्तिकेय जी की दौड़

मेरा नाम ध्रुवा खगाति है। मैं चेरी हिल पाठशाला में उच्चस्तर-२ में पढ़ता हूँ। अपने खाली समय में मुझे बास्केटबॉल खेलना और टी.वी. देखना पसंद है। मेरा पसंदीदा भोजन डोसा है और मेरा पसंदीदा फल तरबूज है लेकिन मुझे खीरा खाना पसंद नहीं है।

मेरी सबसे पसंदीदा पौराणिक कहानी गणेश जी और कार्तिकेय जी की दौड़ है। एक बार की बात है, देवर्षि नारद जी भगवान शिव जी और माता पार्वती जी से मिलने गए। वहाँ उन्होंने माँ पार्वती जी को एक अनोखा आम दिखाया। उन्होंने कहा कि जो कोई भी इसे खाएगा उसे विशेष शक्तियाँ प्राप्त होंगी। माँ पार्वती जी ने यह आम अपने दोनों बेटों, कार्तिकेय जी और गणेश जी को दे दिया। लेकिन देवर्षि नारद जी ने कहा कि आम केवल एक ही व्यक्ति खा सकता है और दोनों बेटों को इसे जीतने के लिए एक प्रतियोगिता करने को कहा।

प्रतियोगिता में उन्हें दुनिया के तीन चक्कर लगाकर पहले आना था। कार्तिकेय जी अपने परिवहन, मोर पर सवार हो गए और आकाश में उड़ चले। गणेश जी वहीं बैठे-बैठे सोचने लगे कि वे इस चुनौती को कैसे पूरा करेंगे। फिर उन्होंने अपने माता-पिता की परिक्रमा शुरू की और तीन चक्कर पूरे किए। गणेश जी ने अपना इनाम लिया, लेकिन भगवान शिव जी और माँ पार्वती जी ने उन्हें याद दिलाया कि उन्हें तीन बार दुनिया का चक्कर लगाना था। गणेश जी मुस्कराए और कहा कि उनके माता-पिता ही उनकी दुनिया हैं, और अपने माता-पिता की परिक्रमा करके उन्होंने यह चुनौती पूरी कर ली। इस प्रकार भक्ति और ज्ञान की इस प्रतियोगिता के विजेता गणेश जी घोषित किए गए।

कहानी से सीख

इस कहानी से हम सीख सकते हैं कि प्रेम ही सबसे बड़ा धन है। यह दिखाती है कि भक्ति और प्रेम आपको सच्चे पुरस्कार तक ले जाते हैं तथा बुद्धिमान होना, शक्तिशाली होने से अधिक महत्वपूर्ण है।

शिव जी का तांडव

मेरा नाम द्विज गिरधर है। मैं १३ वर्ष का हूँ। मैं उच्चस्तर-२ का छात्र हूँ। मैं न्यू जर्सी में रहता हूँ। मुझे खेलना और पढ़ना बहुत पसंद है। मेरा प्रिय विषय गणित है। मुझे हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेना बहुत अच्छा लगता है।

विनाश के देवता शिव

विनाश के देवता, भगवान शिव आमतौर पर हिमालय में ध्यान करते हैं। लेकिन जब राक्षस त्रिपुरासुर ने कहर बरपाया तो देवताओं ने मदद की गुहार लगाई। करुणा से प्रेरित होकर शिव जी ने तांडव, अपना लौकिक नृत्य शुरू किया। उन्होंने एक दिव्य हथियार बनाया और तेजी से राक्षस को हरा दिया। जब उनका कर्तव्य पूरा हो गया तब शिव अपने एकांत में लौट आए, जो ब्रह्मांड की चक्रीय प्रकृति - जन्म, विकास, गिरावट और पुनर्जन्म का एक गहरा अनुस्मारक था।

इस कहानी से सीख

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें सदैव अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए।

योग: आत्मा, मन और शरीर का अद्भुत संतुलन

समर सेहगल, एडिसन पाठशाला, उच्चस्तर-२

आज योग हमारे जीवन का महत्वपूर्ण पहलू बन चुका है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह आत्मा, मन और शरीर को संतुलित करने की एक प्राचीन भारतीय विधा है। योग का अभ्यास व्यक्ति को मानसिक शांति, शारीरिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाता है। यह हजारों वर्षों से मानव जीवन का एक अभिन्न अंग रहा है। ऐसा माना जाता है कि योग का प्रारंभ लगभग ५००० वर्ष पूर्व हुआ था। योग में कई सारी मुद्राएँ होती हैं जिन्हें करने से हमारे सारे शरीर में शक्ति का संचार होता है। महाऋषि पतंजलि ने योग को आठ भागों में बांटा था, जो हैं: यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान और समाधि। भगवद् गीता और उपनिषदों में भी योग की काफी चर्चा की गयी है। पहले योग को आध्यात्मिक साधना के रूप में विकसित किया गया था, लेकिन आज इसे दुनिया भर में लोग अपनी सेहत और तंदुरुस्ती बनाए रखने के लिए अपनाते हैं। कई वर्ष पहले स्वामी विवेकानंद ने योग पश्चिम देशों को पहली बार प्रस्तुत किया। जब आप प्राणायाम करते हैं और आप अपनी साँसों को नियंत्रित करते हैं तो आपको भगवान की उपस्थिति अपने समीप महसूस होती है। योग का अर्थ “union” है, तो जब कोई भी योग का अभ्यास करता है तो उसके लिए भगवान के साथ जुड़ना आसान हो जाता है। योग का जब दोहराव होता है तो आपका घमंड खत्म हो जाता है। योग आपको अनुशासन भी सिखाता है। नियमित रूप से योग करने से व्यक्ति में अनुशासन विकसित होता है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने में मदद करता है। योग एक ऐसी पद्धति है जो निरंतर अभ्यास की माँग करती है। जब आप रोजाना एक निश्चित समय पर योग करते हैं तो यह आपको समय का पालन करना सिखाता है। जब आपका मन शांत और केंद्रित होता है, तो आप अपने लक्ष्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और अनुशासनपूर्वक कार्य भी करते हैं। योग आत्मनिरीक्षण को प्रोत्साहित करता है, जिससे व्यक्ति अपनी आदतों और कमज़ोरियों को समझ सकता है। जब आप खुद को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं तो अनुशासन जीवन का हिस्सा बन जाता है। आपकी मन: स्थिति और आपके भाव योग करने से काफी प्रभावित हो सकते हैं। पहले तो योग आपके तनाव और चिंताओं को खत्म करता है। योग करते समय आपका दिमाग एंडोर्फिन्स (endorphins) हॉर्मोन्स छोड़ता है। एंडोर्फिन्स वे हॉर्मोन्स हैं जो आपके दिमाग को खुश रखते हैं। कई मुद्राएँ आपका रक्त संचार और ऑक्सीजन प्रवाह (oxygen flow) बड़ा सकती हैं। योग आपको शांत करता है और आराम देता है; जिससे आप अच्छी नींद ले सकते हैं। योग केवल शारीरिक कसरत नहीं है, बल्कि यह एक संपूर्ण जीवनशैली है जो व्यक्ति के जीवन को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाती है। यह एक प्राचीन विद्या है जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी हजारों वर्ष पहले थी। यदि इसे जीवन का नियमित हिस्सा बनाया जाए तो यह जीवन को आनंदमय, स्वस्थ और सकारात्मक बना देती है।

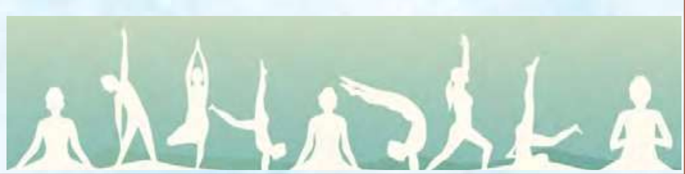

हिंदू ग्रंथों का हमारे जीवन पर प्रभाव

नमस्ते, मेरा नाम येशा मेवानी है। मैं ११ वर्ष की हूँ तथा मैं छठी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं एडिसन हिंदी स्कूल की उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मुझे हिंदी भाषी होने का गर्व है। मुझे नृत्य और संगीत बहुत पसंद हैं। मेरे खाली समय में मुझे बास्केटबॉल खेलना और हिंदी धारावाहिक देखना पसंद है।

आज मैं आपसे हिंदू ग्रंथों का हमारे जीवन पर प्रभाव के बारे में कुछ जानकारी देना चाहती हूँ। पहले चलिए जानते हैं ग्रंथ क्या होते हैं तथा हिंदू ग्रंथ का क्या अर्थ है। ग्रंथ एक विशेष प्रकार की ज्ञानवर्धक पुस्तक होती है; विशेष रूप से धार्मिक ग्रंथ, ज्ञान और शिक्षा की महत्वपूर्ण पुस्तकें होती हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी संचित ज्ञान को आगे बढ़ाने में सहायक होती हैं। कुछ प्रमुख हिंदू धार्मिक ग्रंथों के नाम:

१. रामायण (महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित)
२. महाभारत (महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित)
३. भगवद गीता (महाभारत का एक अंश, जिसमें श्रीकृष्ण का उपदेश है)
४. वेद - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
५. पुराण - जैसे भागवत पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण

हिंदू धार्मिक ग्रंथों का हमारे जीवन पर प्रभाव

हिंदू ग्रंथों का हमारे जीवन पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा है। इन ग्रंथों में जीवन के हर पहलू को समझाया गया है। ग्रंथ हिंदू धर्म की आधारशिला हैं और जीवन, धर्म, नीति, अध्यात्म एवं मोक्ष के मार्ग को समझने में सहायक होते हैं। ये ग्रंथ न केवल धार्मिक आस्थाओं और विश्वास को परिभाषित करते हैं, बल्कि जीवन में संतुलन और शांति प्राप्त करने के मार्ग भी बताते हैं।

भगवद् गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कर्म, भक्ति और ज्ञान के महत्व पर जोर दिया है। गीता हमें सिखाती है कि हमें अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए, बिना फल की चिंता किए। रामायण में भगवान राम के आदर्शों से हम सच्चे धर्म, सत्य और निष्ठा का पालन करने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। महाभारत में जीवन के कठिन प्रश्नों और उनके उत्तरों को समझाया गया है।

वेद और उपनिषदों में समाज और रिश्तों के महत्व को बताया गया है, जिससे परिवार और समाज के बीच सामंजस्य बनता है। रामायण और महाभारत में आदर्श परिवार और समाज की तस्वीर प्रस्तुत की गई है, जो हमें अच्छे संबंधों और कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा देती है।

ये ग्रंथ हमें सच्चाई, प्रेम, दया, और सम्मान जैसे अच्छे गुणों को अपनाने की शिक्षा देते हैं। भगवद् गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि हमें अपने कर्मों में ईमानदारी और सही दिशा में प्रयास करना चाहिए। इन शिक्षाओं का पालन करके हम जीवन में खुशहाल और संतुलित रह सकते हैं।

अंत में, मैं यह कहना चाहूँगी कि आप दुनिया में कहीं भी रहें, ग्रंथों के बिना समाज, परिवार और चरित्र का निर्माण असंभव है। ये हमें सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

धन्यवाद।

स्वामी विवेकानंद: एक महान संत और विचारक

वर्तिका रानी एक प्रतिभाशाली ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा हैं जो नॉर्थ कैरोलाइना में रहती हैं। उन्हें पढ़ना, साइकिल चलाना, अपने दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताना और अपनी संस्कृति से जुड़ा रहना पसंद है। वे नई चीजें सीखने के लिए उत्सुक हैं और विभिन्न विषयों पर अपनी ज्ञानवर्धक समझ विकसित करना पसंद करती हैं।

स्वामी विवेकानंद भारत के महान संत और विचारक थे, जिन्होंने पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति और वेदांत के ज्ञान को फैलाया। उनका जन्म १२ जनवरी १८६३ को कोलकाता में हुआ था। उनका असली नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। बचपन से ही वे अत्यंत बुद्धिमान और जिज्ञासु थे। वे हर चीज़ के पीछे का कारण जानने की उत्कंठा रखते थे। जब वे अपने गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस से मिले तो उनके विचार और भी गहरे हो गए। श्री रामकृष्ण ने उन्हें सिखाया कि सभी धर्म समान हैं और सच्चा ज्ञान वही है जो सेवा और प्रेम की भावना विकसित करे। १८९३ में स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भाग लिया। जब उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत *"अमेरिका के भाइयों और बहनों!"* कहकर की तो पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा। अपने इस ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने भारत की आध्यात्मिकता, सहिष्णुता और एकता का संदेश दिया। इस घटना ने भारत की महानता को पूरी दुनिया के सामने रखा और भारतीयों को अपने धर्म और संस्कृति पर गर्व करने की प्रेरणा दी। स्वामी विवेकानंद का समाज के प्रति योगदान बहुत महत्वपूर्ण था। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की जो आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के क्षेत्र में कार्यरत है। वे मानते थे कि *"शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर और अच्छा इंसान बनना है।"* उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा था, *"उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको मत।"* उनके विचारों ने लाखों युवाओं को आगे बढ़ने की शक्ति दी। स्वामी विवेकानंद की महानता केवल उनकी आध्यात्मिकता में ही नहीं थी, बल्कि वे एक समाज सुधारक और देशभक्त भी थे। उन्होंने भारतीय समाज में आत्मविश्वास, शिक्षा और सेवा की भावना जागृत की। उनका मानना था कि एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण के लिए युवाओं को आत्मविश्वास और परिश्रम की भावना से ओत-प्रोत होना चाहिए। मुझे स्वामी विवेकानंद बहुत प्रेरणादायक लगते हैं क्योंकि उनके विचार आज भी मुझे आगे बढ़ने की शक्ति देते हैं। उन्होंने हमेशा सिखाया कि *"अपनी शक्ति को पहचानो और स्वयं पर विश्वास रखो।"* उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि मेहनत, सच्चाई और आत्मविश्वास के बल पर कुछ भी हासिल किया जा सकता है। उनके विचार और शिक्षाएँ सदैव मेरा मार्गदर्शन करती रहेंगी।

शिव पुराण

प्रशम जैन, उच्चस्तर-२, चेरी हिल पाठशाला

शिव पुराण सभी पुराणों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली पुराणों में से एक है। भगवान शिव के विविध रूपों, अवतारों, ज्योतिर्लिंगों, भक्तों और भक्ति का विशद् वर्णन किया गया है। इसमें शिव के कल्याणकारी स्वरूप का तात्त्विक विवेचन, रहस्य, महिमा और उपासना का विस्तृत वर्णन है। शिव पुराण में शिवजी के रूपों, लीलाओं और कथाओं का वर्णन किया गया है। कथाओं के माध्यम से इसमें शिवजी की महिमा का उल्लेख किया गया है। धार्मिक मान्यता है कि जो व्यक्ति शिव पुराण की कथा को पढ़ता या सुनता है उसके समस्त दुख दूर होते हैं और परिवार पर शिवजी का आशीर्वाद बना रहता है।

हिंदू धर्म में १८ पुराण हैं। सभी पुराण हिंदू भगवानों की कहानियाँ बताते हैं। इसमें त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के जन्म के साथ ही देवताओं की भी कहानियाँ सम्मिलित हैं। वेदों में भगवान को निराकार रूप बताया है जबकि पुराणों में त्रिदेव सहित सभी देवों के रूप का उल्लेख होने के साथ ही उनके जन्म की कहानियाँ भी हैं।

भगवान शिव को 'संहारक' और 'नव का निर्माण' कारक माना गया है। अलग-अलग पुराणों में भगवान शिव और विष्णु के जन्म के विषय में कई कथाएँ प्रचलित हैं। शिव पुराण के अनुसार भगवान शिव को स्वयंभू (सेल्फ बॉर्न) माना गया है जबकि विष्णु पुराण के अनुसार भगवान विष्णु स्वयंभू हैं। शिव पुराण के अनुसार एक बार जब भगवान शिव अपने टखने पर अमृत मल रहे थे तब उससे भगवान विष्णु पैदा हुए जबकि विष्णु पुराण के अनुसार ब्रह्मा भगवान विष्णु की नाभि कमल से पैदा हुए जबकि शिव भगवान विष्णु के माथे के तेज से उत्पन्न हुए बताए गए हैं। विष्णु पुराण के अनुसार माथे के तेज से उत्पन्न होने के कारण ही शिव हमेशा योगमुद्रा में रहते हैं।

शिव के जन्म की कहानी हर कोई जानना चाहता है। श्रीमद् भागवत के अनुसार एक बार जब भगवान विष्णु और ब्रह्मा अहंकार से अभिभूत हो स्वयं को श्रेष्ठ बताते हुए लड़ रहे थे तब एक जलते हुए खंभे से जिसका कोई भी ओर-छोर ब्रह्मा या विष्णु नहीं समझ पाए, भगवान शिव प्रकट हुए।

विष्णु पुराण में वर्णित शिव के जन्म की कहानी शायद भगवान शिव का एकमात्र बाल रूप वर्णन है। यह कहानी बेहद मनभावन है। इसके अनुसार ब्रह्मा को एक बच्चे की जरूरत थी। उन्होंने इसके लिए तपस्या की, तब अचानक उनकी गोद में रोते हुए बालक शिव प्रकट हुए। ब्रह्मा ने बच्चे से रोने का कारण पूछा तो उसने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया कि उसका नाम 'ब्रह्मा' नहीं है इसलिए वह रो रहा है। तब ब्रह्मा ने शिव का नाम 'रूद्र' रखा जिसका अर्थ होता है 'रोने वाला'। शिव तब भी चुप नहीं हुए, इसलिए ब्रह्मा ने उन्हें दूसरा नाम दिया पर शिव को नाम पसंद नहीं आया और वे फिर भी चुप नहीं हुए। इस तरह शिव को चुप कराने के लिए ब्रह्मा ने ८ नाम दिए और शिव ८ नामों (रूद्र, शर्व, भाव, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव) से जाने गए। शिव पुराण के अनुसार

ये नाम पृथ्वी पर लिखे गए थे।

शिव के इस प्रकार ब्रह्मा पुत्र के रूप में जन्म लेने के पीछे भी विष्णु पुराण की एक पौराणिक कथा है। इसके अनुसार जब धरती, आकाश, पाताल समेत पूरा ब्रह्माण्ड जलमग्न था तब ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शिव) के सिवा कोई भी देव या प्राणी नहीं था। तब केवल विष्णु ही जल सतह पर अपने शेषनाग पर लेटे नजर आ रहे थे। तब उनकी नाभि से कमल नाल पर ब्रह्मा जी प्रकट हुए। ब्रह्मा-विष्णु जब सृष्टि के संबंध में बातें कर रहे थे तो शिव जी प्रकट हुए। ब्रह्मा ने उन्हें पहचानने से इनकार कर दिया। तब शिव के रूठ जाने के भय से भगवान विष्णु ने दिव्य दृष्टि प्रदान कर ब्रह्मा को शिव की याद दिलाई। ब्रह्मा को अपनी गलती का एहसास हुआ और शिव से क्षमा माँगते हुए उन्होंने उनसे अपने पुत्र रूप में पैदा होने का आशीर्वाद मांगा। शिव ने ब्रह्मा की प्रार्थना स्वीकार करते हुए उन्हें यह आशीर्वाद प्रदान किया। कालांतर में विष्णु के कान के मैल से पैदा हुए मधु-कैटभ राक्षसों के वध के बाद जब ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना शुरू की तो उन्हें एक बच्चे की जरूरत पड़ी और तब उन्हें भगवान शिव का आशीर्वाद ध्यान आया। अत: ब्रह्मा ने तपस्या की और बालक शिव बच्चे के रूप में उनकी गोद में प्रकट हुए।

भगवद् गीता

वेदांग पालीवाल, उच्चस्तर-२, स्टैमफर्ड पाठशाला

एक हिन्दू धर्मग्रंथ है जिसका इतिहास पहली शताब्दी ईसा पूर्व का है। इसकी मूल भाषा संस्कृत थी। इसमें भारतीय धर्म के कुछ भाग सम्मिलित हैं। इसमें अठारह अध्याय और सात सौ श्लोक हैं। अंग्रेजी में गीता शब्द का अर्थ है भगवान का गीत। भगवद् गीता नैतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए भी एक पुस्तक है। भगवद् गीता भी महाकाव्य महाभारत का हिस्सा है। लोग आज भी भगवद् गीता पढ़ते हैं क्योंकि यह ज्ञान के साथ-साथ जीवन की अनेक बातों के लिए सलाह भी प्रदान करती है। भगवद् गीता व्यक्ति के संदेहों का भी समाधान करती है। भगवद् गीता कहती है कि ब्रह्मांड आठ तत्वों से बना है: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और चेतना। मानव अस्तित्व के पाँच आवरण हैं पर्यावरण, भौतिक शरीर, प्राण या ऊर्जा, मन और चेतना। इसलिए, पूरा ब्रह्मांड एक अलग हिस्सा है, और हम ब्रह्मांड का अभिन्न अंग हैं। गीता कहती है, "तुम्हारा मन ही तुम्हारे बंधन और तुम्हारी मुक्ति के लिए जिम्मेदार है।" तुम्हारा मन हर समय बदलता रहता है। अगर तुम्हारा मन साधना के माध्यम से अच्छी तरह प्रशिक्षित है, तो वह तुम्हारा मित्र बन जाता है और तुम्हारी मदद करता है। अन्यथा, तुम्हारा अपना मन दुश्मन की तरह व्यवहार करता है। भगवद् गीता में कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि वह धर्म के अनुसार युद्ध लड़े क्योंकि योद्धा के रूप में यही उसका कर्तव्य है। कृष्ण ने अर्जुन को अपने भय और भ्रम पर काबू पाने और अपने कर्तव्य को अनासक्त भाव से निभाने के लिए भी प्रोत्साहित किया। यदि तुम यह धर्मयुद्ध नहीं लड़ोगे, तो तुम अपने कर्तव्य में असफल हो जाओगे, अपनी प्रतिष्ठा खो दोगे, और पाप के भागी बनोगे। आपका मानव समाज के प्रति कर्तव्य है, आपका स्वयं के प्रति कर्तव्य है, आपका विश्व के प्रति कर्तव्य है, आपका अंतरात्मा के प्रति कर्तव्य है, आपके भीतर की गहनतम आत्मा के प्रति कर्तव्य है जो ब्रह्मांड में व्याप्त है।

संत रामकृष्ण परमहंस

मेरा नाम शौर्य विद है और मैं अभी आठवीं कक्षा में हूँ, और हिंदी के उच्चस्तर-२ में। मुझे नौ वर्ष तक इस महान संगठन का हिस्सा होने का सौभाग्य मिला है, जो एक अद्भुत यात्रा रही है। मैं आज आपके साथ अपना काम साझा करने के लिए वास्तव में उत्साहित हूँ।

रामकृष्ण परमहंस: भक्ति और आध्यात्मिकता के प्रेरणास्रोत

रामकृष्ण परमहंस एक महान भारतीय संत थे जिन्होंने भक्ति और आध्यात्मिक साधना पर आधारित एक प्रेरणादायक जीवन जिया। उनका जन्म १८ फरवरी १८३६ को पश्चिम बंगाल के कमरपुकुर में गदाधर चट्टोपाध्याय के रूप में हुआ था। बचपन से ही वे आध्यात्मिकता की ओर गहरी रुचि रखते थे। हालाँकि उन्होंने पारंपरिक शिक्षा प्राप्त नहीं की, लेकिन ईश्वर के प्रति उनकी जागरूकता असाधारण थी।

बाद में वे दक्षिणेश्वर काली मंदिर में पुजारी बने, जहाँ उन्होंने माँ काली की आराधना करते हुए ईश्वर के साक्षात्कार का प्रयास किया। उन्होंने न केवल हिंदू धर्म, बल्कि इस्लाम और ईसाई धर्म की आध्यात्मिक साधनाओं का भी पालन किया, यह अनुभव करते हुए कि सभी धर्म एक ही सत्य की ओर ले जाते हैं। उनका दृष्टिकोण समावेशी और सार्वभौमिक था। वे मानते थे कि ईश्वर तक पहुँचने के अनेक मार्ग हैं और उन्होंने कहा, "जितने पंथ, उतने ही रास्ते।" उन्होंने मूर्ति पूजा के पीछे की भावना को महत्व दिया और इसे ईश्वर की सर्वव्यापकता को पहचानने का एक माध्यम माना। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति की आध्यात्मिक यात्रा भिन्न होती है और ईश्वर को प्राप्त करने का कोई एकमात्र तरीका नहीं है।

रामकृष्ण परमहंस ने लोगों को अपने कर्तव्यों का पालन करने और सच्चे हृदय से भक्ति करने के लिए प्रेरित किया। उनकी शिक्षाएँ अनगिनत लोगों को प्रभावित

कर चुकी हैं, जिनमें उनके प्रमुख शिष्य स्वामी विवेकानंद भी सम्मिलित थे। स्वामी विवेकानंद ने उनके विचारों को संपूर्ण विश्व में फैलाया और रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और मानवता की सेवा के क्षेत्र में कार्यरत है।

रामकृष्ण परमहंस धार्मिक सहिष्णुता और आपसी समझ के प्रबल समर्थक थे। वे धर्मों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं देखते थे और इस बात पर बल देते थे कि जीवन का मुख्य उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार है। उन्होंने प्रेम, भक्ति और करुणा को आध्यात्मिकता का मूल आधार माना और दूसरों को भी इसी मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। उनकी शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उनके जीवनकाल में थीं।

रामकृष्ण परमहंस मेरे जीवन में एक विशेष स्थान रखते हैं। उनकी शिक्षाएँ और उपस्थिति मेरे दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती हैं। वे न केवल मेरे घर और मंदिर में बल्कि मेरी पूरी जीवनशैली और आध्यात्मिक यात्रा में एक मार्गदर्शक के रूप में सदैव उपस्थित रहते हैं।

संतों और ऋषियों की रचनाएँ

रेयांश तिवारी

रेयांश १३ वर्ष के हैं वे सातवीं कक्षा के विद्यार्थी हैं और उनको को बास्केटबॉल, तैराकी, क्रिकेट और फुटबॉल खेलना पसंद है। अपने खाली समय में उन्हें पढ़ना और चित्रकारी करना भी अच्छा लगता है।

हिंदू धर्म में ऋषियों को गहन रूप से बुद्धिमान आध्यात्मिक शिक्षक माना जाता है जिनके पास ब्रह्मांड का गहन ज्ञान होता है और उन्हें अपने आध्यात्मिक पथ पर दूसरों के लिए मार्गदर्शक के रूप में देखा जाता है, जो अक्सर अपनी शिक्षाओं और भजनों के माध्यम से वैदिक ज्ञान प्रसारित करते हैं, धार्मिकता और चिंतन के आदर्शों को मूर्त रूप देते हैं। ऋषियों ने अन्य विद्वानों को भक्ति के धार्मिक मार्ग पर मार्गदर्शन करने के लिए कई ग्रंथ लिखे हैं। कुछ उदाहरण महाभारत, रामायण, चार वेद (ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद, यजुर्वेद) आदि हैं।

रामायण

रामायण प्राचीन भारत का एक स्मृति ग्रंथ है जो ऋषि वाल्मीकि द्वारा लिखा गया है। हिंदू महाकाव्य रामायण भगवान विष्णु के सातवें अवतार राम के जीवन की कहानी से संबंधित है। यह उनके चमत्कारी गर्भाधान और जन्म की कहानी, उनकी युवावस्था में राक्षसों को हराने और उसके बाद के निर्वासन, राक्षस रावण की हार और अंततः अयोध्या के सिंहासन की बहाली की कहानी बताती है। "रामायण" के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

धर्म का पालन: "रामायण" धर्म के महत्व को बढ़ावा देता है और भगवान राम को एक आदर्श धर्मी राजा के रूप में प्रस्तुत करता है। राम का जीवन धर्म, न्याय, और कर्तव्य का पालन करने के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

नैतिकता और न्याय: महाकाव्य नैतिक और न्यायिक मूल्यों को सुनिश्चित करने का कार्य करता है। यह दिखाता है कि सत्य, न्याय, और नीति के मार्ग पर चलना किस प्रकार से सफलता लाता है।

परिवार और समाज के महत्व - "रामायण" में परिवार और समाज के महत्व को बड़े ही गहराई से बताया गया है। राम और सीता के परम प्रेम, भाईचारे, और पारिवारिक संबंध इसे एक सामाजिक महाकाव्य बनाते हैं।

भक्ति और सेवा: राम के भक्त हनुमान के भक्तिभाव और सेवाभाव को भी महाकाव्य में उजागर किया गया है। यह दिखाता है कि भक्ति और सेवा से व्यक्ति अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है।

उत्कृष्ट जीवन की प्रेरणा: "रामायण" का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य है मानवता को एक उत्कृष्ट और सजीव जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।

महाभारत

प्रसिद्ध महाकाव्य महाभारत ऋषि वेद व्यास द्वारा लिखा गया था। इसे अब तक लिखी गई सबसे लंबी कविता माना जाता है। महाभारत एक पवित्र महाकाव्य है जो सर्वोच्च शक्ति प्राप्त करने के लिए चचेरे भाइयों के दो समूहों के बीच हुए संघर्ष के बारे में बताता है। उनमें से एक कौरव (राजा धृतराष्ट्र के सौ पुत्र) थे, और दूसरा समूह पांडव (पांडु के पांच पुत्र) थे। महाभारत हमें यह सबक सिखाता है कि बुराई पर हमेशा अच्छाई की जीत होती है। महाभारत का उपदेश सही और सच्चे तरीके से जीना है। हमें हमेशा अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए

क्योंकि पांडवों ने उन अधिकारों और विशेषाधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी थी जो कौरवों ने झूठे तरीकों से उनसे छीन लिए थे।

चार वेद

हिंदू परंपरा के अनुसार, चार वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) को वेद व्यास नामक ऋषि द्वारा संकलित किया गया था। चार वेद प्राचीन पवित्र ग्रंथ हैं जिनमें भजन, अनुष्ठान, मंत्र और दार्शनिक चर्चाएँ शामिल हैं। वे शास्त्रीय हिंदू धर्म की नींव और प्राचीन भारतीय इतिहास का प्राथमिक स्रोत हैं।

वेद क्या सिखाते हैं?

देवताओं की पूजा करें: वेद देवताओं का सम्मान, स्तुति और पूजा करना सिखाते हैं।

धार्मिक अनुष्ठानों का पालन करें: वेदों में भजन, मंत्र और मंत्र जैसे धार्मिक अनुष्ठानों के निर्देश हैं।

अच्छा जीवन जिएँ: वेदों में सफल और संतुष्ट जीवन जीने की सलाह दी गई है।

संसार को समझें: वेदों में संसार की उत्पत्ति और देवताओं के महत्व के बारे में जानकारी है।

जाति व्यवस्था को समझें: वेदों में भारत की जाति व्यवस्था का पहला ज्ञात संदर्भ मिलता है, जिसका उपयोग आज भी किया जाता है।

शिवजी और भस्मासुर की कहानी

पूर्वी अग्रवाल

मेरा नाम पूर्वी अग्रवाल है। मैं चेरी हिल पाठशाला में उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मैं आज आप सभी को शिवजी और भस्मासुर की कथा के द्वारा एक ज्ञान की बात बताना चाहती हूँ कि गलत इच्छाएँ हमें नुकसान पहुंचाती हैं।

गलत इच्छाएँ हमें नुकसान पहुँचाती हैं

गलत इच्छाएँ हमें नुकसान पहुँचाती हैं। इस बात का एक उत्तम उदाहरण हमें भगवान शिव और भस्मासुर की कथा से मिलता है। कथा का विवरण इस प्रकार है।

एक समय भस्मासुर नाम का एक राक्षस था। उसने भगवान शिव की तपस्या की। भगवान शिव ने भस्मासुर की तपस्या से प्रसन्न होकर उसे एक वरदान माँगने को कहा। भस्मासुर ने वरदान में माँगा कि वह जिसके भी सिर पर हाथ रखे, वह भस्म हो जाए। भगवान शिव ने भस्मासुर को वरदान दे दिया। भस्मासुर अपनी नई शक्ति को परखना चाहता था तो उसने भगवान शिव के सिर पर हाथ रखने की कोशिश की। तब शिवजी वहाँ से भागकर भगवान विष्णु के पास सहायता के लिए पहुँचे।

भगवान विष्णु ने सुंदर कन्या 'मोहिनी' का रूप लिया और भस्मासुर को नृत्य के लिए प्रेरित किया। नृत्य के दौरान जब मोहिनी (भगवान विष्णु) ने अपने सिर पर हाथ रखा, तो भस्मासुर ने भी वैसा ही किया। यह करते ही वह स्वयं भस्म हो गया।

इस कथा से शिक्षा:

यह कथा हमें यह शिक्षा देती है कि किसी भी व्यक्ति को ऐसी कोई इच्छाएँ नहीं रखनी चाहिए जिससे उसे स्वयं या दूसरों को किसी भी प्रकार की हानि हो।

स्वयंसेवक सम्मान समारोह के कुछ चित्र

स्वयंसेवक

स्वयंसेवक

विष्णु पुराण

भूमिका गौड़ा, मध्यमा-१, वूडब्रिज पाठशाला

मेरा नाम भूमिका गौड़ा है। मैं एक माध्यम वर्गीय परिवार की रहने वाली हूँ। मुझे नृत्य करना और कविता लिखना पसंद है। मैंने बहुत सारी कविताएँ लिखी हैं। में अपना गृहकार्य करने के बाद, अपने बड़े भाई के साथ खेलना पसंद करती हूँ। हमारा चार लोगों का परिवार संतुष्ट और सुखी परिवार है।

विष्णु पुराण में मुख्य रूप से श्रीकृष्ण चरित्र का वर्णन है, यद्यपि संक्षेप में राम कथा का उल्लेख भी प्राप्त होता है। अष्टादश महापुराणों में श्री विष्णुपुराण का स्थान बहुत ऊँचा है। इसमें अन्य विषयों के साथ भूगोल, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, राजवंश और श्रीकृष्ण-चरित्र आदि कई प्रंसगों का बड़ा ही अनूठा और विशद वर्णन किया गया है।

विष्णु पुराण में कहा गया है कि ब्राह्मणों को शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए, देवी-देवताओं की पूजा करनी चाहिए, और दूसरों के लिए हवन करना चाहिए। विष्णु पुराण के मुताबिक, मृत्यु के समय जिस भाव से व्यक्ति भावित रहता है, उसी भाव से उसे अगला जन्म मिलता है। विष्णु पुराण के मुताबिक, कलयुग में लोग जरा-सा पद और धन पाने के बाद अहंकार दिखाने लगेंगे। विष्णु भगवान को नारायण और हरि के नाम से भी जाना जाता है। विष्णु को जगत का पालनकर्ता माना जाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। पुराण कथाओं में इस एकादश अक्षरी मंत्र की बहुत गाथा गाई है। उनके अनुसार भगवान का यह मंत्र उनको पाने का मूल मंत्र है। विष्णु भगवान का स्मरण करने के लिए इस मंत्र का जाप किया जाता है।

वे वैष्णव धर्म के भीतर सर्वोच्च व्यक्ति हैं, जो समकालिन हिंदू धर्म के भीतर प्रमुख परंपराओं में से एक है। विष्णु को त्रिमूर्ति के भीतर संरक्षक के रूप में जाना जाता है, सर्वोच्च देवत्व के त्रिदेव जिसमें ब्रह्मा और शिव शामिल हैं। वैष्णव धर्म में, विष्णु जी सर्वोच्च भगवान हैं जो ब्रह्मांड का निर्माण संरक्षण और परिवर्तन करते हैं।

इस कलयुग में जो मनुष्य विष्णु भगवान की पूजा करते हैं, उन्हें सुख-शांति और मुक्ति प्राप्त होती है।

हिन्दू ग्रंथ

धृति पटेल, मध्यमा-१, वूडब्रिज पाठशाला

मेरा नाम धृति पटेल है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे बाँसुरी बजाना, चित्रकला करना, और वॉलीबॉल खेलना पसंद है। मुझे गणित और विज्ञान पढ़ना पसंद है। मैं अपने परिवार और मित्रों के साथ हर त्योहार खुशी से मनाती हूँ। मुझे अपनी भारतीय संस्कृति पर गर्व है।

मैं आज आपको हिन्दू ग्रंथ के बारे में बताने वाली हूँ। हिन्दू धर्म के प्रमुख ग्रंथ: वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृति, धर्मशास्त्र, धर्मसूत्र, आगम शास्त्र हैं। वेद प्राचीनतम हिंदू ग्रंथ हैं। वेद शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के विद धातु से हुई है। विद का अर्थ है जानना या ज्ञानार्जन। वेदों में ब्रह्म (ईश्वर), देवता, ब्रह्मांड, ज्योतिष, गणित, रसायन, औषधि, प्रकृति, खगोल, भूगोल, धार्मिक नियम, संस्कार आदि सभी विषयों से संम्बधित ज्ञान हैं।

आज हम आयुर्वेद के बारे में जानेंगे।
आयुर्वेद कुछ विचारधाराओं के अनुसार अथर्ववेद या ऋग्वेद का उपवेद है। औषधीय प्रयोजनों के लिए जड़ी-बूटियों के उपयोग का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। महर्षि चरक को आयुर्वेद का जनक कहा जाता है। अपनी पुस्तक चरक संहिता में उन्होंने लगभग 340 प्रकार के पौधों और लगभग 200 प्रकार के जानवरों का उल्लेख किया है। धन्वन्तरि को आयुर्वेद का पिता कहा जाता है। माना जाता है कि उन्होंने इस प्राचीन विज्ञान का ज्ञान ऋषियों को दिया था, जिन्होंने बाद में इसे ग्रंथों में संकलित किया। माना जाता है कि देव-दानव के युद्ध में समुद्र मंथन के समय भगवान धन्वन्तरि का प्राकट्य हुआ था।

प्राचीन भारत में आयुर्वेद को रोगों के उपचार और स्वस्थ जीवन शैली व्यतीत करने का सर्वोतम तरीका माना जाता था। आयुर्वेद एक प्राचीन चिकित्सा विज्ञान है जो कम से कम 4000 वर्षों से भारत में प्रचलित है। इसका नाम संस्कृत के शब्द "अयुर" (जीवन) और "वेद" (ज्ञान) से आया है। आयुर्वेद का मूल सिध्दांत है कि त्रिदोष- वात, पित, और कफ, हमारे शरीर को नियंत्रित करते हैं। जब इनका संतुलन बिगड़ जाता है, तो यह हमारे स्वास्थ्य पर असर डालते हैं और बिमारियों का कारण बनते हैं। वात, पित, और कफ प्रकृति के पाँच तत्व पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि और आकाश के मिश्रण से बने हैं।

आयुर्वेद में स्वास्थ्य को बनाए रखने के तीन मुख्य उपाय हैं-आहार, नींद और विहार। जीवन को ठीक प्रकार से जीने का विज्ञान ही आयुर्वेद है। हमारा शरीर पूरी तरह से स्वस्थ रहे इसके लिए हमें बेहतर आहार, योग, डिटॉक्सिफिकेशन, हर्बल, उपचार, मेडिटेशन और बेहतर जीवनशैली आदि पर ध्यान देना चाहिए। आयुर्वेद लोगों के जीवन को स्वस्थ और संतुलित बनाने में मदद करता है।

Guru ARCHANA JOGLEKAR's

Archana Arts

The IVY LEAGUAGE KATHAK DANCE Academy established since 1963

TEACH YOUR CHILD THE RIGHT & THE BEST

Good News!!

Archana Arts KATHAK dance academy is now coming close to you

For enrollment:

Email to: kathaknj@aol.com

Call: 609 309 3288

Main Academy at

4 Railroad Ave, Somerset, NJ 08873

Branches at: Edison, Plainsboro, Parsippany & Morrisville-PA

Offering in-depth detailed structured curriculum of KATHAK up to Masters Level.

The academy has high reputation for grooming students into fine Kathak dancers, self-confident, graceful person, giving them insight of Indian culture, solid foundation of theory, practical, Lay-Taal, Bhav and also works simultaneously on diction as part of the curriculum.

SAI CPA Services
Your Friendly Neighborhood CPA
SCAN THE QR CODE FOR MORE INFO
TAX CONSULTATION
WITH SAI CPA SERVICES
Accounting & Bookkeeping
Audit and Review Services
Business Valuation
Taxation and Estate Planning
Virtual CFO Services
Client Advisory Service
Business & Individual Taxes
Exit Strategy, Mergers & Acquisitions Planning
Financial Statement, Forecast & Projection
Non-Profit Taxes & 501c (3) Approval
AJAY KUMAR
CPA, CVA, MBA
SERIES 7 & 66 LICENSES
WHY CHOOSE US
25 YEARS+
of Expertise in
Tax Consultancy
Sai CPA: Partner in your Business Journey!
Choose Sai CPA Services for Financial Consultancy
OFFICE LOCATION
1 AUER CT
EAST BRUNSWICK, NJ 08816
PH: (908) 888-8900
5 VILLA FARMS CIR,
MONROE TWP, NJ 08831
PH: (908) 380-6876
support@saicpaservices.com
CONTACT US
PH: (908) 380-6876
PH: (732) 215-9600
Fax: (908) 368-8638
www.saicpaservices.com

IBA
INDIAN BUSINESS ASSOCIATION INC.
SINCE : 1991

INDIAN BUSINESS ASSOCIATION INC.

Congratulates

हिन्दी USA ®

Twenty-Fourth
Annual Hindi Mahotsav

PLEASE JOIN

INDIA DAY PARADE

10th August 2025

on OAK TREE Rd Edison to Iselin

ibausa.org

CHANDRAKANT PATEL	Dr. RAJ PANDYA	DHIREN AMIN	MANHER SHAH	MAHESH SHAH
Chairman	Advisory Board Chair	President	Vice Chairman	Vice Chairman

HARSHAD PATEL	PRAFUL PATEL	SHARAD AGRAWAL	KAPIL SHAH
Exec. Vice President	Gen. Secretary	Secretary	Past President